

SONOPANT DANDEKAR ARTS, V.S. APTE COMMERCE AND M.H. MEHTA SCIENCE COLLEGE, PALGHAR

Department of History

PROJECT REPORT

MASTER OF ARTS - HISTORY

Academic Year 2022-2023

Prepared by

Department of History
Sonopant Dandekar Arts, V.S. Apte Commerce and
M.H. Mehta Science College, Palghar

INDEX

| Sr. No. | Content | | | | |
|------------|--|--|--|--|--|
| 1 | Notice for Project Submission | | | | |
| 2 | Curriculum where course (subject where project work/ field work is required) | | | | |
| 3 | List Learners with Project titles | | | | |
| 4 | Sample Projects | | | | |



Sonopant Dandekar Shikshan Mandali's Sonopant Dandekar Arts, V. S. Apte Commerce & M. H. Mehta Science College, Palghar

Estb.: 14 August 1968

Dr. Kiran Save, Principal

Ref No.:

Principal: +91 - 2525 - 252317 : sdsmcollege@yahoo.com

Kharekuran Road, Palghar (W), Tal. & Dist. Palghar,

: www.sdsmcollege.com

Maharashtra - 401 404, INDIA : +91 - 2525 - 252163

Date: 16/05/2023

Notice

Department of History

This is to inform you that all the Master of Arts-II (History) students are required to submit the Dissertation for Semester -IV hard copy of your final report from 26th May 2023 to 27th May 2023 as per the following schedule. During office hours from 09.30 am to 02.00 pm. Ensure your Dissertation is properly.

Time Table for Dissertation Submission and Viva

| Day/ Date | Time | Subject |
|---------------------|---------------|---------|
| Monday, 26/05/2023 | 12 PM to 4 PM | History |
| Tuesday, 27/05/2023 | 12 PM to 4 PM | History |

Note:

- 1. Viva will be conducted as per the pattern prescribed by the University.
- 2. The Dissertation will consist of 100 Marks.
- 3. For any query you can contact Prof. Ramdas Yede, Department of History.

Dr. Kiran J. Save **Principal**

PRINCIPAL Sonopant Dandekar Arts College, V.S. Apte Commerce College & M.H. Mehta Science Coffege PALGHAR (W.R.) Dist. Palghar, Pin-401404

Evaluation Pattern for Semester IV – (Project Based Course VIII) as follows

<u>100 marks</u> – Dissertation + Viva-Voce (Evaluation as per Guidelines and Regulations of the University of Mumbai)

Credit Distribution

• 6 credits for each course for Semester III (Elective Group I, II, III, IV, V) and Semester IV (Ability Enhancement Course VI and Interdisciplinary Course VII)

Semester III - 6 credits x 5 courses (one from Group I, II, III, IV, V) = 30 Credits Semester IV - 6 credits X 2 courses (one from Group VI and VII) = 12 Credits

• 10 credits for Semester IV (Project Based Course VIII) —The Project Based Course will be conducted as per the Guidelines and Regulations of the University of Mumbai.

Total Credits for M.A. (History) - 100 credits

| SEMESTER | COURSES/PAPERS | CREDITS | Total |
|-----------|--|------------|-------|
| I | 4 Core Courses | 6 each X 4 | 24 |
| II | 4 Core Courses | 6 each X 4 | 24 |
| III | 5 Elective Courses | 6 each X 5 | 30 |
| IV | 2 Courses (One from Ability Enhancement Course VI and One from Interdisciplinary Course VII) | 6 each X 2 | 12 |
| IV | 1 Project Based Course | 10 X 1 | 10 |
| | VIII (One From Project Based Course VIII) | | |
| TOTAL CRI | EDITS FOR M.A. DEGREE I | N HISTORY | 100 |

Sonopant Dandekar College Palghar Department of History (MA Part II, SEM IV) Dissertation

| Sr.No. | Student Name | Name of Dustrat | | | |
|----------|--|--|--|--|--|
| 1 | AGHAV KALPESH RATNAKAR | Name of Project भारतीय इतिहास लेखनातील विविध प्रवाहांचा एक अभ्यास | | | |
| 2 | BHALERAO POOJA SIDDHARTH | स्वातंत्र्य उत्तर भारतातील राजकीय क्षेत्रातील निवडक महिलांचा अभ्यास | | | |
| 3 | BHORE RANGANATH BUDHYA | स्वातंत्र्य उत्तर काळातील निवडक चळवळींचा एक आढावा | | | |
| 4 | BHOVARE VISHWAS CHANDRAKANT | प्राचीन भारताच्या इतिहासाची साधनांचा अभ्यास | | | |
| 5 | BOS KALPESH RAMDAS | सम्राट अशोकाच्या कामगिरीचा थोडक्यात आढावा | | | |
| 6 | CHURI ANJALI SUNIL | भारतीय कामगार चळवळींच्या इतिहासाचा अभ्यास | | | |
| 7 | DALAVI LATA PANDURANG | बौध धर्माच्या अभ्यासाच्या साधनांचा चीकीस्तक अभ्यास | | | |
| 8 | DHANAKE VRISHASEN VINAYAK | समकालीन भारतातील निवडक सामाजिक समस्यांचा चिकित्सक अभ्यास | | | |
| 9 | DHANVA SAPANA SANTOSH | मध्ययुगीन कालीन प्रशासन व्यवस्थेचा अभ्यास | | | |
| 10 | DHINDA AKSHAY PRAKASH . | मराठा कालीन आर्थिक परिस्थितीचा अभ्यास | | | |
| 11 | GADAG PAYAL UMESH | इतिहासाच्या मार्क्सवाद व उत्तर मार्क्सवाद दृष्टिकोनाचा चीकीस्तकअभ्यास | | | |
| 12 | GOND PUNAM RAMESH | मराठा कालीन आर्थिक परिस्थितीचा अभ्यास | | | |
| 13 | GOVARI KAVITA ATMARAM | भारतीय इतिहास लेखनातील विविध प्रवाहांचा एक अभ्यास | | | |
| 14 | HADAL PRIYANKA VIJAY | प्राचीन भारतातील सामाजिक परिस्थितीचा अभ्यास | | | |
| 15 | HAJARI ROHITA YASHWANT | सुलतानसहीच्या काळातील धार्मिक चळवळींचा अभ्यास | | | |
| 16 | HOLKAR ANKITA GANESH | सुरातानसहाच्या काळाताल घामक चळवळाचा अभ्यास AB | | | |
| 17 | JADHAV PRIYANKA JAYWANT | बौध धर्माच्या अभ्यासाच्या साधनांचा चीकीस्तक अभ्यास | | | |
| 18 | JADHAV SOMNATH LADKU | भारतातील जाती या संकल्पनेचा चीकीस्तक अभ्यास | | | |
| 19 | KAKAD SHAILESH CHAITYA | | | | |
| 20 | KARVIR YUKTA AVINASH | गौतम बुद्धांच्या शिकवणीचा चीकीस्तक अभ्यास | | | |
| 21 | KHACHE BHAVANA BALU | महात्मा जोतीबा फुले यांच्या कामगिरीचा चीकीस्तक अभ्यास | | | |
| 22 | KHUTADE PINTYA RAMESH | स्त्रीवादी चळवळींच्या टप्प्यांचा एक अभ्यास आदिवासी समाजाच्या सामाजिक जीवनाचा अभ्यास | | | |
| 23 | KOM PINTU SUDAM | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे दलित चळवळीतील योगदान | | | |
| 24 | MORE VISHWAS KASHINATH VATSALA | ा. बाबामहेन आंकेन्द्रमां ने नियम जनकारी विभागतान | | | |
| 25 | PADVALE RUCHITA VINOD | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे दलित उद्धारासाठी केलेल्या प्रयत्नांचा अभ्यास | | | |
| 26 | PATIL ARPITA RAMESH | इतिहासाच्या अभ्यासाच्या दृष्टिकोनांचा चीकीस्तक अभ्यास स्वातंत्र्य उत्तर काळातील निवडक समस्यांचा अभ्य्सा | | | |
| 27 | PIMPLE SACHINKUMAR JAGDISH | | | | |
| 28 | RAUT MANASI KALPESH | मराठ्यांच्या अभ्यासाची विविध साधनांचा अभ्यास | | | |
| 29 | RAUT SANGITA BHARAT | स्वातंत्र्य उत्तर काळातील निवडक चळवळींचा एक आढावा | | | |
| 30 | RAYAT HARSHADA VISHRAM | मध्ययुगीन कालखंडातील भारतातील सामाजिक परिस्थितीचा अभ्यास | | | |
| 31 | SATVI NUTAN GANESH | मराठ्यांच्या अभ्यासाची विविध साधनांचा अभ्यास | | | |
| 32 | SOLE NIWRUTTI RAMDAS | मध्ययुगीन काळातील भक्ती चळवळीचा अभ्यास | | | |
| 33 | TALHA TULASHI DHARMA | वर्ण व वंशभेद विरुद्ध निवडक चळवळींचा अभ्यास | | | |
| 34 | PRANALI KALURAM TANDEL | भारत चीन बदलत्या संबंधांचा एक आढावा स्वातंत्र्य चळवळीतील क्रांतिकारी चळवळींच्या योगदानाचा अभ्यास | | | |
| | | | | | |
| 35 | TAKE KALPESH MADHUKAR | | | | |
| 35 36 | TARE KALPESH MADHUKAR TUMBADA PRITI VISHNU | अमेरिका व आफ्रिका खंडातील वंश व वर्णभेद चळवळींचा अभ्यास स्त्रीवादी चळवळींच्या टप्प्यांचा एक अभ्यास | | | |

Sonopant Dandekar Shikshan Mandali's

SONOPANT DANDEKAR ARTS, V.S. APTE COMMERCE AND M.H. MEHTA SCIENCE COLLEGE, PALGHAR Tal. & Dist. - Palghar. Pin - 401 404.

Semester based Credit & Grading System

Attendance of students for Tutorial/Assignment/Project/Class Test Academic Year -

| Class - MA 1- Joseph Div | | | Semester | | | | | |
|--------------------------|----------|-------------|------------|---------------|---------------------------------------|------------|----------|--------|
| Subject - Disserfection | | | | Paper No VIII | | | | |
| | Name | of Prof Rc | tmi | as ye | ede & | Ka | Paner | Mobile |
| Sr. No. | Roll No. | Sign | Sr. No. | Roll No. | Sign | Sr. No. | Roll No. | Sign |
| 1 | 56001 | Res | 31 | 56031 | Midle_ | 61 | | |
| 2 | 56002 | OKOLÍS | 32 | 56032 | Burey. | 62 | | |
| 3 | 56003 | 0 | 33 | 56033 | 12 Grace | 63 | | |
| 4 | 56004 | W. | 34 | 56034 | Bolis | 64 | | |
| 5 | 56005 | 型。 | 35 | 56035 | Deetry. | 65 | | |
| 6 | 56006 | Ambreda | 36 | 56036 | Dong | 66 | | |
| 7 | 56007 | | 37 | 56037 | Brown | 67 | | |
| 8 | 56008 | | 38 | 5 1 | | 68 | | |
| 9 | 56009 | Dolle . | 39 | | | 69 | | |
| 10 | 56010 | Andrada | 40 | | | 70 | | |
| 11 | 56011 | A.R. Patil | 41 | | | 71 | | 3 3 |
| 12 | 56012 | (PSBhaleso) | 42 | | | 72 | | |
| 13 | 56013 | | 43 | | | 73 | | |
| 14 | 56014 | | 44 | | | 74 | | |
| 15 | 56015 | Oxfordel | 45 | | | 75 | | |
| 16 | 56016 | | 46 | | | 76 | | |
| 17 | 56017 | WANGH | 47 | | | 77 | ļ | |
| 18 | 56018 | AB | 48 | | | 78 | | |
| 19 | 56019 | @Padrelle | 49 | | | 79 | | |
| 20 | 56020 | | 50 | | | 80 | | |
| 21 | 56021 | | 51 | | | 81 | | |
| 22 | 56022 | Balnos | 52 | | <u> </u> | 82 | | |
| 23 | 56023 | Sumbola | 53 | | | 83 | | |
| 24 | 56024 | - Sale | 54 | l- L- L- | | 84 | | 100000 |
| 25 | _ | A.D. girune | 55 | ļ | | 85 | | |
| 26 | 56026 | Porlese. | 56 | | | 86 | | ļ |
| 27 | 56027 | | 57 | | <u> </u> | 87 | | |
| 28 | 56028 | | 58 | | 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | 88 | | |
| 29 | 56029 | @han | 59 | | | 89 | 1 | |
| 30 | 56030 | Poversi . | 60 | | | 90 | | |

Kohile



मुंबई विद्यापीठ

सोनेपंत दांडेकर कला वा श्री. आपटे वाणिज्य आणि एम.एच.
मेहता विज्ञान महाविद्यालय. पालघर ४०१४०४
प्रबंध एम.ए.इतिहास भाग ॥ सत्र — IV
शैक्षणिक वर्ष २०२२—२०२३

विषय

सम्राट अशोकाच्या कार्याचा आढावा संशोधक बोस कल्पेश रामदास मार्गदर्शक प्रा. रामदास येडे इतिहास विभाग

सम्राट अशोकाच्या कार्याचा आढावा

प्रबंध

विषय

सम्राट अशोकाच्या कार्याचा आढावा

संशोधक

बोस कल्पेश रामदास

प्रा. रामदास येडे यांच्या मार्गदर्शनाखाली

एम.ए.इतिहास भाग ॥ सत्र — IV

सोनेपंत दांडेकर कला वा श्री. आपटे वाणिज्य आणि एम. एच.

मेहता विज्ञान महाविद्यालय. पालघर ४०१४०४ शैक्षणिक वर्ष २०२२—२०२३

प्रमाणपत्र

प्रमाणिक करण्यात येते की,

एम.ए.इतिहास भाग—॥ सत्र — IV या अभ्यासक्रमाचा भाग म्हणून कल्पेश रामदास बोस हजेरी क्रमांक. ५६०२२ हयाने सन २०२२—२०२३ या शैक्षणिक वर्षात प्रबंधाचे नाव — सम्राट अशोकाच्या कार्याचा आढावा सविस्तर आढावा या विषयावर संशोधन कार्य समाधानकारकपणे केलेले आहे. त्यासाठी त्यांनी अनिवार्य असलेले वैयक्तिक मार्गदर्शन ही घेतलेले आहे. या संशोधन कार्यात घेतलेल्या संदर्भ साहित्या निदर्श या अहवालात केला आहे.

प्रा. रामदास येडे मार्गदर्शनाखाली

डॉ. किरण सावे प्राचार्य

4 Page

प्रतिज्ञापत्र

मी बोस कल्पेश रामदास बोस सादर करतो की सोनोपंत दांडेकर कला वा श्री आपटे वाणिज्य आणि एम.एच. मेहता विज्ञान महाविदयालय पालघर ४०१४०४, प्रबंध एम.ए.इतिहास भाग— ॥ सत्र — IV शैक्षणिक वर्ष २०२२—२०२३. या अभ्यासक्रमासाठी प्रस्तुत कार्यवाही मी स्वतः केलेली आहे. असे प्रतिज्ञापूर्वक घोषित करतो.

संशोधकाची सही बोस कल्पेश रामदास

विशेष आभार

एम.ए. इतिहास भाग — ॥ सत्र — IV या अभ्यास क्रमांचा भाग म्हणून हा संशोधक प्रबंध सोनेपंत दांडेकर कला वा श्री. आपटे वाणिज्य आणि एम.एच. मेहता विज्ञान महाविदयालय सादर करताना मला अनेक व्यक्तीचे सहकार्य लागले सर्व प्रथम या प्रंबंध लेखनाचा एकंतरित प्रक्रियेत मला वेळोवेळी आपले अनमोल मार्गदर्शन व सहकार्य लाभले त्यासाठी इतिहास विभाग प्रमुख प्रा. रामदास येडे यांचे आभार मानतो.

संशोधनासाठी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्षरीत्या माझे वडील रामदास बोस व आई वसंती रामदास बोस, तसेच माझे मित्रमैत्रिणी, महाविदयालयातील वाचनालयातील कर्मचारी वर्ग आपण सर्वानी मला खूप मोलाची मदत केली. त्याबद्दल मी आपले ऋणी आहे. आपण केलेला सहकार्यामध्ये हा प्रबंध पूर्ण होउ शकला त्यासाठी सर्वाचे आभारी आहे.

बोस कल्पेश रामदास (संशोधक)

अनुक्रमणिका

| प्रकरण | प्रकरण | पृष्ठ कमांव |
|---------|--|-------------|
| क्रमांक | | |
| १. | विषयाचे नाव | २ |
| ₹. | प्रमाणपत्र | ą |
| ₹. | प्रतिज्ञापत्र | 8 |
| ٧. | विशेष आभार | ц |
| ч. | अनुक्रमणिका | ξ |
| ₹. | सम्राट अशोक | 9 |
| | १.१ उद्दिष्टये | ०९ |
| | १.२ प्रस्तावना | १० |
| | १.३ सम्राट अशोकाचे बालपण | १२ |
| | १.४ सम्राट अशोकाची कामगिरी | १७ |
| | १.५ सम्राट अशोकाची राज्यरोहण | २० |
| | १.६ सारांश | २१ |
| | १.७ संदर्भ | |
| ७. | सम्राट अशोकाचे पराक्रम | 22 |
| | २.१ उदि्दष्टये | 23 |
| | २.२ प्रस्तावना | 28 |
| | २.३ सम्राट अशोकाचे साम्राज्य विस्तार | २९ |
| | २.४ सम्राट अशोकाचे धार्मिक धोरण | 33 |
| | २.५ सम्राट अशोकाची योग्यता | 34 |
| | २.६ सारांश | 3 € |
| | २.७ संदर्भ | |
| ۷. | सम्राट अशोकाचे शिलालेख | 30 |
| | ३.१ उद्दष्टये | 36 |
| | ३.२ प्रस्तावना | 39 |
| | ३.३ सम्राट अशोकाचे शिलालेख | 83 |
| | ३.४ सम्राट अशोकाचे स्तंभालेख | ४९ |
| | ३.५ सम्राट अशोकाचे चौदा गिरीलेख (आदेश) | 44 |

| | ३.६ सारांश | ५६ |
|-----|------------|----|
| | ३.७ संदर्भ | ५७ |
| ٩. | सारांश | 42 |
| १०. | संदर्भ | 49 |

प्रकरण १. सम्राट अशोक

घटक रचना

- १.५ उद्ष्टिये
- १.६ प्रस्तावना
- १.७ सम्राट अशोकाचे बालपण
- १.८ सम्राट अशोकाची कामगिरी
- १.९ सम्राट अशोकाचे राज्यभिषेक
- १.१० सारांश
- १.११ संदर्भ

१.१ उद्ष्टिये:

- १. सम्राट अशोकाचे बालपणाची माहिती मिळवणे.
- २. सम्राट अशोकाने कशा प्रकारे कामगिरी केली याचा आढावा घेणे.
- सम्राट अशोकाचे राज्यभिषेक कशा प्रकारे झाले व त्यांना अभ्यास करणे कोणत्या अडचणी आल्या यांची सविस्तर माहिती मिळवणे व अभ्यास करणे.

१.२.प्रस्तावना :

भारतामध्ये प्राचीन काळी बरेच राजे लोक होऊन गेले, पण त्या सगळया राजांमध्ये सम्राट अशोकाचे स्थान अनन्य साधारण आहे. चंड अशोक ते सम्राट अशोक हा त्याचा प्रवास व त्याने केलेले कार्य या प्रकल्पात वर्णीत केले आहेत. मगध साम्राज्य हे त्याकाळी सगळयात मोठे साम्राज्य होते सम्राट अशोकाच्या काळात त्याचा मोठया प्रमाणात साम्राज्य विस्तार झाला होता. किलंग युद्ध व त्या नंतर त्याच्यात झालेला बदल या मुळे त्याचे भारतीय इतिहासात महत्वाचे स्थान आहे. सम्राट अशोकाच्या जीवनात महत्वपूर्ण बदल घडवणारी घटना म्हणजे किलंग युध्द होय. या युद्धानंतर सम्राट अशोकाने युद्ध त्याग केला होता. लोकांना युद्धाने न जिंकता प्रेमाने व स्नेहाने जिंकावे असे धोरण त्याने ठरविले. त्याने अहिंसा हे तत्व स्वीकारले. त्यावर अहिंसा या बौद्ध धर्मातील तत्वाचा प्रभाव असल्याने त्याने बौद्ध धर्म स्वीकारला.

भारतवर्षाच्या इतिहासात डीमपदतांच्या उचिशखराच्या उंचीची उपमा सम्राट अशोकाच्या कार्याला प्रदान करण्यात येते. या देशाच्या पौराणिक राजकीय आणि सामाजिक वाटचालीत अनेक राजे—महाराजांचा उल्लेख वाचावयास मिळतो. यात राजा इष्वाकू, राजा रामचंद्र, राजा हिरिश्चंद्र, युधिष्टिर सारख्या आदर्श, सत्य आणि एकवचनी नृपतींचा उल्लेख प्रामुख्याने घेतला जातो. मात्र त्यांची ऐतिहासिता ही वादग्रस्त आहे कारण पौराणिक कथांचा अपवाद वगळता तर त्यांच्या कारकीदींवर प्रकाश टाकण्यासाठी कोणतीच ऐतिहासिक साधने उपलब्ध नांहीत. या पार्श्वभूमीवर जर आपण विचार केला तर सम्राट अशोकाने आपल्या राजकीय, सामाजिक, सांस्कृतिक विशेष म्हणजे बौद्ध धर्माचा स्वीकार प्रचार आणि प्रसाराच्या वाटचालीचा सत्येतिहासच स्तंभालेख, गुहांमधील लेख बौद्ध स्तूप—विहार यांच्या माध्यमातून समाजासमोर आणला आहे म्हणूनच कॉनंग हैन, व्हिन्सेंट स्मिथ, पंडित के. कृष्णशास्त्री, राजेंद्रलाल मित्रा, डॉ. रोमिला थापर सारख्या देशी—विदेशी संशोधकांना सम्राट अशोकाचे वास्तव चरित्र आणि कार्य सम्यकतेने मांडता आले त्यातूनच सम्राट अशोकाचा महापराक्रम केलेला साम्राज्यविस्तार राज्यपद्धती, प्रजेचा त्राता, सर्वश्रेष्ठ खुद्धाचा अनुयायी इत्यादी बाबीची थोरवीची जाण समाजाला झाली.

१.३ सम्राट अशोकाचे बालपण :

इसवी सन पूर्व ३०४ मध्ये मौर्य वंशाचा दुसरा सम्राट बिंदुसार याने अशोक बिंदुसार मौर्य नावाच्या पुत्राचे जगात स्वागत केले. मुलाची आई धर्म फक्त एक सामान्य होती. तिला बरीच मोठी मुले होती. अशोकाचे सावत्र भाऊ—त्यामुळे अशोक कधीही सिंहासनावर येण्याची शक्यता दिसत नव्हती.

अशोक एक धाडशी, त्रासदायक आणि क्रूर तरुण म्हणून मोठा झाला ज्याला नेहमीच शिकार करण्याची खूप आवड होती. पौराणिक कथेनुसार, त्याने फक्त लाकडी काठीचा वापर करुन सिंहाला मारले. त्याच्या मोठया सावत्र भावांना अशोकाची भीती वाटत होती आणि त्यांनी त्याच्या वडिलांना मौर्य साम्राज्याच्या दूरच्या सीमेवर सेनापती म्हणून नियुक्त केले. तक्षशिला या पंजाबी शहरात बंड मोडून काढत अशोक एक सक्षम सेनापती असल्याचे सिद्ध झाले.

१, बौद्ध धर्माचा परिचय :

अवंती राज्याची पूर्वीची राजधानी असलेल्या उज्जैनमधील उठाव रोखण्यासाठी बिंदुसाराने आपल्या मुलाला मौर्याकडे परत बोलावले. अशोक यशस्वी झाला पण लढाईत जखमी झाला. बोद्ध भिख्खूंनी जखमी राजपूत्राला गुप्तपणे मदत केली. जेणेकरुन त्याचा मोठा भाऊ, वारस स्पष्ट सुसीमा, अशोकाच्या जखमांबद्दल शिकू नये.

यावेळी, अशोकाने अधिकृतपणे बौद्ध धर्म स्वीकारला आणि त्याची तत्वे स्वीकारण्यास सुरुवात केली, जरी ते सेनापती म्हणून त्याच्या जीवनाशी थेट संघर्ष करत होते. तो विदिशा येथील देवी नावाच्या एका महिलेला भेटला आणि त्याच्या दुखापतींनाही सावरले. या जोडण्याने नंतर लग्न केले.

२. शाही नियम :

त्याच्या कारिकर्दीच्या पहिल्या आठ वर्षात अशोकाने आसपासच्या प्रदेशांवर सत्तव युद्ध केले. त्याला मोठ्या साम्राज्याचा वारसा लाभला होता, परंतु त्याने त्याचा विस्तार करुन बहुतेक भारतीय उपखंड, तसेच पश्चिमेकडील इराण आणि अफगाणिस्तानच्या सध्याच्या सीमांपासून पूर्वेला बांग्लादेश आणि बर्माच्या सीमेपर्यतचा भाग समाविष्ट केला. फक्त भारत आणि श्रीलंकेचे दक्षिण टोक आणि भारताच्या ईशान्य किनाऱ्यावरील कलिंगाचे राज्य त्याच्या आवाक्याबाहेर राहिले.

इ.स. पूर्व २६५ मध्ये अशोकाने किलंगावर हल्ला केला. जरीही त्याची दुसरी पत्नी कौरवाकीची मातृभूमी होती आणि किलंगच्या राजाने अशोकाला सिंहासनावर आरुढ होण्यापूर्वी आश्रय दिला होता, तरीही मौर्य सम्राटाने भारतीय इतिहासातील सर्वात मोठी आक्रमण शक्ती गोळा केली आणि आपला हल्ला केला. किलंगाने शौर्याने परत लढा दिला, पण शेवटी त्याचा पराभव झाला आणि त्याची सर्व शहरे पाडण्यात आली.

३. आज्ञापत्रे :

अशोकाने केवळ बौद्ध तत्त्वांनुसार जगण्याची शपथ घेतलह असती, तर नंतरच्या युगांना त्याचे नाव आठवले नसते. तथापि, त्याने संपूर्ण साम्राज्य वाचवण्यासाठी आपले हेतू प्रकाशित केले. अशोकाने आपली धोरणे आणि साम्राज्यासाठी आकांक्षा स्पष्ट करुन आणि इतरांना त्याच्या प्रबुद्ध उदाहरणाचे अनुसरण करण्यास उद्युक्त करुन आज्ञापत्रांची मालिका लिहिली.

त्यांच्या आज्ञांमध्ये, अशोकाने आपल्या लोकांची पित्याप्रमाणे काळजी घेण्याचे वचन दिले आणि शेजारच्या लोकांना वचन दिले की त्यांनी त्याला घाबरण्याची गरज नाही की तो लोकांना जिंकण्यासाठी केवळ मन वळवेल, हिंसाचार नाही. अशोकाने नमूद केले की त्यांनी लोकांसाठी सावली आणि फळझाडे जिवंत वस्तूबद्दलची त्याची चिंता जिवंत यज्ञ आणि खेळाच्या शिकारीवर बंदी तसेच नोकरांसह इतर सर्व प्राण्यांचा आदर करण्याच्या विनंतीमध्ये देखील दिसून आली. अशोकाने आपल्या लोकांना शाकाहारी आहाराचे पालन करण्याचे आवाहन केले आणि जंगले किंवा शेतीचा कचरा जाळण्याच्या प्रथेवर बंदी घातली ज्यामुळे वन्य प्राण्यांना आश्रय मिळेल. बैल, जंगली बदके, गिलहरी, हरिण, पोर्क्युपाइन्स आणि कबूतरांसह त्याच्या संरक्षित प्रजातींच्या यादीत प्राण्यांची एक लांबलचक यादी दिसून आली

१.२. सम्राट अशोकाची कामगिरी :

धम्मचक्रप्रवर्तित सम्राट अशोकाची समाजभिमुख प्रशासकीय कामगिरी

१. मौर्य साम्राज्याचा अधिपती(सम्राट)

मगध येथे बिंबिसार पुत्र अजातशत्रूने आपले राज्य स्थापन करुन इ.स. पूर्व ५४६ मध्ये गंगा आणि शोण नद्यांच्या संगमावर अजिक्य आणि विलोभनीय किल्ला बांधून सभोवती सुंदर नगर वसिवले हेच नगर पुढे मगध राज्याच्या राजधानीचे शहर पाटलीपुत्र म्हणून प्रसिद्धीस आले. पुढे अनेक वर्षाच्या पाठीनंतर मगध राज्यावर नदवशाच्या राजवटीचा शेवट करुन चंद्रगुप्त मौर्याने आपले वर्चस्व प्रस्थापित केले. चंद्रगुप्ताने २४ वर्षे राज्यकारभार पाहून राज्याचा विस्तार घडवून आणला. पुढे मात्र आपला पुत्र बिंदुचारला गादीवर बसविले. बिंदुसारने महापराक्रमाने अफगाणिस्तापर्यंत आपल्या राज्याचा विस्तार करुन विरोधकावर वचक निर्माण केला. पुढे बिंदुसारख्या सर्व उत्तर अधिकान्यांचा विरोध मोडून अशाने आपले राजकीय वर्चस्व प्रस्थापित केले. अवध्या वयाच्या २१ व्या वर्षी अशोक हा मौर्य साम्राज्याचा सम्राट बनला सर्व विरोधकाचा पाडाव झाला म्हणून इ.स.पूर्व २६८ मध्ये त्याने स्वत:ला राज्याभिषेक करुन घेतला.

२. धर्मचक प्रवर्तित सम्राट अशोक

सम्राट अशोकाने मौर्य साम्राज्याचे सर्व विरोधकाचे पारिपत्य करुन आपले साम्राज्य अबाधित केले असले तरी ओरिसा प्रांतात महानदीच्या भागात कलिंग हे एक संपन्न राज्य होते. तेथील स्वाभीमानी शूर व पराक्रमी लोकांनी मौर्याच्या सार्वभौमत्वाला विरोध करुन आपले स्वातंत्र्य अबाधित ठेवले होते सम्राट अशोकाने इ.स. पूर्व २६१ मध्ये कलिंगवरची स्वारी हाती घेऊन अफाट सैन्यासह चालून गेला कलिंगच्या राजा खान्देलने प्रचंड विरोध केला. मात्र सम्राट अशोकाच्या अफाट सैन्यामुळे त्याचा निभाव लागला नाही. एक लाख सैन्य ठार मारले गेले ती दीड लाख सैन्य युद्धबंदी बनून अशोकाला प्रचंड विजय मिळाला असे असले तरी रणांगणावर झालेला संहार आणि रक्तुमात पाहून अशोकाला तीव्र वेदना आणि कमालीचा पश्चाताप झाला मानसिकतेने

खचलेल्या अशोकावर राजवैद्यांच्या कोणत्याच औषधाची मात्रा उपकारक ठरत नवत्या पापाने होरपळलेल्या अशोकाने बौद्धनुयायी आचार्य उपगुप्तांच्या वचनांचा स्वीकार केला. ऐवढेच नव्हे तर उपगुप्तांच्या वाणीने प्रसन्न झालेल्या अशोकाने राजधानीतच एक कृत्रिम गुहा बनवून त्याभोवती सुंदर वन तयार करुन घेतले तेथेच आचार्याचा निवास राहिला, त्या ठिकाणी नित्यनियमाने अशोक येत असे. आचार्याची उपदेश व प्रवचने यातनू सम्राट अशोकाला सत्संग लाभला. यातून सम्राट अशोक बुद्ध धम्माकडे आकर्षित होऊन बौद्ध धम्माचा स्वीकार केला. आचार्याच्या मार्गदर्शनाखाली तथागत भगवान गौतम बुद्धांच्या पवित्र स्थळांना भेटी दिल्यात बौद्ध धम्माचा प्रचार आणि प्रसाराच्या कार्याला वाहूल घेतले.

सम्राट अशोकाने आपल्या राजकीय वाटचालीतून जरी बौद्ध धम्माचा स्वीकार केला असला तरी तो बौद्ध धम्माचा एक प्रामाणिक अनुयायी बनला होता. कारण त्याने इ.स. पूर्व २४८ मध्येच लुम्बिनीवन या गौतम बुद्धाच्या जन्म स्थळास भेट दिली होती. एवढेच नव्हे तर एकाच वेळी ५४,००० स्तूप बांधण्यात यावेत अशी ही इच्छा होती. यावरुनच सम्राट बुद्ध धम्माचा किती कट्टर अनुयायी बनला होता याचा प्रत्यय येतो. सम्राट अशोकाच्या व्यक्तीमत्वाला चक्कवर्तित या संकल्पनेचा संबंध जोडला जातो. चक्रवर्तित या शब्दाचा तात्विक भाषेत संबंध राजकीय आणि प्रादेशिक सत्ताधाऱ्यांशी जोडला जातो. या संकल्पनेशी ज्या प्रतिमेचा संबंध येत असतो ती प्रतिके सप्तरले म्हणून ओळखली जातात. अशी प्रतिके म्हणजेच संपूर्ण विश्यावर वर्चस्व किंवा सत्ता असलेली म्हणून चक्र भाग्यदेवता, राणी, युवराज मंत्री सम्राटाचा हत्ती आणि घोडा अशा सप्तरत्नांचा समावेश होतो. महत्वाचे म्हणजे लीनभाव आणि मानवतावादाचा समुच्चय अशोकाच्या व्यक्तीमत्वामधून प्रकर्षाने जाणवतो. याची प्रचिती आपल्याला त्याच्या शिलालेखांच्या अभ्यासातून येत असते. एक राज्यकर्ता आणि सामान्य/माणूस म्हणून बौद्ध धम्माची व्यावहारिक महत्वाची बाजू सम्राट अशोकाच्या लक्षात आली होती. म्हणूनच राजा हा राज्याचा सेवक असून जनतेकडून आलेला कर हा त्याचा हिस्सा असतो. हे पारंपारिक तत्वज्ञान अशोकाने बाजूला ठेवले स्वत:ला जनतेकडून नियुक्त करण्यात आलेला एक चोर मनुष्य ऐवजी सम्राट अशोक जनतेचा पिता समजत असे.

३.प्रजावत्सल राज्यकर्ता :

१. आदर्श राज्यपद्धती:

आपल्या राज्यात धर्म शिक्षणाचा प्रसार आणि प्रचार व्हावा याकडे सम्राट अशोकाने विशेष लक्ष दिले होते. अर्थात धर्म शिक्षणाबरोबरच राज्यात राजाचे कर्तव्य काय असतात त्याकडे त्याने दुर्लक्ष होऊ दिले नाही. आपले राज्य आणि राज्यकारभार हा अधिकाधिक समाजाभिमुख कसा असेल याकरिता सम्राट अशोक अतिशय दक्ष राहात असे. याकरिता आचार्य चाणक्य उर्फ कौटिल्य यांनी लिहिलेला राजनितीपर अर्थशास्त्र हा ग्रंथ त्यांचा आदर्श होता. म्हणूनच मौर्यकालीन विशेषता अशोकाच्या काळातील राज्यपद्धती ही प्रजेच्या हिताकरिताच होती असे आपणास त्यांच्या शिलालेखाच्या अभ्यासावरुन दिसून येते.

अफग्राणिस्थान सुद्धा अशोकाच्या साम्राज्यात सामील होते. आजही तेथील भग्न अवस्थेत असलेले अशोकालीन स्तंभ आणि बौद्ध स्तूप साक्ष देतात. तसेच एकमेव ब्रहमदेशाचा अपवाद वगळता तर भारतातील ब्रिटिश साम्राज्यपेक्षाही सम्राट अशोकाचे साम्राज्य विस्तृत स्वरुपाचे होते. ब्रिटिश काळात आणि आजच्या काळात आधुनिक साधनसामुग्री, अद्ययावत दळणवळण साधने असलेल्या काळातही सामाजिक स्वास्थ्य व उपाययोजनांना किती अडथळे येतात. किती कष्टप्रद होऊन बसते. या पार्श्वभूमीवर विचार केला तर एवढया अफाट साम्राज्याची सुरक्षा व स्वास्थ्य कसे राखले जात असेल, हा प्रश्न महत्वाचा आहे. याकरीता साम्राज्याचे विविध भाग पाडून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिकाऱ्यामार्फत कारभार पाहिला जाई. चंद्रगुप्त मौर्याच्या राज्यपद्धतीचा स्वीकार सम्राट अशोकाने केला असला तरी काही मूलभूत बदल अशोकाने केले होते. कारण चंद्रगुप्ताची राज्यपद्धती ही धर्मशीवर म्हणजेच <u>नैतिकशक्तीवर</u> अधिष्ठित झालेली होती. म्हणजेच सम्राट साम्राज्यविस्ताराबरोबुरचं धर्मराज्याची स्थापना आणि संघटन घडवून आणायचे होते. साम्राज्याच्या चार भागाचे नियमन जरी चार मोठ्या अधिकाऱ्यामार्फत केले जात असले तरी काय्रदे बनवून साम्राज्याचे नियमन स्वतः सम्राटच करीत असे याकरिता सम्राटाला सहार्य करण्यासाठी अनेक महत्वाच्या अधिकाऱ्यांच्या नियुक्त्या करण्यात आल्या

होत्या. राजुक प्रादेशिक युक्त आयुक्त या अधिकाऱ्यांबरोबरच सम्राट अशोकाने धर्म महामात्र हे विशेष अधिकारी पद निर्माण केले होते. अशोकाच्या धर्माशा जनतेला समजावून सांगणे आणि त्यांचे पालन होते किंवा नाही याची पाहणी करणे ही कर्तव्य धर्ममहामात्रची होती. यात जाति विशेषाला महत्व न देता व्यक्तीच्या गुणविशेषांना महत्व दिले जात असे. विशेष म्हणजे यात स्त्री अधिकाऱ्यांचाही समावेश करण्यात येत असे. आरमार रसद, पायदळ, घोडस्वार रथ, हत्तीदळ अशी सहा दळे निर्माण असलेले सम्राट अशोकाचे लष्करी बळ हे सामर्थ्यशाली असले तरी शिक्षणविषयक असलेल्या धर्म खात्याचा त्याला जास्त अभिमान होता कारण शिक्षण घेऊन सर्वकष जाणिवांनी परिपूर्ण समाज त्याला होता. म्हणूनच त्याच्या कोणताच शिलालेखात लष्करासंबंधीचा उल्लेख आलेला नाही.

२. रयतेचा त्राताः

या काळात जमीन ही सरकारी मालकीची असे. शेतकरी ही सरकारची कुळे म्हणून जिमनी कसत आणि खंड म्हणून उत्पन्नाचा चौथा किंवा सहाचा हिस्सा ठरल्याप्रमाणे सरकारात भरणा करीत. याशिवाय पाणीपट्टी सरकाराला द्यावी लागत असे. असे असले तरी हालाखीची स्थिती त्यावेळी शेतकरी वर्गाची नव्हती. रयत फारच संतुष्ट, सुखी व संपन्न असल्याची नोंद मेगस्थनीस करतो. कारण पाटबंधारे योजनेतून शेतीला पाणीपुरवठा मुबलक व वेळेवर केला जाई मोठे सरोवरे व कालव्यामार्फत सर्व प्रदेशांना पाणीपुरवठा केला जाई. सुयोग्य नियोजनाकरिता देशी—परदेशी निष्णात अभियंत्यांच्या नियुक्त्या करण्यात आल्या होत्या.

जिंकलेल्या प्रदेशातील जनतेलाही पुँढील काळात पितृत्वाची वागणूक दिली जात असे. कैद्यानासुद्धा दयेनच वागविण्याच्या आज्ञा होत्या. अनाथ, पोरके, गरजूना सरकारातून सर्व प्रकारची मदत केली जात असे. राज्यात व्यापार, कला, उद्योगधंदे यांची वृध्दी होण्याकरिता निकाय नावाच्या अधिकाऱ्यांच्या नियुक्त्या केलेल्या होत्या. म्हणूनच अशोककालीन भारताने स्थापत्य व शिल्पकलेतील केलेली प्रगती पाहून जगाळाही आश्चर्यचिकत व्हावे लागले शुल्कनिकाय अधिकाऱ्यांमार्फत जकात खात्याचे नियमन करुन त्यात सुसूत्रता आणली होती. सम्राट अशोकाने रयतेच्या आरोग्याबाबत

अतिदक्षता बाळगल्याचे दिसते. कोणीही औषधोपचार आणि शस्त्रक्रियेशिवाय राहू नये अशी त्याची इच्छा होती. माणसाबरोबरच पशुपक्ष्यांसाठीही रुग्णालये काढून आरोग्याच्या सुविधा सज्ज ठेवलेल्या होत्या. माझी प्रजा मला माझ्या मुलासारखी आहे. मी माझ्या पुत्राचे ऐहिक व पारलौकिक कल्याणासाठी झटणे हेही मी माझे कर्तव्य समजतो असे महत्वपूर्ण उल्लेख त्याच्या शिलालेखातून वाचावयास मिळतात.

३. शिक्षणाचा प्रसार मूलभूत कार्य:

रयतेच्या सर्वागींन उन्नतीचे मूळ हे शिक्षण आहे, हे सम्राट अशोकाने जाणले होत. सार्वित्रक शिक्षणाचे प्रधान अंग म्हणजे धर्म व नीती यांचेविषयाचे शिक्षण होते. कारण धर्म व नीती यांच्यामुळेच शीलवान समाज निर्माण होत असतो. शीलता हा राष्ट्रोन्नतीचा मूळ पाया आहे, धन आहे, उत्साह आहे. सत्ता आहे, पण शील नाही तेथे राष्ट्रयक्ती कधी निर्माण व्हायची नाही. व्यक्तिगत काय किंवा समाजात काय शील हेच बल असते. यासाठी राष्ट्रन्नती कर इच्छिणाऱ्यांनी प्रथम शील संवर्धनाकडे लक्ष दिले पाहिजे, हे लक्षात घेऊन सम्राट अशोकाने धर्म व नीती या शिक्षणाचा अफाट प्रसार केला.

४. आदर्श समाजजीवन :

सम्राट अशोकाच्या उदत्त शैक्षणिक धोरणाचा पारिपाक म्हणजे समाजात साक्षरतेचे प्रमाण हे अधिक होते. विविध सण, समारंभ, उत्सव साजरा केला जात असत. आहार—विहार उत्कृष्ट असल्याने समाज सुखी, समाधानी होता. समाजाची दृष्टी ही विशाल आणि उदार होती. सम्राट अशोकाने जरी बौद्धधम्माचा स्वीकार केला असला तरी इतर धर्मांचा अनादर केला नाही. सर्वच धर्मातील आदर्श आणि चांगल्या गोष्टीबद्दल त्याला आदर असल्यामुळेच त्याची धर्मनिरपेक्षता ही विशाल आणि व्यापक होती. इतर राज्याच्या काळापेक्षा अशोकालीन स्त्रीजीवन अधिक समृध्द होते. स्त्री—पुरुष प्रन्यासी धर्मापेक्षा सामाजिक सेवेत व्रत घेत असत. स्त्रीयांच्या उत्थानासाठी महापात्रा या स्त्री अधिकाऱ्यांची नियुक्ती केली होती. स्त्रियांना आपल्या मर्जीप्रमाणे क्रीवन जगण्याचा अधिकार होता.

१.५. सम्राट अशोकाचे राज्यरोहण :

अशोकाच्या राज्यरोहण ची निश्चित अशी माहिती उपलब्ध नाही. बिंदुसार मरण पावल्यानंतर अशोक त्याच्या गादीवर बसला. (ई.स.पु.२७३ व्या वर्षी) व त्यानंतर चार वर्षांनी म्हणजेच (ई.स.पु.२६९ व्या वर्षी) त्याचा रीतसर राज्याभिषेक झाला. बिंदुसाराचा सुशीम हा वडीलपुत्र होता. तो पाटलीपुत्र च्या गादीवर न बसता धाकटा पुत्र अशोक याला राजपद मिळाले. आणि राजपद मिळाल्या बरोबर राज्यभिषेक न होता तो मागून चार वर्षांनी झाला. या दोन्ही गोष्टी विचित्र आहे म्हणूनच कोणाच्याही मनात शंका उत्पन्न करण्याच्या होत्या. या दोन्ही गोष्टींचा योग्य खुलासा अशोकाच्या शिलालेखात किंवस अन्यत्र मिळत नसल्यामुळे त्या संबंधाच्या ज्या अनेक दंतकथा आहेत. त्याच्यावर विश्वास ठेवण्याकडे मनाची सहज प्रवृत्ती होते.

१. दंतकथा :

सुशीमला राजपद न मिळता ते अशोकला कसे काय मिळाले या बाबत एक दंतकथा आहे. ती अशी कि सुशीमचे बिंदुसाराचे दोन मंत्री राधागुप्त व खल्लटक यांच्याशी चांगले संबंध नव्हते. याला कारण असे कि सुशीमने आपल्या खोडकर स्वभावाने खल्लटक चा अपमान केला होता. त्यामुळे खल्लटकचे मन सुशीम विरुद्ध झाले होते. या अपमानाचा सूड घेण्याच्या विचारात तो होता. इतक्यात तक्षशीला येथे पुन्हा बंड उद्भवल्याची बातमी आली. तेव्हा मंत्राच्या सल्ल्याने ते बंड मोडण्यासाठी राजाने सुशीमला तक्षशीला येथे पाठविले. पण सोपविलेली कामगिरी सुशीमला पार पाडता आली नाही. मध्यंतरी राजा बिंदुसार आजारी पडून मरण पावला. सुशीम तेव्हा तक्षशीला येथे होता. हि संधी साधून खल्लटक व राधागुप्त व इतर मंत्राच्या साहायाने अशोकला गादीचा वारस म्हणून पुढे केले. आणि त्यालाच राजपद दिले. बिंदुसार मेल्याचे वर्तमान सुशीमला वाटेतच कळले. तेव्हा तो तातडीने पाटलीपुत्रला आला. पण वेशीच्या आत पाऊल ठेवता येऊ नये, असा कडेकोट बंदोबस्त मंत्र्यांनी अगोदरच करून ठेविला होता. किल्ल्याच्या बेशीवर प्रबळ सैनिक उभे करून ठेवले होते. आणि किल्ल्याभोवतालच्या खंदकात पुष्कळ लाकडे वैगरे भरून ती पेटवून दिली होती.

राज्यभिषेक लांबणीवर का पडला?

राज्यभिषेकाच्या बाबतीत इतिहासकारांमध्ये अनेक मतभेद आढळतात. प्रा. देवदत भांडारकर म्हणतात राज्यरोहण व राज्यभिषेक यांच्या मध्ये चार वर्षाचा काळ गेलाच नाही. काळगणनेच्या चुकीमुळे या दोन गोष्टी चार वर्षाच्या अंतरकाळामध्ये घडलेल्या दिसतात. तर व्हीन्सेट सारख्या पाश्चत्य इतिहासकार म्हणतात कि ''या चार वर्षात गादीच्या वासराहक्क संबंधाने भानगडी उपस्थित होऊन त्याची मजल पुष्कळशा रक्तपात पर्यत गेल्या कारणाने राज्यभिषेक लांबणीवर पडणे संभवणीय आहे.''

२. अशोकाची आई :

अशोकाची आई कोण होती यासंबंधीची जी एक दंतकथा आहे तीहि विद्यमान र्लेखकांकडून अविश्वनीय मानण्यात येते. प्रस्तुत चरित्राच्या शेवटी ज्या अनेक दंतकथा जोडल्या आहेत त्यांत ती वाचण्यास सापडेल. यापेक्षा या संबंधाने जास्त काही लिहिण्याची आवश्यकता दिसत नाही. अशोकाच्या करुपतेमुळे व दुष्ट स्वभावामुळे बालपणापासूनच तो बापाचा नावडता होता आणि म्हणून त्याला इतर राजकुमारांबरोबर बोलू व खेळू देण्यात येत नसे असे दंतकथा सांगतात. पण खरे असे दिसत नाही. माणसाच्या स्वभावात आमूल परिवर्तन घडू शकत नाही असे नाही. पण तसे घडले असल्याविषयी तसाच भक्कम पुरावा कारणासह पुढे आल्याशिवाय त्या गोष्टीवर विश्वास ठेवता येत नाही. सामान्यतः मुलाचे पाय पाळण्यांत दिसतात हीच म्हण अनुभवास येते, म्हणून विरुद्ध पुराव्याच्या अभावी असे धरुन चालण्यास हरकत नाही की अशोक हा त्याच्या बाळपणापासूनच धर्मशील, नम्न, सात्विक वृत्तींचा, कोमल मनाचा आणि भावनाप्रधान होता. इतर राजकुमारांप्रमाणेच त्याचे शिक्षण झालेले होते. त्याच्या दर्जाला व इभ्रतीला अनुरुप असे नोकराचाकरांशी व इतर जनांशी त्याचे नेहमी वर्तन होते. लहानपणापासूच त्याला शिकारीचा नाद होता आणि ही गोष्ट त्याच्या दोन लेखांतही स्पष्टपणे सांगितली आहे. पूर्वीच्या काळी मृगया हा क्षत्रियांचा एक प्रिय व्यवसाय होता ही गोष्ट संस्कृत शाकुंतल, विक्रमोवंशीय प्रभूति नाटकांवरुन दिसते. मौर्यवृंशी क्षत्रियांचे ठायी मृगयाप्रियता विशेषच होती असे ग्रीक इतिकासकारांनी लिहून ठेविले आहे आणि मुद्राराक्षस नाटकावरुनिही ते खरे दिसते.

३. अशोकाची कामगिरी:

तक्षशिला येथील बंड व रक्तपात केल्यावाचून अशोकाने मोडले, असे सांगण्यात येते की अशोक तक्षशिला येथे गेल्यावर तेथील प्रजेने त्याचे उत्तम प्रकारे स्वागत केले आणि अधिकाऱ्यांचे अत्याचार हे बंडाल. खरोखर कारण आहेत, प्रजेच्या मनांत राजद्रोहाची यत्किंचितही भावना नाही, अशी राजपुत्राची खात्री करुन दिली. तेव्हा अशोकांने गोड बोलून व खऱ्या अपराध्यांना शासन करण्यांत येईल असे सांगृन त्यांची क्षब्ध मने थ्रांत केली. राजपुत्राच्या या आश्वासनाने लोक संतृष्टअ झाले आणि गडबड मोड्रली. ही कथा विश्वसनीय दिसते. कारण, येथे जर त्याच्या हातून खरोखर रक्तपात झाला असता, तर कलिंग विजयाच्या वेळ त्याच्या हातून घडलेल्या असंख्य प्राणांच्या संहाराबददल जसे पश्चात्तापोदगार त्याने आपल्या एका आदेशांत नमूद करुन ठेविले, तसे या वेळच्या रक्तपातासंबंधानेही सुद्धा बहुधा केले असते. उज्जयिनी येथे नेमणूक तक्षशिला येथील कामगिरी संपवून परत आल्यानंतर काही दिवसांनी त्याची नेमणूक उज्जयिनी येथील राजप्रतिनिधि म्हणून करण्यात आली. या नेमणुकीसंबंधानेही लोकप्रवाह गंमतीचा आहे. तो निराळाच एका दंतकथेत सापडतो. वास्तविक पाहता ही नेमणूक करण्यात अशोकाचा मगध राज्याच्या एका मोठ्या व महत्वाच्या भागाशी प्रत्यक्ष परिचय व्हावा व राज्यकारभाराच्या कामाची जोखीमदारी शिरावर घेऊन ती पार पाडण्याचे त्याचे अंगी यावे असा उच्च हेतू राजाचे मनांत असणे स्वाभाविक आहे. पण लोकप्रवादाने त्याला विकृत स्वरूप देऊन अशोक कुरूप व नावडता असल्यामुळे राजाला आपल्या दृष्टीसमोर नकोसा झाला होता व त्यांत अशोकाची सावत्र आई तिष्यरिक्षता हिच्या अशोकाविषयीच्या द्वेषाचीही भर पडली, म्हणून उज्जयिनीसारख्या पाटलीपूत्रपासून दूरच्या प्रांतांत त्याला पाठविण्यात आले असा खऱ्या हेतूचा विपर्याय करण्यात आला असावा.

१.६ सारांश:

- √ सर्व विरोधकांचा विरोध मोडून मगध साम्राज्यावर आपले वर्चस्व निर्माण करणारा
- ✓ अशोक स्वाभाविक शूर महापराक्रमी, मुत्सद्दी व ज्ञानी होता. म्हणूनच आपल्या साम्राज्याचा अफाट विस्तार त्याने घडवून आणला. सज्ज प्रशासनाद्वारे अफाट साम्राज्यात शांतता सुबत्ता निर्माण केली होती.
- ✓ जनतेला पितृत्वाची वागणूक दिल्यामुळे अशोकिवरुद्ध बंडाला होऊन साम्राज्यद्रोह झाला नाही. कारण जिंकलेल्या शत्रू राज्यातील जनतेलाही मुलांप्रमाणेच वागणूक दिली. किलंग विजयाने मात्र त्याच्या जीवनात परिवर्तन होऊन त्याने तथागतांचा धर्म स्वीकारला. साम्राज्यात शेतकऱ्यांच्या जीवनात आमूलाग्र बदल घडवून आणलेत. प्रजाबद्दल राज्यकर्ता म्हणून धर्म आणि नितिच्या शिक्षणाचा प्रसार आणि प्रचार करुन शीलसंवर्धन करणारा समाज निर्माण केला. प्रचंड लष्करी सामर्थ्य असतानाही शिक्षणावर भर दिला. साम्राज्यात व्यापार कला, विविध उद्योगपद्याना वाव देऊन आर्थिक संपन्नता प्राप्त करुन दिली. रयतेच्या आरोग्य स्विधाकडे जातीने लक्ष दिले.
- ✓ समाजजीवनात स्त्रीस्वातंत्र्याचा संकाच न होऊ देता वैज्ञानिकतेचा आग्रह धरला. थोडक्यात सम्राट अशोकाला भारताचा पहिला चक्कवर्ती सम्राट म्हणणे उचित ठरेल. त्याचे कार्य, राज्यकारभार विस्तार, सुबत्ता, संपन्नता, शांतता, शैक्षणिक—सामाजिक उत्थानाची वाटचाल पाहिली तर ते स्वाभाविकपणे सिद्ध होते. हेच व्हिन्सेंट स्मिथसारख्या पाश्चात्य इतिहासकारांनी सुद्धा मान्य केले आहे.

१.७ संदर्भ:

- १. नचलखे धीरज, देवनांप्रिय प्रियदर्शी अर्थात सम्राट अशोक, सरिता प्रकाशन,पुणे, २०१४. पृ. १४.
- २. भालेराय श्रीनिवास, प्रजापिता सम्राट अशोक, अशोक प्रकाशन, पुणे, २०१०.
- ३. मेधनकर डॉ. भदन्त सावंगी, भारतीय इतिहास के निर्माता सम्राट अशोक, बुद्धभूमि प्रकाशन, कामठी रोड, पृ. ४७—४८ नागपूर २००९ पू. ४६—४७.
- ४. शिरगावकर डॉ. शरावती (अनु) (रोमिला थापर यांच्या अशोक आणि मौर्याचा ऱ्हास) महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, मुंबई. २००८, २०४—२०५.
- प. आपटे वासूदेव गोंविद, सम्राट अशोक चरित्र, वरदा प्रकाशन, पुणे, २०११,पृ १४७—१४८.
- ६. व.गो.आपटे, अशोक चरित्र, पृष्ठ क्रमांक ३८.
- ७. तिरपुडे डॉ. हेमंत, भारत राष्ट्र के सम्राट अशोक मौर्य, आशिया के प्रथम लिखित संविधान के शिल्पकार पु १४.
- ८. भार्लेराव श्रीनिवास उपरोक्त क.२. पृ. ५८-५९.

प्रकरण २. सम्राट अशोकाचे पराक्रम

घटक रचना

- २.१ उद्दिष्टये
- २.२ प्रस्तावना
- २.३ सम्राट अशोकाचे साम्राज्य विस्तार
- २.४ सम्राट अशोकाचे धार्मिक धोरण
- २.५ सम्राट अशोकाची योग्यता
- २.६ सारांश
- २.७ संदर्भ

१.१ उद्दिष्टये:

- १. कारकीर्दीत साम्राज्य विस्ताराची सर्वागीण माहिती मिळवणे.
- २. सम्राट अशोकाचे धार्मिक धोरण अभ्यासणे.
- इ. धर्माची प्रमुख आचारतत्वे विशद केली. अहिंसा, सर्व जातिधर्माबद्दल सिंहण्णुता, विडलधाऱ्या माणसांना मान देणे, संतांना, शिक्षकांना योग्य तो मान देणे, दासांना माणुसकीने वागवणे व सम्राट अशोकाचा योग्यतेचा अभ्यास करणे.

१.२ प्रस्तावना :

सम्राट अशोक हा जगातील सर्व महान राजापैकी एक होता. त्याचे साम्राज्य अति विस्तृत, समृध्द असून त्याचा शासनकाल हा सुख व शांति इत्यादींनी परिपूर्ण होता. त्याचे व्यक्तित्व महान असून तो पराक्रमी होता. सर्व धर्माना तो समानतेची वागणूक देत असे. तो नितांत असांप्रदायिक, धर्मीभावपूर्ण, प्रजावत्सल, लोकोपकारक व नीतीमान राजा होता. सिरीया, ब्रम्हदेश, सिलोन इत्यादी विविध देशावरही त्याच्या कर्तृत्वाचा प्रभाव पडलेला दिसतो. समाजाची नैतिक पातळी उंचावण्यासाठी सदाचरणावर भर देणाऱ्या नीतीतत्वांचा त्याने पाठपुरावा केला. त्याचप्रमाणे उत्कृष्ट शासनकर्ता म्हणून प्रजेचे संरक्षण, संवर्धन, लोकोकार्य त्याने केल्याची माहिती मिळते. म्हणूनच सांस्कृतिक जीवनाबरोबरच राजकीय जीवनातही त्याचे स्थान अनन्यसाधारण आहे.

अशोकाचा धर्म कोणता होता? की नाही हा इतिहासकारांसमोर नेहमीच वादग्रस्त प्रश्न राहिला आहे. या विषयावर विविध अभ्यासकांनी आपली मते मांडली आहेत. डॉ. प. थॉमस यांचे मत आहे की ते जैन धर्माचे अनुयायी होते. विद्वान रसाच्या मते अशोकाचा मुख्य धर्म ब्राहमण होता. विस्मित आणि आर. के. मुखर्जी यांनी त्यांचा धर्म सार्वित्रक मानला आहे, म्हणजेचे त्यांच्या धर्मात सर्व धर्मातील चांगले गुण समाविष्ट आहेत. अशोकाच्या धर्माबद्दल शंका बहुतेक विद्वान अशोकाचा धर्म बौध्द धर्म मानतात. पण काही अभ्यासकांनी त्याच्या अस्तित्वाबद्दल शंका व्यक्त केली आहे. हे विद्वान सेनर्ट केर्न आणि फ्लीट आहेत. भारतीय विद्वानांमध्ये डॉ. आर. के. मुखर्जी आणि डॉ. आर. एस. त्रिपाठी यांची नावे विशेष उल्लेखनीय आहेत. डॉ. आर. के. मुखर्जीच्या मते ''अशोकाच्या धर्माची तुलना त्या काळात प्रचलित असलेल्या कोणत्याही धर्माशी होऊ शकत नाही. हा धर्म निश्चितच बौध्द धर्म नव्हता कारण त्यात चार उदात्त सत्ये आणि अष्टमार्गी मार्गाचा उल्लेख नाही. कारण आणि परिणामाची विचारधाराही नाही.'' आणि आपल्याला बौध्द धर्माच्या आदित्यवादात कुठेही निर्वाणाची कल्पना आढळत नाही.

अशोक बौध्द असल्याचा पुरावा अनेक विद्वानांनी वरील विचारांच्या विरोधात मत मांडल आहे आणि अशोकाचा धर्म हाच धर्म मानला आहे. डॉ. भांडारकरांच्या मतानुसार, ''अशोकाच्या विविध शिलालेखांचा अभ्यास केला तर हे स्पष्ट होईल की त्यांचा वैयक्तिक धर्म देखील बौध्द धर्म होता आणि त्यांनी प्रचार केलेला धर्म देखील बौध्द धर्म होता.

१.३ सम्राट अशोकाचे साम्राज्य विस्तार :

बिंदुसारनंतर सम्राट अशोक मगध साम्राज्याचा प्रमुख झाला. अशोकाच्या कारिकर्दीची सर्वांगीण माहिती मिळविण्यास अनेक शिलालेख उपलब्ध आहेत. या शिलालेखांच्या आधारावर अशोकाच्या धर्मासंबंधी निरिनराळी मते विद्वानांनी दिली आहेत. काही विद्वानाच्या मते अशोक बौध्द धर्माचा उपासक असून या धर्माच्या प्रचारासाठी त्याने निरिनराळे शिलालेख लिहिले तर काही विद्वानांनी शिलालेखात या अशोकाच्या भाव व विचारावरुन तो जैन धर्माचाच उपासक असावा असे मत दिले आहे. काही विचारवंत असेही आहेत की,ज्यांच्या मते अशोक बौध्दही नव्हता व जैनही नव्हता, तर सन्मार्गने प्रजेचे पालन करणारा नीतीमान राजा होता. त्यामुळे सर्वसामान्य लोकांचा उत्कर्ष करण्यासाठी त्याने एक नवा समन्वयात्मक असोप्रदायिक व व्यावहारिक धर्मविचार लोकांच्या समोर मांडला. बौध्द धर्मग्रंथात अशोकाला चंडाशोक महटले असून त्यांनी आपल्या ९९ बंधूंचा खून करुन सत्ता मिळविली असे म्हटले आहे. तथापि विविध शिलालेखात त्याचे बंधू जीवंत असल्याची व राज्यकारभारात प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष भाग घेत असल्याची माहिती मिळते. यावरुन बौध्द ग्रंथात दिलेली माहिती योग्य वाटत नाही.

अशोकाच्या कारिकर्दीतील पहिली घटना म्हणजे किलंगचे युध्द होय. या युध्दात झालेल्या मनुष्यहानीचा परिणाम होऊनच अशोकानी युध्दत्यागाचा निर्णय घेतला. काही इतिहासकारांच्या मते या सुमारास किलंगच्या प्रदेशात जैनधर्म अस्तित्वा होता. या धर्मातील तत्वाचाच परिणाम होऊन त्याने वरील निर्णय घेतला असावा. युध्द त्यागाचा निर्णय घेतल्यानंतर अशोकाने जैन, बौध्द आणि हिंदू पंडीतांच्या भेटी घेतल्या, निरितराळ्या तीर्थक्षेत्रांना भेटी दिल्या. श्रावकांबरोबर चर्चा केली निरितराळ्या धर्माच्या निरितराळ्या संतांचे निरिक्षण केले व आवश्यक तेथे आवश्यक त्या प्रमाणात सहाकार्य दिले. जीवदया व व्यावहारिक अहिंसेला त्यांनी मूलमंत्र बनविले व या तत्वांचा प्रसार करण्यासाठी तीर्थक्षेत्र किंवा इतस्त्र निरितराळ्या धर्मीयांनस मदत करण्यासाठी नेमणूक केली. त्याच्या एका शिलालेखात मक्खशिलाच्या संप्रदायाच्या आजीवक साधूसाठी त्यांनी बराबर नावाच्या टेकडीवर गुफा बांधल्याची माहिती मिळते.

सम्राट संप्रति :

सम्राट अशोकाच्या कारकीर्दीनंतर मगधच्या सत्तेवर आलेला राजा 'संप्रति' हा जैन इतिहासाच्या दृष्टीने महत्वाचा राजा होय. सम्राट संप्रतीने ४२ वर्षे राज्य केले. पितामह अशोकाप्रमाणे तो महान, प्रजावत्सल, शांतिप्रिय व प्रतापी सम्राट होता. आपल्या गुरुच्या आदेशाप्रमाणे एक आदर्श जैन राजाप्रमाणे त्याने आपले जीवन व्यतीत केले. संप्रतीने जैन धर्माच्या प्रचारासाठी निरनिराळे प्रयत्न केले. अनेक तीर्थाचा जीर्णोध्दार, जंगनित जिनमंदिराची निर्मिती, निरनिराळया ठिकाणी जिनमूर्तीची स्थापना, विदेशात जैन धर्माच्या प्रचारासाठी प्रचारक पाठविणे इत्यादी अनेक कार्याचे श्रेय या सम्राटालाच देण्यात येते. संप्रतीने भारतात सर्वत्र प्रसारित झालेल्या जैन धर्माला विश्वधर्म बनविण्याचे महत्वपूर्ण कार्य केले. त्यानी अनेक विहार बांधले. उज्जयिनी येथे आचार्य सहस्ति यांचा उपदेश याने ग्रहण केला होता. राजस्थानमधीन अनेक जैन मूर्ती संप्रतीच्या कारकीर्दीतच तयार करण्यात आल्या असे मानतात. जिनधर्माला आश्रय देऊन आवश्यक ते सर्व सहकार्य करुन त्याच्या स्थानिय स्थितीपासून त्या धर्माला विश्वधर्माचे स्थान मिळवून देण्याचे कार्य संप्रती याने केले. संप्रतीच्या नंतर त्याचा पुत्र शालिशक सत्तेवर आला. आपल्या पित्याप्रमाणेच याने धार्मिक धोरण स्वीकारले असून दूरदूरच्या प्रदेशात जैन धर्माच्या प्रचाराचे महान कार्य याने केले. यानंतरच्या काळात कोणताही नाव घेण्याजोगा राजा मौर्य घराण्यात निर्माण झाला नाही.

भगवान महावीरांच्या उपदेशाप्रमाणेच त्याच्यानंतर थोडयाच काळात झालेल्या आचार्यानी जे ग्रंथ संकलित केले त्यानाही आगम म्हणून मान्यता प्राप्त झाली आहे. अगग्रंथापासून वेगळेपण दर्शविण्यासाठी या जागमाना अंगबाहय (प्रा. अंगबाहिर) आगम असे नाव देण्यात आले आहे. या प्रकारच्या ग्रंथापैकी काहींनी वर्णने दिगंबर ग्रंथामधूनही आढळतात. त्यावरुन असे स्पष्ट होते की पाटलीपुत्र वाचनेपूर्वीच ते संकलित झाले होते. त्यांचे सध्याचे स्वरुप मात्र अंगग्रंथाप्रमाणेच पाचव्या शतकातील वलभी वाचनेनुसार आहे व ते दिगबंर संप्रदायाला मान्य नाही. अंगबाहय आगमामध्ये आवश्यक सूत्र, बृहत्कल्प सूत्र, व्यवहार सूत्र, दशाश्रुतस्थ सूत्र, निशीथसूत्र इत्यादींचा समावेश होतो.

१. शुंग व कण्य

सम्राट अशोकानंतर मौर्य साम्राज्याची सत्ता हळूहळू कमी होऊ लागली. महाराजरा संप्रतिनंतर या साम्राज्यावर यवनाची आक्रमणे होऊ लागल्याने, त्यांच्यातील एकता नष्ट झाली. या परिस्थितीचा फायदा घेऊन इ.स.पू. दुसऱ्या शतकात शुंग वंशातील ब्राम्हण सेनापती पुष्यिमत्र याने वृहिमत्र मौर्याचा वध केला व राजसत्ता बळकावली. पुष्यिमत्र कट्टर ब्राम्हण होता, त्याने बौध्द व श्रमणावर मोठया प्रमाणात अत्याचार केले अम्रे म्हणतात. शुंगकाळाला ब्राम्हण धर्म पुनरुदार युग माने जाते पातंजलीच्या महाभाष्य व योगसूत्राची रचना याच काळात झाली. या काळात शिव व विष्णु पूजा, पौराणिक हिंदू धर्माचा मोठया प्रमाणात विकास इत्यादीची माहिती मिळते. याच काळात ग्रीकांनी भारतावर आक्रमण करुन साकतपर्यतच्या प्रदेशावर आपला अधिकार प्रस्थापित केला. दुसरीकडे किलंगच्या खारवेल राजाने मगधावर आक्रमण केले.

२. कलिंग:

प्राचीन भारतीय इतिहास काळात महत्वपूर्ण ठरलेल्या किलंगच्या प्रदेशाची उत्तर सीमा गंगा नदी, दक्षिणेस गंजम जिल्हयातील घनदाट जंगले होती. पश्चिम सीमा मध्यप्रांतामधील अमरकंटक पर्वतापर्यत तर पूर्वेला समुद्र होता. दक्षिण कोसल किंवा महाकोसलचा समावेशही या प्रदेशातच होत होता. वैदिक साहित्यात किलंगच्या प्रदेशाचा उल्लेख नाही. महाभारतात एक वन्य प्रदेशाच्या रुपात त्याचे वर्णन असून चित्रानंद या प्रदेशाचा राजा होता असे म्हटले आहे. धर्मसूत्रात या प्रदेशाला म्लेच्छ म्हटले आहे. यावरुन ब्राम्हण परंपरेनुसार किलंग देश चिरकाल एक अनार्य अवैदिक देशा मानला जात होता.

३. कुमारगुप्त पहिला:

कुमारगुप्त प्रथम(महेंद्रदित्य) चंद्रगुप्ताचा हा ध्रुवदेवीपासून झालेला मुलगा. याच्या काळात गुप्तांचे विशाल साम्राज्य अक्षुण्ण राहिले. या सुमारास गुप्तांची शक्ती उच्चांकाच्या परम शिखरावर असून, सर्वत्र सुख—शांती व समृध्दी होती. सम्राटाने भागवत धर्माचा पुरस्कार केलेला असला तरी जैन, बौध्द इत्यादी धर्म या काळात स्वतंत्ररित्या प्रगती करीतच होते. समाजात त्या धर्माना मान्यता होती. पुण्यमित्रर नावाच्या टोळयांनी लोकरंजनार्थ कार्य, प्रजावत्सलता, धार्मिकता इत्यादी विविध कार्याची माहिती देणारा आहे. या असामान्य पराक्रमावरुन त्याची तत्कालीन महान सम्राटांमध्ये गणना करण्यात येते.

४. गुप्तकाळ व जैनधर्म :

इ.स. चौथ्या शतकात भारतात गुप्त राजवंशाची स्थापना होऊन प्राचीन भारतीय इतिहासाच्या उत्तरायट्य सुरुवात झाली. या वंशाच्या स्थापनेपासून भारतीय इतिहासात एक नवीन पर्वाची सुरुवात झाली. शिलालेख वाङ, नाणी, परकीयांचे प्रवासवृत्त इत्यादी विविध इतिहास साधने या काळाची माहिती देण्यास उपयुक्त आहेत. त्यामुळेच या काळातील राजे, त्यांचे कार्य तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक स्थिती, साहित्य व कला इत्यादी क्षेत्रातील प्रगती इत्यादी विविध विषयांची योग्य माहिती मिळविता येते.

४. चंद्रगुप्त पहिला व समुद्रगुप्त :

गुप्त वंश हा प्राचीन प्रात्य जातीचाही एक असा वंश होता की, ज्यानी वैश्य कार्याचा अवलंब केला होता. प्राचीन काळात विशेषत: श्रमण परंपरेनुसार ब्रात्य इत्यादीमध्ये वर्ण जन्मत: नसून कर्मत: होता व यमपरिवर्तन सहजशक्य असून ते व्यक्तीच्या इच्छेवर अवलंबून होते. गुप्त घराण्याचा संस्थापक श्रीगुप्त याने नालंदाच्या शेजारी ५० मैलावर पूर्वेला आपल्या छोट्या राज्याची स्थापना केली. श्रीगुप्त व त्याचा उत्तराधिकारी घटोत्कच यांनी 'महाराज' हीच पदवी लावलेली दिसते त्याचा मुलगा चंद्रगुप्त (प्रथम) यांनी 'महाराजाधिराज'' पदवी लावलेली आहे. यावरुन या काळात राज्यविस्तासला सुरुवात झालेली असावी. या सुमारास तत्कालीन राजसत्ताध्ये लिच्छवीचे गणराज्य बलवान होते. चंद्रगुप्तानी लिच्छवी राजाची मुलगी कुमारदेवी हिच्याशी विवाह करुन तत्कालीन सत्ताधिशामध्ये गुप्त घराण्याला समान स्थान मिळवले.

रामगुप्त:

समुद्रगुप्तानंतर त्याचा ज्येष्ठ पुत्र रामगुप्त गादीवर आला. तथापि तो निर्बल असल्याने निरिनराळया मांडलिकांनी उठाव केला व शकक्षत्रानी तर गुप्त साम्राज्यावर आक्रमण केले. या आक्रमणात रामगुप्त पराभूत झाला. यावेळी त्यानी शकाबरोबर केलेल्या मानहानीच्या स्वरुपाच्या तहामधून गुप्त साम्राज्याची सुटका करण्याचे कार्य चंद्रगुप्तानी केले व या विजयानंतर तो गुप्तांचा सम्राट बनला. या पराक्रमाच्या सहाय्याने आपल्या पराक्रमी पित्याप्रमाणेच विजय मिळवून गुप्तांचे साम्राज्य बलवान व विस्तारित बनवून खऱ्या अर्थाने सुवर्णयुग प्रस्थापित करण्याचे कार्य चंद्रगुप्तानी केले.

गुजराथमधील शकक्षत्रपांचा त्यांनी पराभव केला. या विजयामुळे उत्तर हिंदुस्थानात गुप्तांची एकमेव सत्ता स्थापन झाली. त्याचबरोबर तेथे असणारे सोपारा हे बंदर गुप्तांच्या ताब्यात आले. या बंदराच्या सहाय्याने या काळातील व्यापाराना युरोपीय राष्ट्राबरोबर प्रत्यक्ष व्यापार करता येऊ लागला व युरोपीय राष्ट्राकडून खऱ्या अर्थाने सुवर्णाचा ओघ भारतीय प्रदेशाकडे सुरु झाला. हिमालयाच्या पायथ्याशी असलेल्या नागवंशीय राजाची कन्या कुबेरनागा हिच्याबरोबर केलेल्या विवाहातून चंद्रगुप्ताला प्रभावती गुप्ता नावाची मुलगी आलेली होती.

५. लहान हिंदू राजे :

गुर्जर प्रतिहाराबरोबरच दक्षिणेतील राष्ट्रकूट व बंगालच्या पाल राजसत्तेचेही पतन झाले. काश्मिरचा नागकर्कोटक वंश समाप्त होऊन त्या जागी उत्पल वंशाची स्थापना झाली होती. भारताच्या पश्चिमोत्तर सीमेवर तुर्की मुसलमानांचे आक्रमण सुरु झाले होते. या काळात संपूर्ण भारतात लहान लहान राज्यांची स्थापना झाली. कोणतेही एक साम्राज्य या काळात नव्हते. या काळात अनेक राजपूत राजवंश निर्माण झाले म्हणूनच या युगाला राजपूत युग म्हणतात त्यापैकी कनोजचे गहडवाल, सांभारचे चाहमान, दिल्लीचे तीमर, पंजाबचे साही, धारचे परमार, मेवाडचे गहिलोत, हस्तिकुंडाचे राठोड, श्रीवस्तीचे ध्वजवंशी, देवगढ, खजुराहों येथील चंदेल, ग्वाल्हेरचे कच्छपघट ही महत्वाची घराणी होत.

२.५. सम्राट अशोकाचे धार्मिक धोरण :

सम्राट अशोकाने जुन्या साम्राज्यधोरणाचा त्याग करुन नवीन धर्मविजयाचे धोरण अंमलात आणले. प्रजेची मते प्रेमाने जिंकूनच आपल्या धर्माचा प्रसार होऊ शकेल याची सम्राट अशोकला खात्री पटली होती. त्याच्या या धोरणालाच धर्मविजयाचे धोरण म्हणतात. दुसऱ्याच्या विचारात बदल घडवून आणून त्याला आपल्या धर्माची शिकवण दिल्यास आपल्या धर्माचा प्रसार लवकर होतो, असे त्याला आढळून आले. राज्यसत्तेचा आधार घेऊन त्याने कोठेही आपला धर्मप्रसार केला नाही. लोकांना सांगितलेली धर्मतत्वे त्याने स्वत: काटेकोरपणे पाळली म्हणून सम्राट अशोकाला बौध्द सम्राट व त्याच्या कारिकर्दीला बौध्द कालखंड असे संबोधले जाते. बौध्द धर्म स्वीकारल्या नंतर अशोकाने बौध्द संघात सामिल होऊन धर्माचचे पालन अत्यंत काटेकोरपणे केले, लोकांसमोर आपला आदर्श असावा असे त्याचचे मत होते. ठिकठिकाणी स्तूप, स्तंभ, चैत्यविहार बांधून त्याने बौध्द धर्माचा प्रसार केला. सम्राट अशोकाचे आता पर्यत ३४ शिलालेख सापडले असून ते सर्व वाचले गेले आहेत.

१. सम्राट अशोकाचे धर्मप्रसाराचे कार्य:

लोकांत धर्मप्रचार करण्यासाठी त्याने अत्यंत जंगली लोकात व मगध राज्यातल्या अत्यंत दूर दूरच्या प्रांतात आणी आपल्या राज्यबाहेरच्या काही देशात धमप्रचारक पाठवले. दीपवंश ग्रंथाच्या आठव्या आणि महावंश ग्रंथाच्या बाराव्या अध्यायात सम्राट अशोकाने पाठविलेल्या काही धमप्रचारकांची नावे आहेत. ती अशी मज्झिन्तक, महादेव, रिक्षित, योन, धर्मरिक्षत (हा बिक्ट्रिया येथील रिहवासी होता.) महाधर्मरिक्षत, महारिक्षत, मज्झीम, कश्यप, दुरिभसार, सहदेव, सोन आणि उत्तर मिहंद्र हि सर्व नावे काल्पनिक नसून हया धमप्रचारकाविषयी माहिती बौध्द ग्रंथात दिलेली आढळते. सम्राट अशोकाने सिंहलिद्वप (श्रीलंका) या देशात धर्माचा प्रसार करण्यासाठी आपला पुत्र मिहंद्र व पुत्री संघिमत्रा यांना पाठिवले हयांच्या सोबत बोधीवृक्षाची एक शाखा हि पाठिवली होती.

१. धर्मकृत्ये :

बौध्द धर्माच्या अभिवृद्ध्यर्ष अशोकाने जे प्रयत्न केले त्यांत एक गोष्ट मोठी महत्वाची आहे, ती ही की, त्याने देशो—तीर्थाचं दर्शन देशी हिंडून बौध्दतीर्थस्थानांचे दर्शन घेतले. आणि त्या त्या ठिकाणी नवीन स्तूप उभारले. अथवा जुन्यांचा उध्दार केला. निम्मी व पटेरिओ येथील स्तंभावरुन ही गोष्ट प्रत्ययास येते. स्वतःच्या राज्यांत तर त्याने ८४,००० स्तूप निर्माण केले अशी दंताकथा आहे.

अशोकाने ज्या ज्या स्थळांची दर्शने घेतली त्यातल्या प्रमुख स्थानांची नावे येथे देतो. ज्या ठिकाणी बुध्दाचा जन्म झाला ते लंबिनी नावाचे उदयान; बुध्दाच्या बापाची राजधानी कपिलवस्तु नगरी; संसाराविषयी विरित्क उत्पन्न होऊन राजवाडयांतून अंधाऱ्या रात्री बाहेर पडल्यावर गावाबाहेर ज्या ठिकाणी बुध्दाने आपल्या अंगावरचे अलंकार व राजभूषणे बरोबर आलेल्या सेवकास देऊन टाकली आणि तरवारीले आपले केस कापन, वैराग्यचिन्ह धारण केले ते अनोमा नावांच्या नदीचे तीर ज्या ठिकाणी बुध्दाचा समकालीन राजा बिंबिसार राज्य करीत होता आणि ज्या ठिकाणी पर्वत आणि गुहा यांच्यामध्ये एकांतात तपश्चर्या करण्याऱ्या ऋषीपाशी जाऊन बुध्दाने आश्रय मागितला ती राजगृह नामक राजधानी व तिच्या आसपासचे पर्वत व ऋषींनी शिकविलेल्या जपतप साधनांनी तृप्ती न झाल्यामुळे तेथून निघाल्यानंतर ज्या ठिकाणी त्याने जाऊन सहा वर्षे सारखे चिंतन केले ते बुध्दगयाजवळचे उरुवेल नावाचे जंगल; तपश्चर्या व्यर्थ आणि अनर्थावह समजून तिचा नाद सोडून दिल्यावर क्षीण झालेल्या शरीरास येथेष्ट आहार देऊन ज्या ठिकाणी त्याने पुन: टवटवी आणली आणि ज्या ठिकाणी सुजाता नामक स्त्रीने त्याला यथेच्छ भोजन घातले ते निरंजना नदींचे तीर ज्या ठिकाणी अश्वत्य वृक्षाच्या ख्राली बसला असता त्याला सिध्दी प्राप्त झाली. ती बुध्दगया. सिध्दी प्राप्त झ्राल्यानंतर ज्या ठिकाणी त्याने प्रथम धर्मोपदेशास प्रारंभ केला, ते काशी येथील मृगदावकानननामक स्थान आणि अखेर ज्याठिकाणी त्या महात्याने या लोकीचे आपले कर्तव्य उत्तमप्रकारे पार पाडून अत्यंत समाधानाने इहलोकाचा निरोप घेऊन निवाध्णपदाप्रत गमन केले असे ते कुशिनगर.

२. भारतीय संस्कृतीत बौध्द धर्माचे योगदान :

१. साहित्य क्षेत्रात :

बौध्द धर्माचे साहित्य क्षेत्रातील योगदान अविस्मरणीय आहे. भारतीय संस्कृतीच्या क्षेत्रात बौध्द धर्माची खूप वाढ झाली. बौध्दांनी पाली भाषेत लिहिलेले जातक साहित्य भारतातील विविध पैलूंची माहिती देते. बौध्द धर्माच्या लोकांनी केवळ पाली भाषेतच नव्हे तर संस्कृत भाषेतही अनेक ग्रंथ रचले, या ग्रंथांमधून आपल्याला डेंटल कार्पेट इंडियाबद्दल विविधि क्षेत्रांशी संबंधित महत्वाची माहिती मिळते.

२. तत्वज्ञानाच्या क्षेत्रात :

बौध्द धर्मानेही भारतीय संस्कृतीला तत्वज्ञानाच्या क्षेत्रात खूप योगदान दिले आहे. प्रतित्यसमृत्पाद, शून्यवाद, योगाचारा, सौतांत्रिक विज्ञानवाद इत्यादी अनेक विचारसरणींनी भारतीयांवर प्रभाव टाकला. परंतु आज बौध्द धर्म नामशेष झाला असला तरी आजही बौध्द तत्वज्ञानाचे महत्व पूर्वीसारखेच आहे. त्यामुळे बौध्द धर्मीचे तत्वज्ञानाच्या क्षेत्रातील योगदान अविस्मरणीय आहे, असे म्हणता येईल.

३. धर्माच्या क्षेत्रात :

धर्माच्या क्षेत्रात बौध्द धर्माचे खूप काही दिले आहे, जसे धर्मात यज्ञ, बळी, कर्मकांड इत्यादींच्या जागी मानवता, आपुलकी, समरसतेची भावना विकसित झाली आहे.

४. कला क्षेत्रात :

साहित्य, तत्वज्ञान आणि धर्मासोबतच बौध्द धर्माने भारतीय संस्कृतीला खूप काही दिले आहे. जसे शिल्पकला, कलाकुसर इ. गुहा मंदिर स्तूप ही केवळ बौध्द धर्माची देणगी आहे. कलेच्या क्षेत्रात अजिंठा, एलोरा, बाग इत्यादी सर्व ठिकाणी बौध्द काळातील वास्तुकला आणि चित्रे आहेत.

३. अशोकाच्या धर्माचे वर्णन :

अशोकाचा धर्म कोणता होता? की नाही हा इतिकारांसमोर नेहमीच वादग्रस्त प्रश्न राहिला आहे. या विषयावर विविध अभ्यासकांनी आपली मते मांडली आहेत. डॉ.प. थॉमस यांचे मत आहे की ते जैन धर्माचे अनुयायी होते. विद्वान रसाच्या मते अशोकाचा मुख्य धर्म ब्राम्हण होता. विस्मीत आणि आर के मुखर्जी यांनी त्यांचा धर्म सार्वित्रक मानला आहे, म्हणजेच त्यांच्या धर्मात सर्व धर्मातील चांगले गुण समाविष्ट आहेत. अशोकाच्या धर्माबद्दल शंका बहुतेक विद्वान अशोकाचा धर्म बौध्द धर्म मानतात. पण काही अभ्यासकांनी त्याच्या अस्तित्वाबद्दल शंका व्यक्त केली आहे. हे विद्वान सेनर्ट केर्न आणि फ्लीट आहेत. भारतीय विद्वानांमध्ये डॉ. आरे के मुखर्जी आणि डॉ. आर एस त्रिपाठी यांची नावे विशेष उल्लेखनीय आहेत. डॉ. आर के मुखर्जीच्या मते— ''अशोकाची धर्माची तुलना त्या काळात प्रचलित असलेल्या कोणत्याही धर्माशी होऊ शकत नाही. हा धर्म निश्चितच बौध्द धर्म नव्हतर कारण त्यात चार उदात्त सत्ये आणि अष्टमार्गी मार्गाचा उल्लेख नाही. कारण आणि परिणामाची विचारधाराही नाही.'' आणि आपल्याला बौध्द धर्माच्या आदित्यवादात क्ठेही निर्वाणाची कल्पना आढळत नाही.

बौध्द असण्याचे इतर पुरावे :

- दीप राजवंश आणि महावंशानुसार, राज्य अभिषेकच्या नवव्या वर्षी, न्याग्रीध नावाच्या व्यक्तीने अशोकाला बौध्द धर्माची दीक्षा दिली.
- २. चिनी प्रवासी देखील बौध्द धर्माचे अनुयायी स्वीकारतात.
- ३. भाब्रू शिलालेखात त्यांनी स्पष्टपणे नमूद केले आहे की बौध्द संघात तेढ निर्माण करणाऱ्यांना शिक्षा होईल.
- ४. अशोकाने बौध्द तीर्थक्षेत्रांच्या सहली केल्या.
- ५. यज्ञ, प्रशुबळी इत्यादी कर्मकाडांना त्यांनी कडाडून विरोध केला.
- ६. आपल्या कारकिर्दीत त्याने आपली राजधानी पाटलीपुत्र येथे तिसरी बौध्द परिषद आयोजित केली.

२.५ सम्राट अशोकाची योग्यता :

जगाच्या इतिहासात कर्तबगार राजे अनेक होऊन गेले परंतु भारतीय इतिहास किंवा जगाच्या इतिहासात सम्राट अशोकाचे स्थान अनन्य साधारण समजले जाते. अशोकाने भारतावर (काही भाग सोडून) चाळीश वर्षे राज्य केले. ई.स.पू २३२ मध्ये त्याचा मृत्यू झाला. सम्राट अशोकाचा मृलगा मिहंद्र आणि मुलगी संघिमत्रा सिहलद्वीपात(श्रीलंका) मध्ये धर्मप्रसारासाठी गेले आणि ते तेथेच त्यांचा दुर्दैवाने अंत झाला. सम्राट अशोकला पृष्कळ मुळे असावीत असे सांगितले जाते. तरी सुध्दा त्याचा नातू सम्राट अशोकाच्या मृत्यूनंतर गादीवर आला. किंगच्या युध्दात नेतृत्व करुन मिळविलेल्या विजयाच्या आधारे त्याने आपले लष्करी कौशल्य सिध्द केले होते. अंतर्गत व प्रकीय शत्रूपासून समाजाचे रक्षण करण्यासाठी अशोकाने योग्य ती काळजी घेतली होती. सम्राट अशोकाची थोरवी त्यानने मिळविलेल्या विजयात नसून त्याची त्याग बुध्दी, धर्मशीलपणा व प्रजेविषयी असलेली तळमळ यातच आहे.

१. बौध्द धर्माचा स्वीकार :

अशोकाच्या वेळी बौध्द धर्म हा शुध्द स्वरुपात होता व तो निरिनराळया प्रचारकाकडून तो उपदेशिला जात होता. मगधराज्यात असा कोणताही प्रदेश नव्हता कि जेथे बोध्द भिक्षु व धर्मप्रचारकांचा प्रवेश झाला नव्हता. किलंग विजयावेळी झालेल्या भयंकर प्राणीहानी मुळे अनुतप्त झालेल्या अंतकरणाला शांती देण्यास बौध्द धर्मासारखा धर्मच अत्यंत योग्य असल्यामुळे सम्राट अशोकाच्या मनावर त्या धर्माची पुरी छाप पडली आणि त्याने त्या धर्माचा स्वीकार केला.

२. अशोकाची धर्मयात्रा :

त्याने प्रथम आप्रल्या राज्यातली शिकार बंद करुन टाकली आणि चैनीसाठी राजदौरे न करता त्या ऐवजी तो आता बौध्द तीर्थयात्रा करु लागला. तो प्रथमतः नेपाळात तराई प्रांतात बुध्दांचे जन्मस्थान असलेल्या लुम्बिनी या ठिकाणी दर्शनासाठी गेला. सम्राट अशोकाचे गुरु आचार्य उपगुप्त हे ही त्यावेळी त्यांच्या बरोबर होते. त्यानंतर क्रमाक्रमाने कपिलवस्तू (जेथे गौतम बुध्दांचे बालपण गेले ते स्थान), बोधिवृक्ष

असलेला गया, सारनाथ, गौतम बुध्दांचे महापरिनिर्वान जेथे झाले ते कुशानगर, गौतम बुध्द ज्या ठिकाणी दीर्घकाळ राहिले ते श्रीवस्ती, येथील वनातील मठ, त्याचप्रमाणे बुध्दांचा पट्टिशष्य आनंद याचा स्तूप अशा तीर्थ स्थानांची दर्शने घेत सम्राट अशोक फिरला.

३. बौध्द तीर्थक्षेत्रांना भेटी :

बौध्दधर्मातील अहिंसेच्या तत्वांनी सम्राट अशोक प्रभावित झाला होता. त्याने बौध्द ग्रंथाचा अभ्यास केला. विविध बौध्द आचार्य बरोबर चर्चा केली. बौध्द भिक्षुचे जीवन काही काळ अनुभवले. बौध्द तीर्थ क्षेत्रांना भेटी दिल्या व आवश्यक ती मदत केली. त्यामुळे या धर्मातील अहिंसा या तत्वाचा स्वीकार करुन त्याचा प्रसार करणे त्याला शक्य झाले.

४. आदर्श विचारांचा प्रसार :

आपल्या सार्वभौम धर्माच्याद्वारे समाजात आदर्शतत्वांचा प्रसार करण्यासाठी त्याने या विषयावर विविध विद्वानांची व आचार्याची संभाषणे आयोजित केली. सदाचार पालनाचे योग्य परिणाम समाजाला ज्ञात व्हावे म्हणून स्वर्गातील विविध अवस्थांची चित्रे काढून घेतली व त्यांच्या द्वारे या तत्वांचा समाजात प्रसार केला.

५. आलेख लेखनः

सम्राट अशोकाच्या काळात मौर्य साम्राज्य मोठया प्रमाणात विस्तारित झाले होते. या सम्राज्यातील निरनिराळया भागात धर्माचा प्रसार करण्यासाठी आलेख लेखन केले गेले. मोठया खडकावर विविध आदेश कोरुन लिहिण्यात आले. स्तंभावर राजाजा व धर्मिशिक्षण या विषयी लेख लिहिण्यात आले. असे स्तंभ निरनिराळया प्रांतात उभारुन त्या आलेखातून आपल्या धर्मातील आदर्श, नैतिक व मानवतेच्या विचारांचा त्याने प्रसार केला.

२.६ सारांश :

किंग झालेल्या पश्चातापाने त्याचे मन विचितित झाले. त्याने युध्द त्याग करुन लोकांना सुखी व समाधानी कसे ठेवावे. हया गोष्टीवर लक्ष दिले. सम्राट अशोकाने बौध्द धर्माची स्वीकार केला. त्यातील अहिंसा तत्वाचे पालन करुन त्या तत्वांचा प्रसार व प्रचार करण्याचे योजिले किंवा ठरविले. सम्राट अशोकाने बौध्द धर्म स्वीकार केल्यानंतर त्यांनी काही धर्मयात्रा केल्या. लोकांना युध्दाने न जिंकता प्रेमाने व अहिंसा या तत्वाने विजय मिळवावा हे धोरण अवलंबले.

सम्राट अशोकाने आदर्श तत्वांचा व धर्माचा प्रसार करण्यासाठी मोठया प्रमाणात कार्य केले. त्याने काही राजदूत, अधिकारी आणि बौध्द भिक्षु निरनिराळया प्रांतात पाठिवले. लोकांना योग्य शिक्षण देण्यासाठी प्रशासनातील काही अधिकाऱ्यांची नेमणूक केली.

सम्राट अशोकाचे विचार, त्याचे तत्व व आदेश त्याने मोठया प्रमाणात स्तंभलेख, गिरीलेख या द्वारे लिहून ठेवले आहे. त्यावरुन आपल्याला त्याकाळची धार्मिक व राजकीय व्यवस्था लक्षात येते. हे गिरीलेख वेगवेगळया प्रांतात सापडल्याने त्याचा साम्राज्य विस्तार कोणकोणत्या प्रदेशात होता हे लक्षात येते.

२.७ संदर्भ :

- १. डॉ. कोलारकर श.गो.भारताचा इतिहास प्राचीन व मध्ययुगीन, श्री मंगेश प्रकाशन, नवी रामदास पेठ, नागपूर.
- २. प्रा.लहाडे, नंदा, प्रा. देशपांडे अरुण, प्रा. भोसले लक्ष्मण, संदर्भ भारत, चैलस बुक्स, सदाशिव पेठ, पुणे.
- इ. प्रा. भिडे जी.एल. प्राचीन भारत, फडके प्रकाशन. फडके भवन दुधाळी, कोल्हापूर, १९९६.
- ४. हरिभक्त गुंडोपंत, अशोक आणि त्याचे लेख, प्र.गो.म.नवाथे, ओवनडन रोड, मुंबई १९५३.
- ५. आपटे वा.गो.अशोक चरित्र, समन्वय प्रकाशन, शाहुरी, कोल्हापूर.
- ६. डॉ. कोलारकर श.गो.प्राचीन भारताचा इतिहास राजकीय, सामाजिक व सांस्कृतिक श्री मंगेश प्रकाशन, नवी रामदास पेठ, नागपूर.
- प्रा.लोखंडे राजेंद्रसिंग, प्रा.कोडलकर अशोक, प्रा. मस्के एम. एम. प्राचीन भारताचा इतिहास व संस्कृती, अक्षरलेण प्रकाशन जुनी मिन कम्पाउंड, सोलापूर.
- ८. प्रा. गायधन रं.ना.प्रा.राहुरकर कै. व. ग. प्राचीन भारताचा सांस्कृतिक इतिहास कॉनटीनेंटल प्रकाशन, विजयनगर पुणे
- ९. वासुदेव गोविंद आपटे (बी ए आर्यावर्तीतला पहिला चक्रवर्ती राजा)

प्रकरण ३ सम्राट अशोकाचे शिलालेख

घटक रचना

- ३.१ उद्देश
- ३.२ प्रस्तावना
- ३.३ सम्राट अशोकाचे शिलालेख
- ३.४ सम्राट अशोकाचे स्तंभालेख
- ३.५ सम्राट अशोकाचे चौदा गिरीलेख (आदेश)
- ३.६ सारांश
- ३.७ संदर्भ

३.१ उद्दिष्टये :

- सम्राट अशोकाचे झालेली मतपरिवर्तन धर्म स्वीकार व त्यानंतर त्याचे कार्य त्याने केलेल्या शिलालेख व स्थापत्य वरुन आपणास मिळते.
- २. धर्म अशोक बनल्यानंतर त्याने बांधलेले स्तंभ व शिलालेख त्यावर त्याने लिहलेले लेख या वरुन त्याची धर्माबद्दलची भावना लक्षात येते.
- ३. सम्राट अशोकाची प्रशासन व्यवस्था, त्याची राजाज्ञा त्याने निर्माण केलेल्या स्तंभालेखावर कोरली असल्याने त्याचे प्रशासनाचे स्वरुप व व्यवस्था याची ऐतिहासिक माहिती आपणास मिळते.

किंग युध्दानंतर अशोकाच्या जीवनात आमुलाग्र बदल झाला. त्याने युध्द न करता लोकउपयोगी कार्यास प्राधान्य दिले व तो स्वतः हि तसे कार्य करु लागला. व त्याच्या राज्यातील अधिकाऱ्यांना ते आदेश ही देण्यात आले. त्याने आपली राजाज्ञा व आदेश हे शिलालेखात कोरुन ठेवण्यात आले आहेत. ती आज्ञा किंवा आदेश त्या काळची मुळ असलेली पाली भाषा व ब्राम्ही लिपी मध्ये कोरण्यात आली आहे. अशोकाचे शिलालेख भारताच्या निरिनराळया प्रांतातून सापडले आहेत. त्यावरुन त्याचा साम्राज्य विस्तार व राजकीय परिस्थितीची माहिती मिळते.

सातव्या प्रकरणात सांगितलेच आहे की, नुकत्याचे जिंकून घेतलेल्या किलंग राज्यांतला प्रजेशी कसे वागावे यासंबंधांने अशोक राजाने आपल्या अधिकाऱ्यांना विशेष दोन लेखांच्या द्वारे केल्या होत्या ते दोन लेख किलंगलेख या नावाने प्रसिध्द आहेत, ते लेख असे—

अशोकाच्या सर्व लेखात त्याच्या चौदा गीरीलेखाचे विशेष महत्व आहे. हे चौदा गिरीलेख गिरनार, कलसी, धौली, जौगड, शहाबाजगढी, मानसेना इत्यादी निरिनराळ्या ठिकाणी विखुरलेले आहेत. प्रत्येक लेखात काहीना काही महत्वाचा विषय आहे. व त्यावरुन अशोकाचा स्वभाव त्याची धर्म मते, राजव्यवस्था, तत्कालीन समाजस्थीती इत्यादी गोष्टीवर महत्वाचा प्रकाश पडला आहे. या आदेशामूळे अशोकाचे चरित्र लिहिण्याची आवश्यक अशी विश्वनीय माहिती मिळते.

३.३ सम्राट अशोकाचे शिलालेख:

अशोकाचे शिलालेख म्हणजेच अशोकस्तंभ, मोठमोठे गोलाकार खडक आणि गुहांमधील (लेण्यामधील) भिंतीवर कोरलेल्या ३३ शिलालेखांचा संग्रह आहे आणि मौर्य साम्राज्याचा सम्राट अशोक याने इ.स.पू. २७२ ते इ.स.पू. २३२ या आपल्या राज्यकारभाराच्या काळात हे शिलालेख तयार करून घेतलेले आहेत.

१. प्रकार:

सम्राट अशोकाच्या शाही आज्ञा आणि त्याच्या अन्य आलेखांचे बृहद शिलालेख, लघु शिलालेख, विशाला स्तंभालेख, लघु स्तंभालेख आणि गुंफा शिलालेख असे पाच प्रकारचे शिलालेख आहेत. चौदा बृहद शिलालेख शृंखला पाच ठिकाणी, सहा विशाल स्तंभालेख सहा ठिकाणी (त्या पैकी टोपरा स्तभांवर सात लेख), एकोणीस ठिकाणी लघु शिलालेख, सहा लघु स्तभांलेख आणि तीन गुंफा शिलालेख असे शिलालेख उपलब्ध झाले आहेत. या लेखाचे स्थळ आणि लेख असे वर्गीकरण खालीलप्रमाणे आहे.

चौदा बृहद शिलालेख शृंखला पाच ठिकाणी गिरनार (१४), कालसी (१४), शहाबाजगढ (१४), मानसेहरा (१४), येरागुडी (१४), धौली (११,१२,१३ शिलालेख वगळलेले), जौगड (११,१२,१३ शिलालेख वगळलेले), सोपारा (८ वा आणि ९ वा फक्त). धौली आणि जौगड येथे शृंखलेब्यतिरिक्त प्रत्येकी दोन अधिकचे बृहद शिलालेख आहेत.

लघु शिलालेख अहुआरा, भाबु, बैरट, गुजर्रा, गविमठ, जितंग (रामेश्वर), मास्की, पांगुरिया, रुपनाथ, रतनपूर्वा, सहसराम, बहापुर, ब्रम्हिगरी, रजुला मंदिगरी या ठिकाणी प्रत्येकी एक नित्तूर, उदेगोलम या ठिकाणी दोन, लघु स्तंभालेख — सारनाथ, कौसंबी, साँची, देविया (राणी), लुंबिणी आणि निगलिवा या ठिकाणी प्रत्येक एक. गुंफा शिलालेख — बार्बरा पर्वतातील तीन गुफा — निग्रोध, खलीतक आणि सुप्पिय अशा एकूण तीन.

२. सम्राट अशोकाच्या शिलालेखांचा शोध :

सम्राट अशोकाच्या मीरतमध्ये असलेला पहिला आलेख इ.स. १७५० मध्ये पेड्रोटिफेनथेलरने शोधून काढला. त्यानंतर इ.स. १९१५ पर्यत टॉड, किट्टो, राईस, एलिस, कॅप्टन लें, फीहरर, ऑस्ट्रेल, बीडन व भगवनालाल इंद्र यांनी अशोकाचे आलेख शोधले. इ.स. १८३७ साली प्रिन्सेप याने आलेखातील ब्राम्ही लिपीचे वाचन केले. हे आलेख शाहबाझगढी, मानसेरा, कालसी, गिरनार, धौली, जौगड, कर्नूल, सोपारा या ठिकाणी सापडलेले आहेत. अशोकाचे स्तंभालेख लोरिया नंदनगड, टोपरा, अलाहाबाद, लोरिया अरराज, रामपुरवा व सारनाथ येथे मिळाले. याचबरोबर आणखी काही महत्वपूर्ण आलेख रुपनाथ, सहसराम, बैराट, रतनपूर्वा, बाराबार, मस्की, भाबु, साँची व कौशांबी येथेही सापडलेला आहेत. रतनपूर्वा हा लघू शिलालेख या सर्वात मवीन इ.स. २००९ मध्ये सापडलेला आहे.

३. देवानांपिय पियदसि म्हणजेच राजा अशोक असे निश्चित :

इसवीसन १९१५ मध्ये कर्नाटक राज्यातील रायचूर या जिल्हयात मास्की या गावी सी. बिडॉन या खाण अभियंत्यास एक शिलालेख सापडला. या शिलालेखात नेहेमीच्या देवानांपिय पदिस ऐवजी ''देवानांपियस असोकस'' असा उल्लेख आढळला. पाठोपाठ कर्नाटकातील बेल्लारीी जिहयातील मितूर या गावी अशोकाचे दोन लघु शिलालेख सापडले. या शिलालेखात 'देवानांपिय पियदिस ऐवजी राजा अशोक' असा उल्लेख आढळला. नित्तूरपासून जवळच उदेलगोलम या गावी दोन शिलालेख सापडले. या दोहोपैकी एक क्षतिग्रस्त झालेला होता परंतु दुसऱ्या शिलालेखात 'देवनांपिय पियदिस' ऐवजी 'राजा असोको देवानांपियो' असा उल्लेख आढळला आणि देवानांपिय पियदिस' ऐवजी 'राजा असोको देवानांपियो' असा उल्लेख आढळला आणि देवानांपिय प्रियदर्शी म्हणजेचा इ.स.पू. २७२ ते २३२ मधील भारतीय राजा सम्राट अशोक हे सिध्द झाले. इ.स. १९५५ मध्ये मध्य प्रदेशातील दितया जिल्हयातील गुजर्र या गावी अशोकाचा आणखी एएकए शिलालेख सापडला या शिलालेखात 'देवनांपियस पियदिसना असोकराजस' असा उल्लेख आढळला. अशा प्रकारे देवनांप्रिय प्रियदर्शी म्हणजेच सम्राट अशोक या सत्यावर शिक्कामोर्तब झाले.

शिलालेखांची भाषा आणि लिपी :

अशोकाच्या कोरीव लेखांची संख्या चाळीसच्या आसपास असून मोठया शिळांवरील राजाज्ञा, लहान शिळांवरील राजाज्ञा स्वतंत्र दगडवरील राजाज्ञा, मोठया व लहान स्तंभावरील राजाज्ञा अशा पाच गटात त्याची विभागणी केली जाते.अशोकाचे नाव फक्त लहान शिळांवरील राजाज्ञांच्या प्रतिकृतीत आढळते..

५. बाराव्या बृहद शिलालेखाचा अनुवाद :

आर्यपुत्राचे सम्राटाचे नावे, सुवर्णिगरीच्या महामात्रांनी आणि इसिलसिच्या महामात्रांय आरोग्य चिंतून असे सांगावे कि, देवानंप्रियांनी आज्ञापिले आहे. अडीच वर्षापासून अधिक मी उपासक होतो पण विकास नव्हता. या वर्षाहून अतिरिक्त एक वर्षापासून संघाच्या सानिध्यात अधिक विकास आहे. या काळात जंबुद्विपा मध्ये श्रमण आणि मानवांत देव मिसळत नव्हते, आता मिसळत आहेत. हे पराक्रमाचे फळ आहे, हे केवळ महान लोकांनाच शक्य होत असे नव्हे तर विपुल पराक्रमाने सामान्य लोकांनाही स्वर्गात आरोहण शक्य आहे. यासाठीच हे सांगीतले आहे. सर्व लहान व धोराली असा पराक्रम करावा. सीमेवरील लोकांनाही हे जाणून घ्यावे. असा पराक्रम चिरंतन व्हावा. यामुळे विकास वाढेल, विपुल वाढेल, अवरोधाविना दिवसेंदिवस वाढत राहिल. २५६ काळ दूर राहतांना ही घोषणा केली आहे. देवानंप्रिय असे सांगतात. माता—पित्यांशी आज्ञाधारक असावे, तसेच गुरुजनांशीही आज्ञाधारक असावे. प्राणिमात्रांशी दयाशील असावे, सत्य बोलावे, हे सध्दर्माचे गुण होत. असे शिष्यांनी आचार्याशी आचारावे. नातेवाईकांशी असेच आचारावे. पुर्वजांनीही असे सांगितले आहे. यामुळे दीर्घायुष्य लाभते म्हणून असे वागावे.

६. स्तंभावरील शिलालेख:

सम्राट अशोकाने प्रजेच्या हितासाठी व धर्मोपदेशासाठी आज्ञा ज्या दगडी स्तंभावर कोरलेल्या आहेत त्यांना अशोकस्तंभ असे म्हणतात. उपलब्ध स्तंभापैकी सर्वात लहान स्तंभ सहा मीटर उंचीचा असून, सर्वात उंच स्तंभ एकवीस मीटर उंचीचा आहे. सर्वात मोठया स्तंभाचे वनज पन्नास टन, व्यास ०.७६ मीटर आणि जिमनीखाली भाग ०.३७ चौरस मीटर आहे.

सर्व अशोकस्तंभामध्ये सारनाथ येथील स्तंभ सांस्कृतिक व कलात्मक दृष्ट्या महत्वाचा आहे. इ.स. १९०५ मध्ये कोरलेल्या उत्खननात याचे फक्त स्तंभशीर्षच सापडले. ते दोन मीटर उंचीचे असून सध्या ते सारनाथ येथील संग्रहालयात ठेवलेले आहेत. भारतीय प्रजासत्तकाने पहिल्या प्रजासत्ताकदिनी या स्तंभाचे शीर्ष राष्ट्रचिन्ह म्हणून स्वीकारले. या स्तभशीर्षावरील चार सिंह विशिष्ट मौर्यशैलीत कोरलेले असून त्याखालील चित्रमालेत हत्ती, घोडा, बैल, सिंह व चोविस आरे असलेले चक्र आहे. त्याखाली उलटे कमळ कोरलेले आहे. हे चक्र सत्यधर्माचे व शांततामय परिवर्तनाचे प्रतिक आहे, असे वर्णन भारतीय तत्वज्ञ डॉ. राधाकृष्णन यांनी केले आहे. अशोकाच्या उपलब्ध सात स्तंभापैकी टोपरा अंबाला जिल्हा व मीरत येथे आढळलेले स्तंभ दिल्लीत ठेवलेले आहेत.

७. ऐतिहासिक महत्व :

अशोकाचे शिलालेख हे अशोकाच्या कारिकर्दीच्या इतिहासाची अतिशस महत्वाची अशी साधने आहेत. गिरनार गुजरात येथे अशोकाचे १४ लेख आढळजे. ज्या ज्या ठिकाणी हे आलेख सापडले त्यावरुन मौर्य साम्राज्याच्या सीमा निश्चित करणे शक्य होतते. अशोकाच्या कारिकर्दीत झालेल्या किलंगच्या युध्दाची माहिती त्याच्यात किलंग आलेखातून मिळते. अशोकाच्या कारिकर्दीच्या कालानुक्रम निश्चित करण्यासाठी या आलेखांची मदत होते. अशोककाने बौध्द धर्माचा स्वीकार केल्याचा पुरावा यामधून मिळतो. बौध्द धर्माच्या प्रसारासाठी अशोकाने केलेल्या कामिगरीचे वर्णन यातून मिळते. बौध्द धर्माची दीक्षा घेतली असली तरी, अशोक कर्मठ नव्हता तसेच आपल्या प्रजाजनांवर बौध्द धर्म सक्तीने लादण्याचा अशोकाने कथीच प्रयन्त केला नसल्याचेही या आलेखांतून स्पष्ट होते. परदेशात बौध्द धर्म आणि भारतीय संस्कृतीचा प्रसार करण्यासाठी अशोकाने बौध्द धर्म आणि भारतीय संस्कृतीचा प्रसार करण्यासाठी अशोकाने बौध्द भिश्चूंना पाठवल्याचा लेखी पुरावा या शिलालेखांतून स्प्रिळती.

३.४ सम्राट अशोकाचे स्तंभलेख :

• स्तंभालेखाचे सात प्रकार :

१. पहिला प्रकार:

अशोकाचे स्तंभालेख दिल्ली तोपरा, दिल्ली मिरत, अलाहाबाद, लौडिया अराराज लौडीया नंदनगड व रामपूर्वा या ठिकाणी मिळून एकंदर सात आहेत. हे लेख नुसत्या अधिकाऱ्याकडून उद्देशून लिहिलेले नसून एकंदर प्रजेला उद्देशून आहेत व त्यांत राज्यशासनाची तत्वे, धर्माचरण, आत्मपरिक्षण, हिंसाचारासंबधाचे नियम, धर्मानुराग, धर्मप्रचारर्थ योजना इत्यादी भिन्नभिन्न विषय आलेले आहेत. हे सगळे महत्वाचे आहेत. त्यांपैकी पहिला लेख प्रास्ताविक आहे तो असा —

''देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा सांगतो की— राज्यभिषेकानंतर सव्वीस वर्षानी हा लेख लिहवीला. धर्माविषयी गाढ अनुराग, तीव्र आत्मपरीक्षण, कडक शुश्रूषा, मोठे भय आणि महान उत्साह यांच्यावाचुन इहलोक व परलोक संबंधाचे उद्दिष्ट आहे. पण माझ्या शिक्षणाने लोकांचा धर्माविषयी आदर व धर्मानुराग दुष्प्राप्य दिवसेंदिवस वाढत जाईल. माझे पुरुष अधिकारी, मग ते उच्च, मध्यम किंवा निच पदावर असोत माझ्या शिक्षवणीप्रमाणे कार्य करीत आहेत व असे वागत आहेत की चंचल बुध्दीचे लोकही धर्ममार्गाने चालतील. त्याचप्रमाणे अंतमहामात्र सीमेवरील अधिकारी यांचेही आचरण आहे. कारण असा नियम आहे की धर्मानुसार पालन करावे, धर्मानुसार वागावे, धर्मानुसार सुख दयावे आणि धर्मानुसार रक्षण करावे.''

या लेखांत 'चंचलबुध्दीचे' याला मुळांत 'चपल' असा पाली शब्द आहे. याचा अर्थ कित्येक पंडितांनी पापी किंवा दुराचरणी असा केला आहे.

२. दुसरा स्तंभलेख :

''देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा असे सांगतो की धर्म हा उत्तम आहे. पण धर्म म्हणजे काय? धर्म हाच की पापापासून दूरावे, पुष्कळ चांगली कृत्ये करावी, दया, दान, सत्य व शौच पावित्र यांचे पालन करावे. मी अनेक प्रकारे चक्षुदान केले आहे. द्विपाद,

चतुष्पाद, पक्षी व जलचर प्राण्यांवर मी अनेक प्रकारे कृपा केली आहे. इतकी की मी त्यांना प्राणदानहीं दिले आहे. आणखीही पुष्कळ चांगली कामे मी केली आहेत. हा लेख मी अशासाठी लिहविला आहे की लोकांनी या उदाहरणाप्रमाणे वागावे व ते चिरकाल राहावे. जो याप्रमाणे वागेल तो पुण्याकृत्य करील."

तिसरा स्तंभलेख:

''देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा असे सांगतो की मनुष्य आपल्या चांगल्या कृत्यांकडेच पाहतो आणि म्हणतो की मी हे चांगले काम केले. पण तो आपल्या पापकृत्यांकडे नाही आणि मी हे पाप केले, दोष केला असे म्हणत नाही. अशाप्रकारे मोक्षण फार कठीण आहे. तथापि माणसाने हे समजले पाहिजे की क्रूरता, रिती, राग, गवे व मत्सर ही सर्व पापांना कारण असतात. आणि त्यांने म्हटले की या गोष्टीमुळे माझे तन न होवो या गोष्टीकडे विशेष लक्ष दिले पाहिजे की या पहिल्या मार्गाने मला इहलोकी सुख लागेल व या दुसऱ्या मार्गाने मला परलोकाची प्राप्ति होईल. या लेखाचे विवेचन करण्याची आवश्यकता नाही इतका तो सुबोध आहे.

४. चौथा स्तंभलेख:

''देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा असे सांगता की राज्यभिषेकानंतर २६ वर्षानी मी वाखिवला. माझे रज्जुक नामक अधिकारी लाखो मनुष्यांवर नेमलेले आहे. त्यांनी निश्चतपणे व निर्भयतेने आपले कर्तव्य करावे, लोकांचे हित व सुख यांवर लक्ष ठेवावे आणि लोकांवर मेहरबानी करावी. म्हणून लोकांना इनामे किंवा शिक्षण अधिक देण्याचा अधिकार मी त्यांना दिला आहे. ते सुखदुखःची कारणे समजून घेण्याचा प्रयत्न करतील व धर्मयुक्त नामक हाताखालच्या अधिकाऱ्याच्या द्वारे लोकांना असा उपदेश करतील की त्याच्या योगाने लोक ऐहिक व पारलौकिक अशी दोन्ही प्रकारची न धर्म सुख प्राप्त करुन घेण्याचा प्रयत्न करतील. रज्जुक अधिकारी माझी आज्ञा पाळण्याची भरपूर खटपट करीत आहेत. व माझे अधिकारीही माझ्या इच्छेच्या व आहेच्या अनुराधाने काम करतील व तेही केव्हा केव्हा असा उपदेश करतील की तणेकरून रज्जुक मला प्रसन्न करण्याचा प्रयत्न करतील.

५. पाचवा स्तंभलेख:

''देवांचा प्रिय प्रियदर्शनी राजा असे सांगतो की राज्यभिषेकानंतर सळीस वर्षानी मी पुढील प्राण्यांचा वध करण्याला मनाई केली आहे. पोपट, मैना, अरुण, चकोर, हंस, नांदीमुख, गेलाट, जतुका, अंबाकपिलिका, दुडी, बिनहाडाची मासळी, वेदवेयक, गंगापुपुटक, संकुजमत्स्य, कासव, शल्य, पर्णशश, सांबरख सांड, वानर, गेंडा, श्वेतकपोत, ग्रामकपोत व इतर सर्व तन्हेचे चतुष्पाद प्राणी जे कोणत्याही उपयोगी पडत नाहीज व खाण्याच्याही उपयोगी नाही. गाभण किंवा दभती बकरी, मेंढी किंवा डुकरी व त्याचप्रमाणे त्यांची सहा महिन्यांतली पिलें मारु नयेत. कोंबडयला खच्ची करु नये व कोंबडयाबरोबर जिवंत प्राणी जाळू नयेत. अनर्थ करण्यासाठी किंवा प्राण्यांची हिंसा करण्यासाठी जंगलाला आग लावू नये. एक जीव मारुन दुसऱ्याला खाउ घालू नये. या चातुर्मास्याच्या तीन ऋतूच्या पौर्णिमा, पौष पौर्णिमा, चर्तुर्दशी अमावस्या व प्रतिपदा व त्याचप्रमाणे उपसाचे दिवस या वेळी मासे मारु नयेत व विकू नयेत. या सर्व दिवश हत्तींच्या वनांतून व तलावांतून कोणतीही दुसरे जातीचे प्राणी मारले जाउ नयेत.

या लेखाच्या शेवटच्या परिच्छेदावरुन अशोक आपज्या राज्यरोहणाच्या वाढदिवशी दरसाल उत्सव करीत असे व त्या उत्सावानिमित्त काही कैदयांची तुरुंगातून सुटकाही करीत असे दिसते.

६. सहावा स्तंभलेख:

''देवांचा प्रिय प्रियदर्शनी राजा असे सांगती की — राज्याभिषेनंतर बारा वर्षानी मी लोकांच्या हितार्थ व सुखार्थ धर्मलेचा लिहिवले. उद्देश हा की त्यांनी आपला पापाचा मार्ग सोडून कोणत्या ना कोणत्या प्रकारे धर्माचा उत्कर्ष करावा. याप्रमाणे मी लोकांच्या कल्याण्यासाठी व सुखासाठी झटते असता माझ्या नात्याचे लोक, दूरचे लोक व जवळचे लोक हे कशाप्रकारे सुखी होतील इकडेही माझे लक्ष असते. या उद्देशानुसार मी कामही करतोः अशा रितीने सगळया समाजाचे कल्याण व सुख यांच्याकडे माझे लक्ष असते. मी सर्व सांप्रदायांचाही निरिनराळया प्रकारे सत्कार केला आहे. तथापि

स्वत:च्या धर्माविषयी अनुराग ही माझ्या मते मुख्य बाब आहे. राज्यभिषेकानंतर २६ वर्षानंतर मी हा लेख लिहिवला आहे.

७. सातवा स्तंभलेख:

हा शेवटचा स्तंभलेख उपहाररूप आहे तो असा —

- १. देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा असे सांगतो पुष्कळ काळापूर्वी जे राजे होउन गेले त्यांची इच्छा होती की धर्मवृध्दी व्हावी पण त्यांच्या अपेक्षेप्रमाणे ती झाली नाही.
- २. यासाठी देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा असे सांगता की हा विचार माझ्या मनात आला आहे की पूर्वीच्या काही राजे लोक इच्छित होते की कोणत्याही प्रकारे योग्यरुपाने धर्मवृध्दी व्हावी, पण ती झाली नाही, तर मग आता लोकांची प्रवृत्ती तिकडे कशी करता येईल? योग्य रुपाने त्यांची धर्मवृध्दी कशी होईल? व कमीत कमी काही थोडया लोकांनी तरी मी धर्मपर कसा करु शकेन?
- 3. म्हणून देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा असे सांगतों की माझ्या मनांत असा विचार आला की लोकांना धर्म ऐकवावा व त्यांना धर्माचा उपदेश करावा म्हणजे लोक तो ऐकून त्याप्रमाणे आचरण करतील, उन्नती करतील व विशेष रुपाने धर्मवृध्दी करतील, या उद्देशाने त्यांच्याकडून धर्मश्रण करिवले गेले व निरिनराळया प्रकारे धर्मोपदेश करिवला गेला. माझे पुरुष अधिकारी ने पुष्कळशा लोकांचे वर नेमिले गेले आहेत ते माझ्या उपदेशाचा प्रचार करतील. लाखो माणसांवर जे 'रज्जुक' नावाचे अधिकारी नेमलेले आहेत. त्यांना आज्ञा देण्यांत आली आहे की त्यांना 'धर्मयुक्त' नावाच्या अधिकाऱ्यांना असा उपदेश करावा.
- ४. देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा असे सांगतो की याच उद्देशाने मी धर्मस्तंभ उभारले. धर्ममात्राची नेमणूक केली व धर्माची घोषणा केली.
- ५. देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा असे सांगतो की सडकांवरुन मनुष्य व पशु यांना छाया देण्यासाठी आंब्याची झाडे लाविली, अर्ध्या अर्ध्या कोसाच्या अंतरावर विहिरी खोदविल्या, धर्मशाळा बांधल्या व जागोजागी पशुंसाठी आणि माणसासांठी पाणपोया घातल्या. पण या सुखसोयी म्हणजे क्षुद्र गोष्टी होत.

• तराईचे दोन स्तंभलेख:

१. पहिला लेख (रुक्मिणीदीईचा) -

" देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा याने राज्यभिषेकानंतर वीस वर्षानी स्वतः येउन या स्थानाची पूजा केली. येथे शाक्युनि बुध्द यांचा जन्म झाला होता. म्हणून येथे दगडांचा एक तट बांधण्यांत आला व एक स्तंभिह उभारण्यात आला. येथे भगवान बुध्द यांचा जन्म झाला म्हणून लुम्मिनी गावावरचा कर उठविण्यात आला व उत्पन्नाचा अष्टमांशही जो राजाच्या हक्काचा होता तो त्या गावाला देण्यात आला.

या लेखांचा शोध इ.स. १८९६ मध्ये लागला. हा लेख नेपाळ राज्यजवळच्या तराई मुलखांत लुम्मिनिया गावाजवळ सापडला. या गावाला हल्ली सम्मिनिदाई असे नाव आहे. येथे रुम्मिणी देवीचे एक देउळ आहे. त्यावरुन हे नाव पडले असावे. या मंदिराच्या जवळच हा स्तंभ असल्यामुळे हीच बुध्दाची जन्मभूमि असे निश्चितपणे म्हणण्यास हरकत दिसत नाही. हा स्तंभ खि. पू. २४९ या वर्षी उभारला गेला असा तर्क आहे.

२. दुसरा लेख (निग्लीवचा स्तंभलेख) -

देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा याने राज्यभिषेकानंतर चौदा वर्षांनी कनकमुनि बुध्द यांच्या स्तूपाची दुसऱ्यांदा डागडुजी केली व राज्यभिषेकानंतर वीस वर्षानी स्वतः येउन पूजा केली व स्तंभा उभारला.''

या लेखांत कनकमुनि बुध्द यांच्या स्तूपाचा उल्लेख आहे. हा कनकमुनि कोण? व हा स्तूप कोठे आहे याचा अदयाप पत्ता लागलेला नाही. हा स्तूप हल्ली उपलब्ध नाही. पण अशोकाने त्याची दोनदा डागडुजी केली होतीअसे या लेखात म्हटले आहे. यावरुन अशोकाच्या पुष्क्रळ अगोदर कनकमुनि नावाचे कोणी अत्यंत पूज्य साधू होउन गेले असले पाहिजेत. आणि त्यांचे स्मारक म्हणून एक स्तूप कोण तरी बांधिला असला प्रहिजे यांत शंका नाही. दोन हजार वर्षापूर्वीच तो जीर्ण झालेला होता. यावरुन आज तो नामशेष झाला याचे कोणालाही नवल वाटणार नाही.

लघु स्तंभालेख —

१. सारनाथचा स्तंभलेख -

''देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा असे सांगतो कि पाटलीपुत्र येथ व प्रांतात कोणी संघांत फुट पाडू नये. भिक्षु असो किंवा भिक्षुणी असो मिती जो कोणी फुट पाडील त्यांना पांढरे वस्त्र वापरण्यास देउन भिक्षु व भिक्षुणी यांना उचित नाही अशा स्थानी ठेवण्यात येईल. त्याचप्रमाणे ही आमची आज्ञा भिक्षुसंघ व भिक्षुणीसंघ यांना कळविण्यात यावी. देवांचा प्रिय असे सांगतो की या प्रकारचा एक लेख तुम्हा लोकांकडे पाठविण्यात आला आहे. त्याचे तुम्ही स्मरण राखावे. असाच एक लेख तुम्ही उपासकांनाही दयावा म्हणजे ते उपासाच्या दिवशी येउन या आज्ञेचे मर्म समज्ञतील.

या लेखाच्या शेवटच्या वाक्याच्या भाषांतरांत कोट व प्रांत असे दोन शब्द आले आहे. मूळ पाली लेखात 'कोट विसवेसु' असा शब्द आहे. 'विसवेसु' यांचे संस्कृतांत 'विसवेषु' असे रूप होते. पण कोट व विषय यांच्यात काय भेद आहे? कोट म्हणजे किल्ला. हा सेनापतीच्या ताब्यात असे, व विषय म्हणजे प्रांत हे मुलकी अधिकाऱ्यांच्या ताब्यांत असत. हा त्यांच्यातला भेद समजावा.

कौशांबीचा स्तंभलेख:

देवांचा प्रिय प्रियदर्शी कौशांबीच्या महामात्रांना अशी आज्ञा देतो की संघाच्या नियमाचे उल्लघंन होउ नये जो संघात फुट पाडील त्याला पांढरी वस्त्रे वापरण्यास देउन भिक्षु व भिक्षुणी यांच्या राहण्याच्या स्थानापासुन घालवुन दिले जाईल.

२. सांचीचा स्तंभलेख:

भिक्षु व भिक्षुणी दोहोसाठी संघाचा मार्ग सिवता गेला आहे... जो कोणी भिक्षु किंवा भिक्षुणी संघात फुट पाडील, त्याला भिक्षु व भिक्षुणी यांनी राहण्यास उचित नाही अशा ठिकाणी घालवून देण्यांत येईल. संघाचा मार्ग चिरस्थायी राहावा अशी माझी इच्छा आहे.

३.५. सम्राट अशोकाचे चौदा गिरीलेख (आदेश):

अशोकाच्या सर्व लेखात त्याच्या चौदा गिरीलेखाचे विशेष महत्व आहे. हे चौदा गिरीलेख गिरनार, कलसी, धौली, जौगड, शहाबाजगढी, मनासेरा इत्यादी निरिनराळया ठिकाणी विखुरलेले आहेत.

१. पहिला गिरीलेख:

"हा धर्म लेख देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा यांने लिहिवला आहे. येथे या राज्यात कोणत्याही जीवाला मारुन त्याचा बळी देण्यात येवू नये. अथवा समाज भरवू नये. कारण देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजाला समाजात काही दोष दिसतात. तथापि काही विविध प्रकारचे समाज हिताबह आहेत. असे प्रियदर्शी राजाला वाटते. पूर्वी देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजाच्या पाक शाळेत हजारो प्राण्यांची हत्या होत असे.

२. दुसरा गिरीलेख:

देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा याच्या राज्यात तसेच सर्वत्र व त्याचप्रमाणे त्याच्या शेजारचया राज्यात म्हणजे चोल, पांडया, सत्यपुत्र, केरळपुत्र, ताम्रपर्णी या आणि यवनचा राजा आन्तीयोक व त्याच्या शेजारी असलेल्या इतर राजांचा राज्यात मी देवाचा प्रिय प्रियदर्शी राजाने मनुष्याची चिकित्सा व प्राण्यांची चिकित्सा अशा दोन्ही प्रकारच्या चिकित्सा ची व्यवस्था केली आहे. मनुष्य व जनावरास उपयोगी पडतील अशा औषधी वनस्पती जेथे होत नाहीत तेथे बाहेरुन आणून लाविली आहेत. रस्त्याने मनुष्य व पशु यांच्या विश्रांतीसाठी झाडे लाविली आहे व विहिरी खोदल्या आहेत.

''या लेख वरुन आपल्याला सम्राट अशोकाच्या साम्राज्याची कल्पना करता येते. चोल, पांडया, सत्यापुत्र, केरळपुत्र, ताम्रपर्णी व यवन राजा अन्तोयोक हया राजांच्या राजावरुन मगध साम्राज्याच्या सीमा लक्षात येतात. मानवाच्या व पशुंच्या आरोग्यसाठी सम्राट अशोकाने चिकित्साची व्यवस्था केली हे या लेखावरुन समजते ती फक्त आपल्या ग्रज्यातच नव्हे तर इतर राज्यात हीकेली आहे. याचबरोबर त्याच्या उपचाग्रसाठी लागणाच्या औषधी वनस्पती ही लाविल्या आहेत. ज्या वनस्पती तेथे नव्हत्या त्या बाहेरुन त्या बाहेरुन आणून त्या ठिकाणी लाविल्या आहेत.

३. तिसरा गिरीलेख:

''देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा साचे असे म्हणणे आहे— राज्यभिषेकानंतर बाराव्या वर्षी मी आज्ञा केली आहे कि युक्त, राजूक व प्रादेशिक या अधिकाऱ्यानी दर पाच पाच वर्षानी धर्मनुशासणासाठी व त्याचप्रमाणे इतर कामासाठी दौरा करावा व प्रजेला पुढीलप्रमाणे शिकवण यावी मातापित्यांची सेवा करणे प्रशंसनीय आहे.

या लेखात सम्राट अशोक ने असे म्हटले आहे कि राज्यभिषेकानंतर बाराव्या वर्षी त्यांनी राज्यातील अधिकाऱ्यांना आज्ञा केली आहे कि, दर पाच वर्षांनी त्यांना राज्याच्या दौरा करावा, त्यांनी जनतेच्या समस्या जाणून घ्याव्या व त्यांना धर्मानुशासनुमची शिकवण यावी.

४. चौथा गिरीलेख:

आज कित्येक वर्ष प्राणी हत्या अधिकाअधिक वाढत आली आहत. आप्तेष्ट व श्रमाण्न यांच्याशी होणारे लोकांचे वर्तन अधिकाधिक गैर होत गेले आहे. पण आता देवांना प्रिय प्रियदर्शी राजाच्या धर्माचरणामुळे पूर्वीच्या काळी लोकांना ग्वाही देण्यासाठी वाजविल्या जाणाऱ्या दुदंभी आता लोकांने विमाने, हत्ती, दिव्या कान्तीचे देव इत्यांदीचे देवी देखावे पाहण्यासाठी जमते म्हणून वाजविले जात आहे. देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजाने दिलेल्या या धर्मशिक्षणाचा परिणाम असा झाला कि श्रमान, आप्तेष्ट हयांच्याशी होणारे लोकांचे वर्तन आता सुधारले आहे. माता पित्याची व वृध्दांची सेवा लोक अधिकाधिक करु लागले आहेत.

५. पाचवा गिरीलेख:

देवांचा प्रियदर्शी राजा असे सांगतो कि चांगले कृत्य करणे कठीण असते जर कोणी सकृत्य करीत असेल तर तो कठीण काम करतो. मी पुष्कळ सकृत्ये केली आहेत. यासाठी मुलगे, नातू, पणतू व त्याच्या पुढे जी संतती होईल. ते कल्पतापर्यत तसेच करीत राहील. पण पुण्यकृत्य करीतील पण जे कोणी या कर्तव्यात थोडेसेही चुकतील ते ते पाप करतील कारण पाप करणे सोपे आहे. पुष्कळ दिवसापर्यत धर्म

मंत्रांची नेमणूक झाली नव्हती. पण मी माइसा १३ वर्षानंतर राज्यभिषेकाच्या ते नेमिले आहे.

या आदेशाच्या आरंभी अशोक ने स्वतः पुष्कळ साकृत्ये केली असल्या विषयीचा उल्लेख आहे. ती अशी धर्म प्रचाराक राज्यात पाठिवणे, धर्माचा प्रसार करणे, रस्त्याच्या बाजून छायेसाठी झाडे लावणे, अन्नदान करणे, मातापिता वृध्द माणसे फार फार तर नोकरदास लोक यांनीही आदराने वागविण्याचा व अहिंसेचा धर्म पाळण्याचा उपदेश करणे. काही लेखात लोकांची नावे आली आहेत. यवन म्हणजे ग्रीक लोक हे लोक युराप खंडातल्या ग्रीस देशातले येथे उद्दिष्टे नाहीत अशोकाच्या राज्यात सिमेबाहेर जवळ काही मुलुख ग्रीक राजाच्या प्रभुत्व खाली होते. तेथचे हे ग्रीक समज्ञायचे.

६. सहावा गिरीलेख:

देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा असे सांगतो कि फार दिवसापासून राज्यकारभाराची कामे वेळवर होत नाहीत. या साठी मी अशी व्यवस्था केली आहे की केव्हा ही मग मी त्यावेळी खट पीत असलो. अंतपुरात असलो, शयागुहात असलो, प्रवासाता असलो, बागेत असलो तरी सर्व ठिकाणी हेरांनी येउन मला खबर सांगावी. मी प्रजेचे काम सर्व ठिकणी करीत राहीन. अमके दान मी दिल आहे किंवा अमुक काम मी केले जावे असे मी स्वत: जरी सागितलं असले तरी किंवा महामात्रांना एखादा जरी हुकूम दिला असला तरी आणि त्यावर काही वाद उपस्थित झाला.

या लेखात शयागृह म्हणजे एकांतातली जागा किंवा ध्यानस्थ बसण्याची जागा असावी या लेखात लोकांच्या हिताला श्रेष्ठ कार्य व महत्व देण्यात आले आहे.

७. सातवा गिरीलेख:

देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा असे सांगतो कि सर्व संप्रदायच्या लोकांनी एकत्र राहावे. क्रारण सर्व संप्रदायातल्या लोकांना संयम व चितशुध्दी पाहिजे आहे. पण भिन्न भिन्न माणसाची इच्छा व आवड भिन्न भिन्न असते. पण ते धर्माचे पालन पूर्णशाने करतील किंवा जो पुष्कळ दान करु शकत नाही त्याला ही संयम, चितशुध्दी, कृतज्ञता व दृढ भक्ती यांची अत्यंत आवश्यकता असतेच.

यावरील लेखात अशोकाचा सर्व संप्रदाय प्रती आदर दिसून येतो. त्याने वेगवेगळया संप्रदायाची खरी शिकवण ओळखले होते. संयम व चित्तशुध्दी असावी असे सारे संप्रदाय सांगतात. मनशुध्दी नसेल तर कोणती ही धर्म श्रध्दा कितीही मोठी असेल तर ती कवडीमोल ठरते असे या लेखात म्हटले आहे.

८. आठवा गिरीलेख:

फार दिवसापूर्वी राजे लॉक यात्रेसाठी निघत असत या यात्रेत शिकार तसेच दुसरे मौजेचे खेळ होत असत. देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा हयाने राज्यभिषेकांनंतर १० व्या वर्षी बोधीवृक्षाची यात्रा केली. तेव्हापासून या धर्मयात्रा सुरु झाल्या या धर्म यात्रेत पृढील गोष्टी घडतात. श्रमान यांना देणग्या, वृध्दाचे दर्शन व त्यांना दान आणि जनतेच्या भेटीगाटी घेउन त्यांना धर्मबाबत शिकवण देउन त्यांची विचारपूस केली जाते. देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा याचे महाभाग्य आहे कि हयाला धर्मयात्रेपासून आनंद मिळतो. या लेखात धर्म यात्रेचा उद्देश सांगिजला आहे. त्यात घडणाऱ्या गोष्टी व धर्म यात्रेची सुरुवात कशी झाली याची माहिती मिळते.

९. नवना गिरीलेख:

देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा असे सांगतो विष्पतीकाळी पुत्राच्या विवाह समय कन्येच्या विवाह समयी, मूल जन्मोत्सवावेळी, प्रवासा प्रसंगी व अशाच दुसऱ्या प्रसंगह स्त्रिया अनेक प्रकारची मंगल कृत्य करीत असतात. मंगल कृत्ये आवश्यक केली पाहिजेत पण अशा प्रकारची कृत्ये अल्प फलदायी असतात. धर्माची मंगल कृत्ये महात्फल देणारी आहेत. यात दास व सेवक यांच्याशी उचित व्यवहार गुरुजनांविषयी आहर, प्राण्यांविषयी आहिंसा व श्रमण यांना दान ही सर्व कृत्ये करावी.

या लेखाचा विषय मंगल कृत्ये म्हणजे आनंदोत्सव होय. आंनदोत्सव अवश्य साजरा केला पाहिजे पण अशे आंनदोत्सव अल्प प्रमाणातच फलदायी असता व जी धर्माची चांगली कामे केली जातात ती अधिक प्रमाणात पुण्य देणारी असतात. कशी कार्य केल्यास हया लोकी व परलोकी ही पुण्य लाभते.

१०. दहावा गिरीलेख:

देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा याला यश किंवा कीर्ती यांत काही विशेष आहे असे वाटत नाही. यश आणि किर्ती यांची तो इच्छा करतो तो एवढयासाठीच कि वर्तमानकाळात व पुढे प्रजेने धर्मांची सेवा करावी व धर्मांच्या व्रताचे पालन करावे केवळ यासाठी देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा यश व किर्ती हयांची इच्छा करता. तो जी काही खटपट करतो ती परलोकासाठी. सर्व लोक विपत्तीपासून मुक्त व्हावे, पाप हींच एक विपत्ती आहे. सर्वांचा परित्यांग केल्यावाचून मोठे परिश्रम न करता. लहान असो कि मोठा असो कोणालाही पुण्य जोडता येत नाही. मोठया लोकांना सुध्दा दुष्कर आहे.

११. अकरावा गिरीलेख:

देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा असे सांगतो कि धर्माच्या दानासारखे दुसरे कोणतेही दान नाही. धर्माच्या मैत्री सारखी दुसरी कोणती मैत्री नाही. धर्माच्या उदारतेसारखी दुसरी उदारता नाही. धर्माचे संबंधासारखा दुसरा संबध नाही. धर्म म्हणजे हा कि दाव व सेवक यांच्याशी उचित वागणूक ठेवावी माता—पित्यांची सेवा करावी, मित्र, परिचयाचे, नातेवाईक यांच्याशी आदराने वागावे. श्रमान यांना दान दयावे व प्राण्यांची हिंसा करु नये.

या लेखांत सम्राट अशोकाने धर्मदान या बद्दल सांगितले आहेत. धर्म दान कोणते व कसे करावे याबद्दल माहिती मिळते.

१२. बारावा गिरीलेख:

देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा सर्व संप्रदायचा आदर सत्कार करत असून तो सर्व संप्रदायाचा आदर सत्कार करतो व दान देतो. सर्व पंथातील लोकांची वृध्दी या गोष्टीची त्याला जितकी किमत वाटते तितकी दान किंवा पूजा याची वाटत नाही. संप्रदायाच्या तत्वांची वृध्दी अनेक प्रकारांनी होते. पण तिच्या मुळाशी वाकसंयम हा आहे. अर्थात माणसाने केवळ स्वतःच्या संप्रदायाचा आदर व दुसऱ्या संप्रदासाचा निष्कारण निंदा करु नये, केवळ विशेष कारणांसाठीच निंदा केली पाहिजे. कारण सर्व संप्रदायाचा आदर करणे माणसाचे कर्तव्य आहे. असे केल्याने स्वतःच्या संप्रदायाची उन्नती व दुसऱ्या संप्रदायाचे हित होते.

या लेखाचा विषय निरिनराळया संप्रदायाच्या लोकांनी परस्परांशी कसे मित्रत्वाने वागावे ते सांगणे आहे. अशोकाच्या काळात अनेक संप्रदाय होते व त्यांचे आपापसात अनेक मतभेद होते. एवढेच नव्हे तर या संप्रदायमध्ये आपापसात कलह होत असावे असे दिसते. हा कलह कमी करण्यासाठी अशोकाने येथे प्रयत्न केल्याचे दिसते.

१३. तेरावा गिरीलेख:

राज्यभिषेकानंतरच्या आठ वर्षानी देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा अशोक याने किलंग देश जिंकला, त्यात दीड लक्ष लोक कैद करण्यात आले, एक लाख लोक मारणयात आले व त्याच्या कितपत माणसे मृत्युमुखी पडली. हा किलंग विजय झाल्यावर देवाचा राजा प्रियदर्शी कडून धर्मपालन, धर्मकार्य व धर्मअनुशासन चांगल्याप्रकारे झाले आहे. किलंग विजयानंतर देवांच्या प्रिय राजाला पश्चाताप झाला आहे. कारण एखादा देश काबीज करण्यात येतो. तेव्हा तेथे ती हत्या केली जाते आणि किती माणसे कैद केली जातात. त्याची गणती करता येत नाही.

वरील लेखात किलंग देश जिंकल्याचा उल्लेख आहे. हा किलंग देश बंगालच्या उपसागर लगतच्या महानदी व गोदावरी या मधला प्रदेश होय. हा प्रांत सम्राट अशोकच्या राज्यात सहहदीवर होता व त्याच्या बाजूस गांधार व कंबोज होते. सम्राट अशोक ने धर्मविजय सगळया जगात धर्माचा विजय करुन मिळवावा असे शेवटी आपल्या पुत्र पौत्रांना सांगितले आहे.

१४. चौदावा गिरीलेख:

हा लेख देवांचा प्रिय प्रियदर्शी राजा हयाने लिविला आहे. याचा काही भाग संक्षेपरुपात, काही मध्यम स्वरुपात व काही विस्तृत स्वरुपात आहे. प्रत्येक जागी सर्व लिहिवले गेले नाही. माझे राज्य फार विस्तृत आहे.

अशोकाने शिलालेख स्तंभ अस्तित्वात असलेल्या जागा, अशोकाने भारतीय इतिहासातील सर्वात महत्वाचा ऐतिहासिक वासरा दिला म्हणजे त्याने त्याच्या राज्यात सर्वत्र लिहिलेले शिलालेख. अशोक अगोदरच्या व नंतरच्या भारतीय राजांच्या फारश्या नोंदी आढळत नाहीत त्यामुळे तत्कालीन ऐतिहासिक मिळवणे जिकरीचे होते. अशोकाने आपल्या राज्याच्या सीमेवर महत्वाच्या शहरांमध्ये शिलालेखांद्वारे आपले विचार प्रकट केले आहेत. पुरातत्वशास्त्रज्ञांनुसार आजवर सापडलेल्या शिलालेखांपेक्षा अजून जास्त संख्येने अशोकाने शिलालेख बांधले असावेत व ते काळाच्या ओघात लुप्त झालेख अजुनही उत्खनुनॉमध्ये स्तंभ व शिलालेख सापडण्याची शक्यता आहे. वर नमूद केल्याप्रमुखें अशोकासंदर्भात बरीचशी माहिती शिलालेखांवरुन व स्तंभावरुन आलेली आहें. अशोकाला मुख्यत्वे ''देवानांपिय पियदसी''पालीमध्ये अथवा संस्कृतमध्ये प्रियदर्शी असा उल्लेख केला आहे. त्याचा अर्थ ''देवांचा प्रिय व चांगले दाखविणारा'' असा होतो. त्याच्या सर्व लेखांमध्ये त्याची महानता जाणवते, अशोकाने हे सर्व शिलालेख आपल्या साम्राज्यातील मार्गावर मुख्य चौकांमध्ये स्थापित केले होते, अशोक आपल्या प्रजेला आपली मुले असे संबोधत असे व अहिंसेबदुदल व बौध्द धर्माच्या तत्वांवर धम्म व योग्य आचरणावर त्याचा भर असे. अशोकाच्या लेखांमध्ये त्याच्या स्तूपावर अनेक सुमने आहेत. ते अशोकाने मिळवलेल्या प्रदेशाची माहिती देतात. तसेच त्यांत शेजारच्या राज्या बद्दलची माहितीही आ सारनाथ येथील अशोक स्तंभ हा अशोकाचा सर्वात प्रसिध्द स्तंभ मानला जातो. हा वालुश्माचा बनला असून अशोकाने सारनाथला भेट दिल्याची त्यावर नोंद आहे. त्याच्या चारही बाजुने एकमेकांकडे पाठ केलेले सिंह आहेत. हा स्तंभ आता भारताचे राष्ट्रीय चिन्ह म्हणून वापरात आहे. इतिहासकारांसाठी व शास्त्रज्ञांसाठी अशोक कालीन चिन्हे, लेख, स्तंभांचाा हा खूप महत्वपूर्ण ठेवा आहे. तो मौर्य साम्राज्यबद्दल अनेक गोष्टी उध्द्रत करतो. अशोकाच्या चिन्हांवरुन त्याला भाव पिढयांनी त्याच्याबद्दल काय विचार कर्रावा, त्याला कोणत्या गुणांसाठी त्याला लक्षात ठेवावे यामागची त्याची तळमळ लक्षात येते, अशोक खऱ्या आयुष्यात असाच होता का? यावर दुजोरा देणारी माहिती अजून उपलब्ध नाही.

३.८ संदर्भसूची

- १. आपटे वा.गो. अशोक चरित्र, समन्वय प्रकाशन, शाहुरी, कोल्हापूर.
- २.डॉ. कोलारकर श.गो. प्राचीन भारताचा इतिहास राजकीय, सामाजिक व सांस्कृतिक श्री. मंगेश प्रकाशन, नवी रामदास पेठ, नागपूर.
- ३. प्रा.लोखंडे राजेंद्रसिंग, प्रा. कोडलकर अशोक, प्रा. मस्के एम.एम प्राचीन भारताचा इतिहास व संस्कृती, अक्षरलेण प्रकाशन, जुनी मिल कम्पांउंड, सोलापूर.
- ४. प्रा. गायधनी रं.ना.प्रा. राहूरकर कै. व.ग. प्राचीन भारताचा सांस्कृतिक इतिहास कॉनटिनेंटल प्रकाशन, विजयनगर, पुणे.
- ५. डॉ. कोलारकर श.गो. भारताचा इतिहास प्राचीन व मध्ययुगीन, श्री मंगेश प्रकाशन, नवी रामदास पेठ, नागपूर.
- ६. प्रा. लहाडे नंदा, प्रा. देशपांडे अरुण, प्रा. भोसले लक्ष्मण, संदर्भ भारत, चेतक बुक्स, सदाशिव पेठ, पुणे.
- ७. प्रा. भिडे जी.एल., प्राचीन भारत, फडके प्रकाशन, फडके भवन दुधाळी, कोल्ह्रापूर, १९९६.
- ८. हरीभक्त गुंडोपंत, अशोक आणि त्याचे लेख, प्र.गो.म. नवाथे, ओवपडन रोड, मुंबई, १९५३.

अशोक स्वाभाविक शूर महापराक्रमी, मुत्सद्दी व ज्ञानी होता. म्हणूनच आपल्या साम्राज्याचा अफाट विस्तार त्याने घडवून आणला. सज्ज प्रशासनाद्वारे अफाट साम्राज्यात शांतता सुबत्ता निर्माण केली होती.

किंग झालेल्या पश्चातापाने त्याचे मन विचिलित झाले. त्याने युध्द त्याग करुन लोकांना सुखी व समाधानी कसे ठेवावे. हया गोष्टीवर लक्ष दिले. सम्राट अशोकाने बौध्द धर्माची स्वीकार केला. त्यातील अहिंसा तत्वाचे पालन करुन त्या तत्वांचा प्रसार व प्रचार करण्याचे योजिले किंवा ठरविले. सम्राट अशोकाने बौध्द धर्म स्वीकार केल्यानंतर त्यांनी काही धर्मयात्रा केल्या. लोकांना युध्दाने न जिंकता प्रेमाने व अहिंसा स्वात्वाने विजय मिळवावा हे धोरण अवलंबले.

अशोकाने शिलालेख स्तंभ अस्तित्वात असलेल्या जागा, अशोकाने भारतीय इतिहासातील सर्वात महत्वाचा ऐतिहासिक वासरा दिला म्हणजे त्याने त्याच्या राज्यात सर्वत्र लिहिलेले शिलालेख. अशोक अगोदरच्या व नंतरच्या भारतीय राजांच्या फारश्या नोंदी आढळत नाहीत त्यामुळे तत्कालीन ऐतिहासिक मिळवणे जिकरीचे होते. अशोकाने आपल्या राज्याच्या सीमेवर महत्वाच्या शहरांमध्ये शिलालेखांद्वारे आपले विचार प्रकट केले आहेत. पुरातत्वशास्त्रज्ञांनुसार आजवर सापडलेल्या शिलालेखांपेक्षा अजून जास्त संख्येने अशोकाने शिलालेख बांधले असावेत व ते काळाच्या ओघात लुप्त झालेख अजुनही उत्खननांमध्ये स्तंभ व शिलालेख सापडण्याची शक्यता आहे. वर नमूद केल्याप्रमाणे अशोकासंदर्भात बरीचशी माहिती शिलालेखांवरुन व स्तंभावरुन आलेली आहे.

५.संदर्भसूची

- १. आपटे वा.गो. अशोक चरित्र, समन्वय प्रकाशन, शाहुरी, कोल्हापूर.
- २. डॉ. कोलारकर श.गो. प्राचीन भारताचा इतिहास राजकीय, सामाजिक व सांस्कृतिक श्री. मंगेश प्रकाशन, नवी रामदास पेठ, नागपूर.
- भारताचा इतिहास व संस्कृती, अक्षरलेण प्रकाशन, जुनी मिल कम्पांउंड, सोलापूर.
- ४. प्रा. गायधनी रं.ना.प्रा. राहूरकर कै. व.ग. प्राचीन भारताचा सांस्कृतिक इतिहास कॉनटिनेंटल प्रकाशन, विजयनगर, पुणे.
- ५. प्रा. लहाडे नंदा, प्रा. देशपांडे अरुण, प्रा. भोसले लक्ष्मण, संदर्भ भारत, चेतक बुक्स, सदाशिव पेठ, पुणे.
- ६. प्रा. भिडे जी.एल., प्राचीन भारत, फडके प्रकाशन, फडके भवन दुधाळी, कोल्हापूर, १९९६.
- ७. हरीभक्त गुंडोपंत, अशोक आणि त्याचे लेख, प्र.गो.म. नवाथे, ओवपडन रोड, मुंबई, १९५३.
- ८. प्रा.लहाडे, नंदा, प्रा. देशपांडे अरुण, प्रा. भोसले लक्ष्मण, संदर्भ भारत, चैलस बुक्स, सदाशिव पेठ, पुणे.
- ९. हरिभक्त गुंडोपंत, अशोक आणि त्याचे लेख, प्र.गो.म.नवाथे, ओवनडन रोड, मुंबई १९५३.
- १०. प्रा.लोखंडे राजेंद्रसिंग, प्रा.कोडलकर अशोक, प्रा. मस्के एम. एम. प्राचीन भारताचा इतिहास व संस्कृती, अक्षरलेण प्रकाशन जुनी मिन कम्पाउंड, सोलापूर.
- ११. प्रा. गायधन रं.ना.प्रा.राहुरकर कै. व. ग. प्राचीन भारताचा सांस्कृतिक इतिहास कॉनटीनेंटल प्रकाशन, विजयनगर पुणे
- १२. वासुदेव गोविंद आपटे (बी ए आर्यावर्तीतला पहिला चक्रवर्ती राजा)



सोनोपंत दांडेकर कला,वा श्री.आपटे वाणिज्य

आणि

एम.एच. मेहता विज्ञान महाविद्यालय

पालघर - ४०१४०४

एम.ए. इतिहास. भाग - II, सत्र - IV

शैक्षणिक वर्ष - २०२२- २०२३

विषय:- आदिवासी लोकसंस्कृतीचा अभ्यास

संशोधक

खुताडे पिंट्या रमेश

मार्गदर्शक

प्रा.रामदास येडे सर

इतिहास विभाग

प्रबंध

विषय:- आदिवासी लोकसंस्कृतीचा अभ्यास संशोधक

खुताडे पिंट्या रमेश

प्रा.रामदास येडे सर यांच्या मार्गदर्शनाखाली एम.ए.इतिहास भाग- II, सत्र - IV सोनोपंत दांडेकर कला वा.श्री आपटे वाणिज्य एम.एच . मेहता विज्ञान महाविद्यालय, पालघर - ४०१४०४

शैक्षणिक वर्ष - २०२२ - २०२३

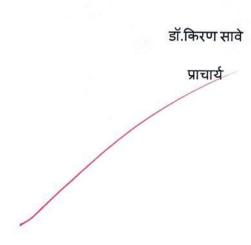
प्रमाणपत्र

प्रमाणित करण्यात येते की,

एम.ए.इतिहास भाग - २ सत्र - ४ या अभ्यासक्रमाचा भाग म्हणून खुताडे पिंट्या रमेश हजेरी क्र ५६०१० याने सन - २०२२ - २०२३ या शैक्षणिक वर्षात प्रबंधाचे नाव - (आदिवासी लोकसंस्कृती) या विषयावर संशोधन कार्य समाधानकारक पणे केलेले आहे . त्यासाठी त्याने अनिवार्य असलेले वैयक्तिकमार्गदर्शन हि घेतलेले आहे.या संशोधन कार्यात घेतलेल्या संदर्भ साहित्याचा निदर्श या अहवालात केलेला आहे.

मार्गदर्शक

प्रा.रामदास येडे सर



प्रतिज्ञापत्र

मी खुताडे पिंट्या रमेश सादर करतो की सोनोपंत दांडेकर कला, वा श्री. आपटे वाणिज्य आणि एम.एच.मेहता विज्ञान महाविद्यालय पालघर यांनी आयोजित केलेल्या एम.ए. इतिहास भाग – II सत्र – IV या अभ्या- सक्रमासाठी प्रस्तुत कार्यवाही मी स्वतः केलेली आहे. असे प्रतिज्ञा पूर्वक घोषित करतो.

संशोधकाची सही

पिंट्या रमेश खुताडे

विशेष आभार / ऋणनिर्देश

एम.ए.इतिहास विभाग - ॥ सत्र- IV या अभ्यासक्रमाचा भाग म्हणून या संशोधन प्रबंध सोनोपंत दांडेकर कला वा . श्री.आपटे वाणिज्य आणि एम.एच.मेहता विज्ञान महाविद्यालय सादर करताना मला अनेक व्याक्तीचे सहकार्य लाभले सर्वप्रथम या प्रबंध लेखनाच्या एकंदरीत प्रक्रियेत मला वेळोवेळी आपले अनमोल मार्गदर्शन व सहकार्य लाभले त्यासाठी मी इतिहास विभाग प्रमुख प्रा.रामदास येडे सर यांचे आभार मानतो.

संशोधनासाठी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्षरीत्या माझे मित्र मैत्रिणींनी महाविद्यालयातील वाचनालयातील कर्मचारी वर्ग आपण सर्वांनी मला खूप मोलाची मदत केली त्याबद्दल मी आपला ऋणी आहे.आपण केलेल्या सहकार्यामुळे हा प्रबंध पुर्ण होवू शकला त्यासाठी सर्वांचा मी आभारी आहे.

(संशोधक)

पिंट्या रमेश खुताडे.

अनुक्रमाणिका

| अ.क्र. | घटकाचे नाव. | पृष्ठ क्र |
|--------|---|-----------|
| 1) | प्रमाणपत्र | 4 |
| 2) | प्रतिज्ञापत्र. | 5 |
| 3) | विशेष आभार. | 6 |
| 4) | अनुक्रमणिका. | न ते थ |
| 5) | प्रकरण - १)"आदिवासी " | व ते 15 |
| | १.१ प्रस्तावना. | |
| | १.२ आदिवासी. | |
| | १.३ आदिवासी व्याख्या. | 7.5 |
| | १.४ जाती- जमाती. | |
| | १.५ भारतातील आदिवासी. | |
| | १.६ महाराष्ट्रातील आदिवासी. | |
| | संदर्भ. | |
| ξ) | प्रकरण - २) "आदिवासी वस्ती घरे कुटूंब वाद्ये" | 1 नते 2 5 |
| | २.१ वस्तीस्थान. | |
| | २.२ आदिवासींची घरे. | |
| | २.३ कुटुंब. | |
| | २.४ वाद्ये. | |
| | २.५ संदर्भ. | |

| b) | प्रकरण - 3) "आदिवासी विवाह पध्दती - जीवन पध्दती " | 25ते व |
|------------|--|------------|
| | ३.१ विवाह संस्थेचे महत्व . | |
| | ३.२ आदिवासी विवाहाचे स्वरूप. | |
| | ३.३ आदिवासी जमाती वधू संपादन. | n o |
| | ३.४ पहिला पाळणा . | |
| | ३.५ आदिवासींचे उत्तर कार्य . | * |
| | संदर्भ. | F |
| () | प्रकरण – ४) " आदिवासी जमाती धर्म, देव- देवता, सण-उत्सव " . | 8ै ते : न् |
| | ४.१ प्रस्तावना . | |
| | ४.२ धर्म श्रध्देचे प्रकार . | |
| | ४.३ देव - देवता . | |
| | ४.४ सण - उत्सव . | |
| | ४.५ आदिवासींच्या कला . | |
| | संदर्भ. | |
| ۹) | सारांश. | 29 |
| | संदर्भ सुची. | |

आदिवासी लोकसंस्कृतीचा अभ्यास

प्रकरण - 1

" आदिवासी."

1.1 प्रस्तावना:-

परमेश्वराने पृथ्वीतलावर निर्माण केलेल्या जिवसृष्टीत उत्क्रांतीने माणवसृष्टीची निर्मीती झाली. पृथ्वीतलावर भ्रमंती करनारा आदि मानव, कोठे ना कोठे स्थिर होवू लागला. स्वतः च्या जिवन निर्वाहाची साधने शोधली.त्याच्या जिवनाला स्थैर्य प्राप्त होवू लागले.जिवनाला, जगण्याला, स्वतः ला स्थैर्य प्राप्त होण्यासाठी, स्वसंरक्षणासाठी त्या आदि मानवाने डोंगर दऱ्या,गुहा,कपारी, झाडांच्या मोठमोठ्या खोबणी, नद्या-नाल्यांच्या काठी वस्ती केली.नागर, ग्रामीण जिवनापासून स्वतः ला दुर राखणाऱ्या मानव समुहाची एक स्वतंत्र ' आदिम जमात' निर्माण झाली.वन्यजिवनातील जगण्याच्या जिवन प्रणालीला आजही मानव चिटकून असुन.ते आजही वन्यजीवन जगत आहेत

पूर्वीपार पारंपारिक 'आदिम' जिवन थोड्या फार फरकाने वन्यजीवन जगणारे समुह, जमाती आजही वन्यजीवन जगत आहेत.जगातील बहुसंख्य देशांमध्ये आदिवासी जमाती आजही आहेत.आशिया, आफ्रिका आणि अमेरिका खंडामध्ये आदिवासी जमाती आहेत. भारतात हि आदिवासी ची संख्या मोठ्या प्रमाणात आहे.भारतातील आदिवासीची संख्या जवळ जवळ ४१४ असल्याचा उल्लेख 'आदिवासी विश्व, पुस्तकात डॉ.सौ.शैलजा देवगावकर आणि डॉ.श.गो. देवगाकर यांनी केलेला आहे. आदिवासी जमातींना विविध नावे आहेत.

मुळंचे रहिवासी, प्राचीन किंवा आदिवासी यांना Aboriginols किंवा Aboriginals म्हटले .हा शब्द प्रयोग ग्रीगसन तसेच ए. व्ही.ठककर यांनी वापरला आहे.डॉ.धुर्ये यांनी मात्र So Called aborigines म्हटले मुळ रहिवासी किंवा मागासलेले हिंदू असे म्हटले आहे.

आदिवासी जमातींचा पूर्व इतिहासात भारतच्या वैदीक वाड्:मयात उल्लेख आढळतो.भारतात वायव्य सरहद्द प्रांताकडून आलेल्या आर्यांच्याही आगोदर भारतात 'आदिम' जमाती होत्या.आर्य या जमातींना तुछ लेखत असावेत.डॉ. सुधीर फडके लिहीतात आर्या पैकी अगदी सुरुवातीला आलेल्या टोळयातील लोक या अनार्यांकडे तुच्छतेने पाहत असावेत , असे वाटते.राक्षस,मानवभक्षक ,कावळयापेक्षा काळे,अशा पध्दतीने आदिवासींचा उल्लेख केला आहे.

प्राचीन ग्रंथामधील उल्लेखा संदर्भात श्री.मा.रा.लामखेडे लिहीतात,'रामायण,'महाभारत' विविध स्मृतीग्रंथ या प्राचीन ग्रंथामधूनही आदिवासींचे संदर्भ येतात. शबर,रक्ष, निषाद, किरात अशा नावांनी ग्रंथामध्ये आपणांस आदिवासी व द्रोणाचार्य यांची कथा तर प्रसिद्ध आहे. या कथेतील गुरूदक्षिणा म्हणून अंगठा तोडून देणारा एकलव्य हा आदिवासीच होता.हे आदिवासी संस्कृती संघर्षात पराभुत झाल्याचे दिसून येते. त्यामुळे आदिवासींना जिंकलेल्यानी त्याचा उल्लेख विविध प्रकारच्या उपहासात्मक शंब्दसहतीनी केलेला आहे.

1.2 आदिवासी

भारतात वन्यजीवन जगणाऱ्या विविध जमातीना, दुर्गम अशा पहाडी प्रदेशात राहणाऱ्या जमातींना 'आदिवासी' संबोधले जाते.'आदिवासी ' हे मुख्यतः दुर्गम अशा पहाडी प्रदेशात राहतात.त्यांचा उल्लेख 'वनवासी' असाही करतात.आदिवासी लोकसमुह जंगलात राहतात म्हणून त्यांना 'जंगलाचे राजे' संबोधले जाते. आदिवासींना धरतीची लेकरे,जंगलाचे राजे, आदिवासी, वनवासी,गिरीजन, आदिम समाज,आदिम जाती-जमती, म्हणूनही संबोधले जाते. विविध संशोधक, अभ्यासक तसेच विविध विचारवंतांनी नामाभिश्राने दिलेली आहेत. प्राचीन भारतीय ग्रंथामध्ये

आदिवासीचा उल्लेख करण्यात राहणारे म्हणून 'आरण्यक' असा केलेला आहे. श्री.गुरुनाथ नाडगोंडे - 'आदिवासी' जमातीच्या विषयी लिहितात.'नैसर्गीक पर्यावरणात राहणाऱ्या लोकांना कोणी जंगलाचे राजे' म्हणतात, तर कोणी त्याना 'धरतीची लेकरे' म्हणतात. याच लोकांना 'आदिवासी किंवा आदिम समाज' म्हणून उल्लेखले जाते. विचारवंत, अभ्यासक,प्रशासक व सामाजिक कार्यकर्ते यांनी सुध्दा या समाजाला विविध नावे दिलेली आहेत.रिसले, लॅस्यसी,सेडवीक,ए.ठककर, यांनी या लोकांना'अगदि प्राचीन' किंवा 'मुळचे रहिवासी' म्हटले आहे.डॉ.धुरये यांनी त्यांना'मागासलेले हिंदू' असे म्हटले आहे.पण भारतीय राज्यघटनेत 'अनूसुचीत जाती जमाती' असा उल्लेख केलेला आहे.

आदिवासींची वस्ती सामान्यतः अरण्यात, पर्वत रांगांमध्ये, डोंगराच्या पायथ्याशी, नदी-नाले, दऱ्या-खोऱ्यात, डोंगरातील पठारी भागात असत.पर्वत किंवा अरण्य नसलेल्या भागातही,प्रगत भागाच्या जवळपास आदिवासी जमातींची वस्ती आहे. आजच्या प्रगत युगात, संस्कृती अभिसरण आणि संस्कृती संक्रमणाच्या काळात, विज्ञानयुगात, आदिवासी जमातींची वस्ती शहरे,खेडे,वाड्या,तांडे, पांडे, यांच्यात अस्न,ते प्रगत माणवी जिवनाजवळ आलेले आहेत.त्याची हि लोकवस्ती स्थाने बदललेली आहेत.आदिवासी जमातींचा चेहरा-मोहरा बदललेला पाहायला मिळतो.

भारतीय राज्यघटनेने आदिवासी लोकसमुहाकरीता 'टायबल' असा शब्द प्रयोग केला आहे.'टाईबल'म्हणजे 'जमात' होय. जो समाज स्वयंपूर्ण असतो व समाजव्यवस्था , चालीरीती, धर्म, भाषा,या सर्व बाबतींत आपली वैशिष्ट्ये राखुन असतो,

अशा समाजाला 'जमात' टाईबल असे म्हणतात.

'टायबलस' म्हणजे 'आदिवासी' हा शब्द योग्य होय.

1.3 आदिवासी:- व्याख्या

1) गिलीन:-

'एका विशिष्ट भुप्रदेशात राहणारा,समान बोलीभाषा बोलणारा ,व समान सांस्कृतीक जिवन जगणाऱ्या स्थानिक गटाच्या समुहाला आदिवासी समाज म्हणतात.

2) इ.बी.टायलर:-

"एका सामाजिक भुप्रदेशात राहणारा व एक बोलीभाषा सांस्कृतिक एकजिनसीपणा आणि एकात्मिक सामाजिक संघटन असलेला, सामाजिक गट म्हणजे आदिवासी समाज होय."

3) डब्ल्यू.जे.पेरी:-

"समान बोलीभाषा बोलणाऱ्या व एकाच भुप्रदेशावर वास्तव्यास असणाऱ्या समुहाला 'आदिम समाज 'असे म्हणतात"

4) डॉ.रिव्हस:-

"ज्या समुहातील सदस्य एक समान बोलीभाषा बोलतात युद्ध वैगरे सारख्या उद्दिष्टपूर्तीकरिता एक होऊन झटतात.अशा सरळ व साध्या सामाजिक समुहाला"आदिवासी समाज" असे म्हणतात"

5) डॉ.डी. एन. मुजुमदार:-

"समान नाव असनारा , एकाच भुप्रदेशात वास्तव्य करणारा, विवाह व्यावसाया बाबतीत समान निषेध , नियमांचे पालन करणारा,एकच भाषा बोलणारा , परस्पर उत्तरदायित्व निर्माण करण्याचे उद्दिष्टिने एक पध्दतशीर व्यवस्था स्वीकारणाऱ्या कुटुंबाचे किंवा कुटुंबसमुहाचे एकत्रिकरण म्हणजे 'आदिवासी समुदाय' होय"

6) बोगारडस:-

" सुरक्षिततेची जरूरी, रक्तसंबंधाचे बंध , समान धर्म यांवर आदिवासी समुह आधारलेले होता."

7) शिलांग समिती:-

" इ.स.१९६२ सारी शिलॉग आदिवासी समितीने व्याख्या केली की "एका) समान भाषेचा वापर करणाऱ्या, एकाच पुर्वजापासुन उत्पती सांगणाऱ्या,

एका विशिष्ट भुप्रदेशात वास्तव्य करणाऱ्यांना, अक्षरं ओळख नसलेल्या व रक्त संबंधांवर आधारित, सामाजिक व राजकीय रितीरीवाजांचे प्रामाणिकपणे पालन करणाऱ्या एकजिनसी गटाला "आदिवासी समाज"म्हणतात.

8) मदन व मुजुमदार:-

"समान भाषा व समान संस्कृती असणाऱ्या व धार्मिक दृष्टीने परस्पर संबंधीत असणाऱ्या ग्रामीण समुदायाच्या समुहाला 'आदिवासी समाज 'असे म्हणतात.

'आदिवासी' शब्दला इंग्रजीत(Tribe) शब्द वापरला पण त्यांची व्याख्या केलेली नाही.'आदिवासी' शब्दांची तंतोतंत, काटेकोर, समर्पक व्याख्या करणे कठीण आहे. विद्वावानानी केलेल्या व्याख्या मधुन आदिवासी समाज जमातीची फक्त लक्षणे, वैशिष्ट्ये दर्शविलेली आहेत.

आदिवासी जमात(Tribe)या संज्ञेचा व्याख्येबाबत एकमत असले तर विविध लोकांनी व्याख्यामधुन त्याची ठळक वैशिष्ट्ये खालीलप्रमाणे दर्शविलेली आहोत.

- 1) आदिवासींची वास्तव्याची एक वैशिष्ट्य जागा,एक विशिष्ट असा भुभाग असतो.
- 2) रक्त संबंधांवर आधारित एकात्मिक सामाजिक. संघटन आहेत.
- सांस्कृतिक एकजिनसीपणा असतो.
- 4) पूर्वज समाज असतात.
- 5) देव- देवता , दैवते, पूजाविधी समान असतात.
- 6) समान बोलीभाषा असते.
- 7) रुढी,प्रथा, परंपरा,चालिरीती, रितीरिवाज समान असतात.
- लोककला, लोकसाहित्य, समान असतात.
- 9) प्रमाण लघुता, थोडीशी लोकसंख्या समुदाय करून राहते.
- 10) स्वतःची वेगळी जिवन पध्दती असते.

11) साधी अर्थ व्यवस्था असते.

वरील आदिम समाजाच्या ठळक वैशिष्ट्यावरून आदिम जमात हा इतर कोणत्याही समाजावरून वेगळा आहे.बहुसंख्य आदिवासी अत्यंत दुर्गम व डोंगराळ भागात राह…

१.५ भारतातील आदिवासी-

आदिवासींची लोकसंख्या आफ्रिका खंडात सर्वात अधिक आहे.त्या खालोखाल भारतात आदिवासींची वस्ती आहे. इ.स.1981च्या भारतातील आदिवासींची लोकसंख्या 4 कोटी 75 लाख 75 हजार इतकी आहे.भारताच्या एकूण लोकसंख्यशी हे प्रमाण 7% इतके भरते.आदिवासी जनगणनेनूसार लोकसंख्यने भारतातील एक लाख चौरस मैलाचा भूप्रदेश व्यापलेला आहे.

भारतातील एकूण आदिवासी लोकसंख्येच्या निम्मी लोकसंख्या मध्यप्रदेश, ओरिसा, बिहार या तीन राज्यात राहते.गुजरात, राजस्थान,आसाम, महाराष्ट्र, पंजाब, बंगाल ,आंध्रप्रदेश,या राज्यांमध्येही आदिवासी मोठया संख्येने राहतात.नागालड, मेघालय, मिझोराम,अरूनाचल प्रदेश ही तर पुर्णतः आदिवासी राज्य आहेत. भारतात एकूण 400 आदिवासी जमातींची नोंद आहे. गोंड, सथाळ, भिल्ल या भागातील सर्वात मोठ्या आदिवासी जमाती होय. इ.स.1961च्या जनगणनेन्सार या तिन्ही जातींची लोकसंख्या प्रत्येकी 25 लाखाहून जास्त आहे. भारतातील आदिवासींची बोलीभाषा आदिवासी जमाती डोंगराळ भागात राहतात. त्याच्या जमातीपुरती त्याची मर्यादित बोलीभाषा असते त्यामुळे आदिवासीच्या बोलीभाषा चे प्रमाण जास्त आहे .इ.स.1890 साली सर ग्रियरसन यांनी भारताची भाषीक पाहणी केली.तेव्हा त्यांना भारतात एकूण 179 भाषा व 544 बोलीभाषा वापरात आल्याचे आढळले.नोंदवलेल्या भाषांपैकी 400 बोलीभाषा या आदिवासीच्या आहेत.एकुण लोकसंख्येतील सुमारे फक्त 10% लोक एवढ्या भाषा बोलतात.

1.6 महाराष्ट्रातील आदिवासी-

भारतातील आदिवासी लोकसंख्येत 30 लाखाहून जास्त आदिवासी महाराष्ट्रात राहतात.त्याचे महाराष्ट्राच्या लोकसंख्येशी प्रमाण 5.86% इतके आहे

महाराष्ट्रातील आदिवासी लोकसंख्या प्रामुख्याने दहा-अकरा जिल्ह्यामध्ये विखूरलेली आहे. धुळे, नंदुरबार, ठाणे, नाशिक, आणि रायगड जिल्ह्यामध्ये मोठ्या प्रमाणात आदिवासींची वस्ती आहे. ह्या जिल्ह्या-व्यातिरीत इतर जिल्ह्यांतही तुरळक प्रमाणात आदिवासी च्या वस्ती आहेत. महाराष्ट्रात एकूण 40 जमातींना अनुसूचित जमाती म्हणून सरकारी मान्यता आहे. तसेच बिगर अनुसूचित प्रदेशात राहणाऱ्या आदिवासींची लोकसंख्या सुमारे 10 लाखाहून जास्त आहे. महाराष्ट्राचा आदिवासी लोकसंख्येच्या दृष्टीने भारतात 5 क्रमांक आहे.

संदर्भ ग्रंथ

- 1) डॉ.सौ.शैलजा देवगावकर .
- 2) डॉ. देवगावकर श.गो. "आदिवासी विश्व"
- 3) आनंद प्रकाशन ,नागपूर , प्रथमावृती,2001 पृष्ठ 1.
- 4) श्री.लामखेडे मा."आदिवासी ठाकर" पद्मगंधा प्रकाशन पुणे,प्रथमावृती सन, 2003 पृष्ठ 15
- 5) श्री.नागोंडे गुरुनाथ, "भारतीय आदिवासी". कांटिनेंटल प्रकाशन , पुणे ,प्रथमावृती सन 1979 पृष्ठ 2
- 6) तत्रैव पृष्ठ 10
- 7) उनि. आदिवासी ठाकर, पृष्ठ 16
- 8) उनि.आदिवासी ठाकर , पृष्ठ 17
- 9) उनि.आदिवासी ठाकर , पृष्ठ 18

प्रकरण-2

"आदिवासी वस्ती,घरे, कुटुंब, वाद्ये"

2.1 वस्तीस्थान

"मानव "हा कोणत्याही अवस्थेतील असो,तो समाज करून राहणारा प्राणी आहे.मानवाला "सामाजप्रिय "प्राणी म्हणून संबोधले जाते.'मानव' हा एखाद्या बेटाप्रमाणे स्वतंत्र, एकाकी, अलीप्त,जिवन जगु शकत नाही.इतरापासून अलीप्त व एकाकी जीवन व्याकती जर जगू लागली तर त्या व्यक्तीच्या जैविक , सांस्कृतीक , सामाजिक,व मानसिक गरजांची पूर्ती होणे, शक्य होणार नाही. श्री.गूरूनाथ नागगोंडे म्हणतात."आपले जिवन सुसहय व सुखकारक व्हावे म्हणून त्याला इतरांचे सहाय्य तर घ्यावेच लागते, एवढेच नव्हे तर त्याला संघटीत होऊन राहावे लागते." मानवाच्या समाजप्रिय वृतीतुन, टोळी- टोळीने जगण्यातूनच , आदिवासी जमातींची वस्ती, डोंगर पठारावर,नदी-नाल्याकाठी ,गांवाच्या जवळ झाली.

नंदुरबार जिल्ह्यातील आदिवासी वस्ती सातपुडा डोंगराच्या पर्वत रागात,तापी नदीच्या परिसरात, दन्या- खोऱ्यात , पठारावर आहे. आदिवासी जमातींची वस्ती 'पाडया पाडयातुन' आहे.त्याच्या पाडयाना नावे आहेत. पाडावस्ती हीच त्यांची नांवे आहेत. सोंनपाडा, देवपाडा अशी पाडयाच्या वस्ती ची नांवे आहेत.आदिवासी जमातीची वस्ती दोन- चार घरापासून ते शंभर-दोनशे घरांच्या वस्ती पर्यंत आहेत..

नंदुरबार जिल्ह्यातील आदिवासी जमातींची लहान-मोठी गावे आहेत.धडगाव तालुक्यात अगदी पंधरा -विस झोपड्या असलेली वस्ती आहेत. खांडबारा विसरवाडी,धानोरा,नवागाव,या सारखी मोठी गावे असुन , त्यामध्ये संमिश्र वस्ती आहे. पाडयावरची वस्ती साधारणतः एकाच कुलातली असते.पाडयावर-ची वस्ती त्याचे देवदेवतांचे,सन-उत्सवाचे स्वतंत्रपण जोपासून आहेत. मोठ्या गावांमध्ये आदिवासी वस्तीरोजगार, नोकरी, व्यावसाय इत्यादी निमित्ताने

आढळतात.मोठी गावे, मोठ्या गावाजवळ खेडी,पाडे, अशी वस्ती असून, आजकालच्या आर्थिक प्रगतीमुळे त्याच्या वस्तीचे स्वरुप पालटलेले दिसून येते.नव- निर्माण गावे, स्थलांतिरतगावातील वस्तीत प्रगती,रूपांतर झालेली दिसुन येते.डोंगरळ भागात झोपड्या ची वस्ती आहे निसर्गाच्या मोकळ्या वातावरणात जगणारी कालची आदिवासींची वस्ती,तिचा मूळातला चेहरा-मोहरा आज पालटलेला आहे.गत काळातील वर्णन केलेले जिवन, आजच्या प्रगत युगात, फारच थोड्या प्रमाणात हगगोचर होते.सातपूडयाच्या डोंगराळ भागातच आदिवासी वस्ती स्थाने, गतकाळातीलत्यांचे जिवन दर्शन घडवितात.आदिवासी वस्तीला'पाडा' म्हणून संबोधले जाते.अनेक गांवाच्या नावापूढे

'पाडा' हे उपनाम लावलेले आहे. आदिवासी जमातींच्या वस्तीला 'पोड' 'पोडु' 'पाडा' म्हटले जाते . हया शब्दाची उत्पत्ती पाहता.'पोड' पाडा हा शब्द मुळ 'पोडू' वरुन तयार झाला आहे.'पोडु' हा शेती करण्याचा एक विशिष्ट प्रकार आहे.शेतजमीन सोडून देऊन, दुसरीकडे पिके काढणेहा प्रकार 'पोडू' शेतीतील असतो.कित्येक आदिवासीहि शेती करीत आलेले आहेत. हि शेती करण्याचीपद्धत आज इतिहासात जमा झाली आहे. कोलामांच्या 'पोड' च्या उत्पत्तीचा शोध घेताना.डाॅभाऊ मांडवकर यांनी लिहिलेले आहे. आदिवासी वस्ती हलवीणयची अनेक उदाहरणेआहेत, नैसर्गिक संकटे,नदीला आलेला पूर, दुष्काळीपरीस्थिती , वन्यप्राण्यांपासुन संरक्षण,पाट बंधारे,कालवे,धरणे, नवीन शेत जमीन तयार करणे इत्यादीकारणांमुळे वस्ती स्थाने स्थलांतरित झालेली आहेत.नर्मदा धरणामुळे 'सोमावल,सारखी गावे प्रकल्प बाधित होऊन त्यांचे नव्या गावात स्थलांतर करण्यात आलेले आहे.

आदिवासी वस्तीत झालेल्या दोन गटांच्या भांडणामुळे हि एखादा गट गाव सोडून बाहेर पडतं असे. आदिवासी जमातींच्या खेड्या, पांड्यात असलेलीवस्ती पारंपारिक पद्धतीची असते. वस्ती च्या मध्यभागी गाव चावडी, म्हणजे सार्वजिनक झोपडीवजा सभागृह होय. झोपडयाची मागणीहीपध्दत्तशीर, रांगेत, रस्त्याच्या बाजूला असते.आजच्यात्याच्या वस्ती स्थानात काळानुरुप. वाढलेल्या लोकसंख्येनुसार, उद्योग व्यवसाय अशा विविध कारणांमुळे बदल झालेले आहेत. तरी ही

पूर्वापार अवशेष , वस्ती रचना जोपासलेली दिसते. वस्ती स्वच्छता पाळली जाते.त्याची घरे , झोपड्या,खोपटे, स्वच्छ असतात.सडा-सारवण , घराभोवती स्वच्छता, सांडपाण्याची व्यवस्था, झाडे- झुडपे, फुलझाडे, प्राणी, पक्षी,चारा-वैरण, सर्व गोष्टींत आदिवासी स्वच्छतेची काळजी घेतात.

2.2 आदिवासी घरे

आदिवासी वस्तीची घरे गवती छपरांची असतात. त्यांची घरे म्हणजे झोपड्या होय, निसर्गनिर्मित साधनांनी निर्माण केलेल्या असतात. जंगलातुनमिळणारे गवत, लाकुड, यापासून निर्माण करतात. जंगलातील पळस,मोह,साग, यांची मोठ-मोठी पाने,भाताचे गवत, बांबूच् स्पासुदीला कोंबडा-कोंबडी बकरा-बकरी, कोंबडीची अंडी,बदलाची अंडी, होय.आदिवासी जमातीत मोहाच्या फुलांपासून तयार केलेली,दारू मद्यपानासाठी तरूण, वृद्ध , सदैव पितात.दारू आणि मांसाहारात त्यांना कमालीचा आनंद होतो. मासे , झिंगे बोंबील, त्यांच्या नेहमी आहारात असतात.

आदिवासीकडे दही,दुध,तुप, लोणी हे पदार्थ क्वचित आढळतात.अलिकडे दुभकतत्या जनावाराचे प्रमाण कमी झाले आहे.शेळया पाळल्या जातात. शेळीच्या दुधाचाही वापर केला जातो.दुध आणि दुधांचे पदार्थ खाण्याकडे त्यांची आवड दिसून येत नाही.

सकाळी शिळी वा ताजी भाकरी-चटणीची ते न्याहारी करतात.कामासाठी बाहेर पडतात.दुपारचे जेवण सोबतच बांधुन नेतात.सकाळची न्याहारी, दुपारी जेवण, रात्री जेवण, साधारणतः तीन वेळा जेवण होते.मोठया खेड्यामध्ये हाँटेल आहेत.त्या ठिकाणी चहा घेणे,शेव-चिवडा, मुरमुरे घेणे त्यांनी आवडतात शिकार करणे, मासे पकडणे,ढोलाच्या तालावर नृत्य करने.भडक कपडे वापरणे, गाणी गाणे,पावा-बासरी वाजवणे,शीळ घालणे, पत्ते खेळणे, खोट्याखेळणे,रानात भटकंती करणे,असे विविध छंद आदिवासी मध्ये असतात. आजकाल रेडिओ ऐकणे, बॅटरी वापरणे, कॅमेरा वापरणे, फोटो काढणे, इत्यादी छंद ही आढळतात.

2.3. कुटुंब

मानवी समाज जिवनात सामाजिक समुहात कुटुंब एक मुलभूत आणि प्राथिमक स्वरूपाचा सामाजिक समुह आहे.मानवी विकासाच्या सर्व अवस्थात कुटुंबाचे अस्तीत्व दिसून येते.मानवाच्या विकास टप्प्यातील पिहली अवस्था म्हणजे कुटुंब होय. कुटुंब संस्थेमुळे समाजातील सातत्य व स्थैर्य टिकून राहील. कुटुंब संस्थेला मानवी समाज जिवनात अनन्य साधारण महत्व आहे. कुटुंबाला इंग्रजीत "फॅमीली"असे म्हणतात."फॅमिली"हा शब्द "फॅमिलस" या लॅटिन शब्दापासून निर्माण झालेला आहे. रॉबरटलुई म्हणतात."कुटुंब हा विवाहावर आधारलेले सामाजिक समुह आहे.या समुहात माता-पिता व त्याची मुले यांचा समावेश होतो आदिवासींच्या कुटुंबातील व्यक्तींची संख्या साधारणतः ६-७ असते.पती-पत्नी , त्यांची ३-४ मुले , म्हतारे आई-वडील असतात. २-३ भाऊ , त्यांच्या बायका,व मुले ही एकत्र राहतात.लहान झोपडीवजा घरे लवकर निर्माण करतात.त्यामुळे विभक्त होण्याची अडचणी निर्माण होत नाही.

1) वेशभूषा :-

आदिवासी समाजातील पुरुष पुर्वी "लंगोटी" वापरीत असे, लंगोटी म्हणजे थोडेफार फडके असुन , जाघातुन शरीर अवयव झाकण्यासाठी त्यांचा उपयोग करीत असत.आज काल पेहराव बदलला आहे. लंगोटीच्या वापरामुळे त्यांना"लंगोटे"म्हटले जाई. आदिवासी धोतर,कुडता, टोपी किंवा डोक्यावर वाढलेले केस , थोडेफार लोक मिशा ठेवतात.अंगात बंडी किंवा बिनयान वापरतात.बहुतेक आदिवासी बिनयान आणि कमरेला टॉवेल गुंडाळून हिडतात. कपड्यांवर त्यांचा फारसा खर्च होत नाही.मरयादित आर्थिक कमतरता हेही त्याचे कारण असु शकते. अंगात बिनयान किंवा उघडेच असतात.लहान मुले नागडी उघडी असतात.पाच-सात वर्षा ची मुलं,मुली कपडे वापरतात.लहान मुले पाड्यात ,खोपटयाभोवती रेंगाळतात. घराची स्वच्छता राखणारे आदिवासी कपड्याविषयी उदासीन दिसतात. मळके कपडे नदि- नाले , वाहत्या पाण्यात कपडे आपटून, धुवून स्वच्छ करतात.मानसे धोतराचा वापर अंथरून , पांघरूण सारखाही करतात.महाताच्या माणसाला

कपड्यांची आकर्षण नसते.ते पूर्णतः उघडे राहतात.कमरे भोवती अंग झाकण्यासाठी तेवढा कपडा वापरतात.आजकाल बदललेल्या सामाजिक जिवनामुळे आदिवासी जमातीतही पँट, शर्ट, आधुनिक वेशभूषा करतात.शिक्षणाचा प्रसार , उत्पन्नाची साधने, आर्थिक आवक, सरकारी सोयी-स्विधा, आश्रमशाळा, सरकारी योजना, वाढलेले उत्पन्न यांचा परीणाम त्यांच्या वेशभ्षेत दिसून येतो.दुरवरच्या डोंगरातील ,खोपटयातील जमातीत पूर्वावशेष पहावयास मिळतात.त्यांच्या जिवनाचा, राहणीमानाचा स्तर आज उंचावलेला आहे.आदिवासी जमातीतील मानसाकडे दागिने दिसून येत नाहीत.हातात खडयाची,साधी, तांब्याची,सोने, चांदीची अंगठीवापरतात.देव-देवताच्या अंगठ्या बोटात वापरतात. अपवादात्मक मानसाच्या कानात "बाळ्या," आढळतात. त्याचप्रमाणे तांबे, किंवा स्टीलचे कडे , चांदीचे कडे हातात असतात.भडक रंगाच्या कपड्यांची आवड दिसते. पिवळा,लाल, निळा,हिरवा, जांभळा, हया रंगाचे भडक कपडे वापरण्याची मनोवृत्ती दिसते. यात्र,जत्रा,बाजार, सन-उत्सवा, प्रसंगी नवे कपडे परिधान करतात.दैनंदिन पेहराव नेहमीचा असतो. आदिवासी स्त्रीयांचे लुगडे नेसण्याची पध्दत वेगळी आहे.दुमड घातलेली लुगडे वापरतात.तरूण,प्रौढ स्त्रीया, ल्गडी, चोळी वापरतात. आदिवासी स्त्री-यांना कष्टाची कामे करावी लागतात.त्यामुळे त्यांचे कपडे मोजकेच असतात.डोंक्यावरील केसांना फडक्याने बांधतात.उन्हात, पावसात, शेतात कष्टाची कामे करतात.त्याम्ळे डोंकयाभोवती केसांच्या संरक्ष-णासाठी फडके बांधलेले असते.कपाळाला "कुंकू" असते.आजच्या प्रगत मानवी जिवनात टिकली, विविध प्रकारच्या बांगड्या, वेगवेगळ्या हलक्या प्रतीचे हलक्या धात्चे बाजारात मिळणाऱ्या दागिन्यांनी ,त्या दागिन्यांची हौस पूर्ण करतात.पायात जोडवी, गळ्यात काळया मण्याचे मंगळसूत्र, कानात, नाकारता, सौभाग्यलक्षण दागिने वापरतात. स्शिक्षित स्त्रीया काही प्रमाणात आजकाल प्रगत दिसून येतात.समाजाच्या मानाने जे प्रमाण कमी आहे. घर-चुल-मुल कष्टातच आदिवासी स्त्रियांचे जीवन असते. आदिवासी पायात पायातमें वापरत नसत. आता वापरू लागले आहेत. रबरी, प्लॅस्टिकची, पायतने हलक्या प्रतीचें वापरतात. त्याचे पाय दगड- गोटे , खडकाळ, मातीचे रस्ते, पाणी-पाऊस ,चिखला-तील वापरामुळे टणक झालेले असतात.

2) खाणे पिणे.

आदिवासी जमातींच्या लोकांच्या आहारात तुरीचे मुगाचे वरण, मिरचीचे तिखटाचे पदार्थ,तिखट-भिकरी हे पदार्थ नेहमी असतात.जवारी ,बाजरीचा नेहमी खाणयात वापर केला जातो.गहु , तांदूळ हि वापरला जातो. ओल्या मिरचीच्या ठेच्याचा वापर होतो. वांगे, बटाटा,कारले,दोडकी, भोपळा जंगलातील पालेभाज्या तुरीच्या शेंगा, चवळीच्या शेंगा, भुईमूगाचे दाणे इ. असतात.

आदिवासी जमाती मांसाहार करतात.मासे, कोंबडी,हरिण,घोरपड,तितुर,लावरी,ससे, इत्यादी प्राण्यांचे मांस आहारात असते.नदि-नाले-डबकी, तलावातील लहान मोठे मासे, खेकडे मांसाहारात वापरतात.

3) गोंदणे

शरिरावर गोंदुन घेण्याचीरीत आदिवासींमध्ये आहे. सींदर्यासाठी साधारणतः गोंदुन घेतले जाते."गोंदुण घेणे" हे सीभाग्याचे लक्षण असुन,शरीरावर गोंदलेल्या चित्रकृतीमुळे शरीराच्या सींदर्यात भर पडते,असा स्त्री- यांचा मनोभाव आणि पारंपारिक प्रथा पध्दती आहे.कपाळावर कुंकू लावण्याच्या ठिकाणी,नाकावर,हाता-वर ,गोंदले जाते.गोंदुण घेणाऱ्यांस देवीचा आजार होत नाही.असी समजुत असते.बाजाराच्या गावी गोंदणारे असतात.

आदिवासी पुरुष त्यांच्या हातांवर नावं गोंदुन घेतात, प्रामुख्याने त्यांचे स्वतःचे नाव असते. महीला त्यांचे व पतीचे नाव गोंदुण घेतात . गोंदवलेली नावं हाताच्या मनगटावर , कोपरा खाली असतात. हातावर फुल, झाड, आवडीचा पक्षी, यांची चित्रे हि गोंदुण घेतात. प्रत्यका-च्या आवडी प्रमाणे , शरिरावर गोंदुण घेतात. अपवादा-त्मक छांतीवर गोंदलेले हि आढळतात.

2.4 वाद्ये

कष्टकरी आदिवासीच्या जिवनात सामुहिक सण- उत्सव आणि मनोरंजनाचे नृत्य कार्यक्रम आनंदाची साधने प्रामुख्याने आहेत.नृत्यात पायात घुंगराचे चाळ असतात.आदिवासीच्या घरांत गाठलेल्या घुंगराच्या जोड असतात. आदिवासी वाद्यात त्यांच्या परीसरात उपलब्ध होणाऱ्या वनस्पती व प्राणी यांच्या वस्तु पासुन तयार केलेली वाद्य असतात.वादय साधी असतात. अलीकडे चामडया एवजी नविन रबर प्लास्टिकची वाद्ये हि मिळतात . बासरी,पावा,ढोल,झांज हे आधुनिक पद्धतीचे मिळतात.प्राण्यांच्या चामड्या दुर्मिळ होऊन त्याला तयार करण्यासाठी लागणारा काळ-वेळ ,पैसा यांचा विचार करता आधुनिक तयार असलेली वाद्ये वापरली जातात.

1) ਫੀਕ -

हे आदिवासी जमातींचे अत्यंत लोकप्रिय वाद्य आहे. ढोल बकऱ्याच्या चामडयापासुन तयार करतात. ढोल वाजवण्यापुरवी आगीवर शेकावा लागतो.ढोल टिपऱ्यानी किंवा दोन कांड्यानी वाजवतात. ढोलाची दुसरी बाजू बोटांनी किंवा मनगटाणे वाजवतात.ढोलगळ्यात अडकवून, जिमनीवर टेकवून वाजवतात.आदिवासींच्या समुह नृत्यात ढोल महत्वाचे लोकप्रिय साधन आहे.ढोलाचा आवाज मोठा असतो, घुमणारा असतो."मंगल प्रसंगी ढोल वाद्याला विशेष महत्त्व असते"

2) ढोलक

हे वाद्ये आंब्याच्या किंवा वडाच्या पोकळ लाकडा-पासुन तयार करतात.हाताच्या बोटांनी ढोलक वाजवि-तात .ढोलकाच्या दोऱ्या सैल करून, किंवा घट आव-ळुन आवाजात चढउतार करता येतो . आदिवासी नृत्यात ढोलकाचा उपयोग केला जातो.ढोलकयावर पडलेली थाप म्हणजे नाचाला निमंत्रण दिल्याचे समजले जाते.

3) नगारा

नगारा वाद्य ढोलाच्या मानाने लहान असते. सण-उत्सवात, लग्नप्रसंगी, धार्मिक कार्यात,देव-देवता पुजणात , नगारा वाजतात.पावरी भाषेत नगाऱ्यास "तुतडी" म्हणतात.

4) तारपा

सुकलेला लांब दुधी भोपळा,बांबुच्या दोन नळ्या आणि ताडाची पाने यांच्या सहाय्याने हे वाद्य तयार करतात.गारूडयाच्या पूंगीसारखे हे वाद्य दिसते. बांबूच्या नळ्या भोपळ्याच्या एका बाजूला असतात.

त्या पाण्यासारख्या असतात.दुसऱ्या बाजूला भोंगा असतो.हा भोंगा माडांच्या आवळ्यापासून तयार करतात.एकजण तारपा वाजवितो आणि इतर फेर धरून नृत्य करतात.तारपयाच्या बदलत्या मुलाप्रमाणे नृत्याची चालही बदलते. आदिवासी जमातींमध्ये तारपा नाच लोकप्रिय ,लक्ष वेधुन घेनारा आहे.गावातला मजबूत, धडधाकट तरुण, घुंगराची काठी आपटून, नाचणाऱ्याना सुचना देतो. नृत्याचे मार्गदर्शन करतो. हातात काठी असते म्ह…

सारांश:

वरील प्रकरणात आपण पाहिले कि, आदिवासी वस्ती मानव हा कोणत्याही अवस्थेतील असो,तो समाज धरून राहणारा प्राणी आहे.मानवाला ' समाजप्रिय ' प्राणी म्हणून संबोधले जाते.माणव एखाद्या बेटाप्रमाणे स्वतंत्र, एकाकी ,अलीप्त जीवन जगू शकत नाहीइतरांपासून अलिप्त व एकाकी जीवन व्याप्ति जर जगू लागली.तर त्या व्यक्तीच्या जैविक, सांस्कृतीक, सामाजिक व मानसिक गरजांची पूर्ती होणे, शक्य होणार नाही.श्री.गुरुनाथ नाडगोंडे म्हणतात " आपले जिवन सुसहय व सुखकारक व्हावे म्हणून त्याला इतरांचे सहाय्य तर घ्यावेच लागते.एवढेच नव्हे तर त्याला संघटीत होऊन राहावे लागते " मानवाच्या समाजप्रिय वृत्तीतून टोळी-टोळीने जगण्यातुनच ,आदिवासी समाजाची वस्ती, डोंगर पठारावर,नदि - नाल्याकाठी , गांवाच्या जवळ

झाली. आदिवासी समाजाच्या खेड्या, पाड्यात असलेली वस्ती पारंपारिक पध्दतीची असते. वस्ती च्या मध्यभागी गाव चावडी म्हणजे सार्वजिनक झोपडीवजा सभागृह होय.झोपडीची मांडणीही ,पध्दतशीरपणे , रांगेत, रस्त्यांच्या बाजुला असते. आजच्या त्यांच्या वस्तीस्थानात काळानुरुप, वाढलेल्या लोक- संख्यानुसार , उद्योग व्यवसाय अशा विविध कारणांनी बदल झालेला आहे. तरीही पुर्व पार अवशेष , वस्ती रचना जोपासलेली दिसते .वस्तीत स्वच्छता पाळली जाते .त्यांची घरे, झोपड्या , खोपटे स्वच्छ असतात .सांडपाण्याची व्यवस्था , सडा - सारवन स्वच्छता, झाडे झुडपे, फुलझाडे, प्राणी, पक्षी , चारा-वैरण, सर्व गोष्टींत आदिवासी स्वच्छतेची काळजी घेतात.

2.5 संदर्भ

- श्री.डॉ. मांडवकर भाऊ,कोलाम,
 सेवा प्रकाशन, अमरावती, प्रथमा वृत्ती,सन 1966, पृष्ठ 72
- श्री. गाडगोंडे गुरूनाथ, भारतीय आदिवासी,
 कॅाटिनेंटल प्रकाशन, पुणे,तृतीयावृती, सन 2003 पृष्ठ-155
- डॉ. सौ.शैलजा देवगावकर, महाराष्ट्रातील आदिवासीचे लोकसाहित्य,श्री. साईनाथ प्रकाशन,
 नागपूर, प्रथमा वृत्ती,1993 पृष्ठ 10

प्रकरण-3

"आदिवासी विवाह पध्दती- जीवन पद्धती "

मानवी समाज जिवनात , मानवाच्या जगातील कोणत्याही व्यावस्थेत , समाज व्याकतीला अनियंत्रित स्वतंत्र देत नाही.समाज जिवनात वावरतांना व्याकती-च्या वर्तनावर बंधने असतात.व्याकतीच्या वर्तनालामर्यादा घालण्याचे काम त्या समाजातील सांस्कृतिक मुल्य, नितीत्त्व, व सामाजिक नियमाने करीत असतात.

3.1. विवाह संस्थेचे महत्व

मानवी जिवनात विषयवासना हि शारीरिक पण सार्वित्रिक स्वरूपाची गरज आहे.विषयवासना व्यक्ती तितक्या प्रवृत्ती नुसार असतो.स्त्री-पुरूषांच्या वैषयीक संबंधांवर नियंत्रण घालणे, योग्य व समाजमान्य वैषयीक संबंधांचा प्रकार म्हणजे' विवाह संस्था, होय विवाह संस्थेविषयी गिलीन म्हणतात की, "स्त्री-पुरूष यांच्यात वैषयीक संबंध प्रस्थापित करण्याचा समाज मान्य मार्ग म्हणजे विवाह होय " स्त्री -पुरूषांच्या संबंधांवर नियंत्रण ठेवणे.हे विवाह संस्थेचेमुख्य कार्य आहे . त्याचबरोबर वंशसातत्य ,आंतर-समूह संबंध ठेवणे, व्यक्तीला सामाजिक दर्जा प्राप्तकरून देणे, इत्यादी विवाहाची कार्य हि महत्त्वाची आहेत.जगातील सर्व समाजात विवाहसंस्थेचे अस्तीत्विदस्न येते.असा विचार प्रा.डॉ. नाडगोंडे व्यक्त करतात.

3.2. आदिवासी विवाहाचे स्वरूप

आदिवासी जमातीत ही विवाह संस्थेला महत्वाचे स्थान आहे.स्त्रि-पुरूषांच्या लैंगिक संबंधांबर नियंत्रण घालण्याचे महत्त्वपुर्ण कार्य आदिवासी समाजातील विवाह संस्था करीत असते.विवाहाविषयी नियमांचे पालन अत्यंत काटेकोरपणे करण्याकडे त्यांचा कटाक्ष असतो.

आदिविसी विवाहाची वैशिष्ट्ये,

1) विवाहाची अपरीहार्यता:-

व्यक्तींचे कामवासनेची तृप्ती व समाज जीवनाचे अखंडत्व या दोन्ही गर्जा विवाहसंस्थाच्या माध्यमातु-नच पुर्ण होत असतात.म्हणुन प्रत्येक समाजाच्या जिवनात विवाहसंस्थाला अनन्यसाधारण महत्त्व लाभले आहे.आदिवासी समाजातील अनेक विवाह हि वैयक्तिक व सामाजिक एक अटळ बाब मानतात.

दोन घरामधील दुवा:-

आदिवासीचा विवाहाकडे पाहण्याचा दृष्टिकोन वैयक्तिक नाही. त्यामुळे विवाह म्हणजे दोन व्यक्तींना एकत्रित आणणारा दुवा नसुन दोन घराण्यांना एकत्र आणणारे एक बंधन आहे.असे आदिवासी मानतात. विवाहामुळे वधू आणि वर यांच्या मध्येच केवळ दृढ संबंध निर्माण होतात,असे नाही.तर दोहोंची कुटुंबे, गावे,कुळे,प्रेमसंबंधात बांधली जातात.

विवाह एक करार:-

आदिवासीचा विवाहाकडे बघण्याचा दृष्टिकोन हा हिंदू लोकांप्रमाणे धार्मिक नाही.दोन कुटुंबांना एकत्रित आणणारा एक प्रकारचा करार असतो. तो मोडला जावु नये.अशी आदिवासींची तीव्र इच्छा असते. आदिवासी विवाहाकडे धार्मिक संस्कार या दृष्टीने पाहत नाहीत.

4) बालविवाहाचा अभाव :-

आदिवासी जमातीत बालविवाहाची प्रथा अढळून येत नाही.प्रींढ विवाहाची प्रथा आदिवासी जमातीत प्रचलित आहे.विवाह जोडीदार निवड करण्यात आदिवासी जमातीत निर्बंध आहेत. वयाचे वय वधु- पेक्षा जास्त असावे.विवाहातील जोडीदार निवडताना सामाजिक रूढीस अनुसरून तो जोरदार विवक्षित गटांतीलच असावा वा नसावा असे सक्तीने म्हटले जाते. विवाह हि वैयक्तिक बाब

आहे,हि विचारसरणी आदिवासींना मान्य नाही." दोन व्यक्तींच्या मिलनापेक्षाहि दोन कुटुंबांचे , दोन कुळांचे, दोन गावांचे, संघटन हे अत्यंत महत्त्वाचे मानले जाते.विवाह एक सामाजिक बंधन आहे.

3.3 आदिवासी जमाती वधू संपादन :-

आदिवासी जमातींच्या " वधू संपादन " प्रथेविषयी प्रगत समाजात विविध अपसमज आहेत.आदिवासी जमाती होळीचा सण मोठ्या उत्साहाने साजरा करतात. त्या सणांच्या निमित्ताने गावोगावी होळी साजरी होते.त्या गावाला बाजार भरतो.त्या बाजाराला 'भोगऱ्या बाजार' म्हणतात.हा बाजार प्रामुख्याने होळीच्या पुजेसाठी लागणारे साहित्य खरेदी करण्यासाठीभरलेला बाजार असतो.या बाजारात पंचक्रोशीतील गावांतील बालक- वृद्ध, तरूण-तरूणी, स्त्रिया-पुरूषहे सर्व मानसे पारंपरिक वेशभूषा करून,नटुन-थटुनदाग- दागिने घालून येतात.श्री. अशोक कोतवाल " भोगऱ्या बाजारा " विषयीदैनिक लोकमतमध्ये लिहितात." भोगऱ्या बाजारा संबंधी शहरी- नागरी समाजात अनेक गैरसमज आहेत.सर्वात मोठा गैरसमज हि कि ,या बाजारात तरूण मुलगा एका तरूण मुलीवर गुलाल टाकतो, आणि तिला पळवून नेतो.ती त्यांची बायको होते.हा समज चुकीचा आहे ."या बाजारात पुर्वी ज्या आदिवासी तरूणाला एखादी तरूणी पसंत पडली असेल,तर तो तिला 'पानाचा विडा " देत असे.सदर तरूणीचा त्या प्रस्तावाला होकार असल्यास, तो पान विडा खात असे, त्या नंतर ते दोधे जण आसपासच्या गावात पळून जात हे पळून जाणे,तसे लुटुपूटीचे असे.त्या दोघांच्या दोन्ही कुटुंबांतील जेष्ठ मंडळाच्या संमतीने विवाह केला जात असे.

3.4 पहिली पाळणा

आदिवासी जमातीत बालविवाह होत नाहीत. त्यामुळे उपवर झालेल्या विवाहीत जोडप्याला लवकर मुलंबाळं व्हावे,घरात " पहिला पाळणा" लवकर हालावा , हि आई-वडीलाची, विडलधाऱ्या माणसाची मणोधारना असते. नविवाहित जोडपेही बाळ जन्मासाठी उत्सुकत असतात.पती- पत्नी दोघांनाही पहिल्या पाळण्याच्या हलण्याची ओढ लागलेली असते. विवाहितेला लवकर मुलंबाळं न

झाल्यास, मनोकामना पुरतीसाठी नवस केले जातात.देव- देवता, कुलदैवत, आराध्य देवतेला नवस मानला जातो. आदिवासी जमातीत मुले नवसानेच होतात . अशी दृढ मनोधारणा आहे.देव- देवतांच्या-भगताच्या नवसाने मुलं झाल्याच्या भावनेने प्रसाद वाटतात.नवस पुरती झाली म्हणून गुळ वाटणे, कोंबडे - बकरे , अर्पण करणे .झाडाला कोरे वस बांधणे ,देवाला केलेला नवस फेडावा लागतो,अशी दृढ मनोभावना आहे.

आदिवासीची घरे एका खोलीची असतात.घरात सगळ्यांचा वापर असतो.त्यामुळे एकांत मिळण्याच्या जागी,जंगलात, झाडांत,गवतात, पती-पत्नी मधीलसंभोगप्रक्रीया घडते . अर्थात हा नियम नाही.त्याचे जिवन उघड्यावर असते.शारीरिक संबंध येण्यासाठी एकांताची, सोयीचा भाग पाहीला जातो.

आदिवासी जमातीत गरोदर स्त्रिची इतर स्त्रीया काळजी घेतात . डोहाळे जेवण, विश्रांती वैगरे गोष्टी आदिवासी जमातीत नसतात.गरोदर स्त्री नवव्या महिन्यांपर्यंतच नव्हे,तर बाळंतपणा पर्यंत कामात व्यस्त असते.

निसर्गाच्या सान्निध्यात, आईच्या दुधाने मुलांची वाढ होते. बाजारातून आणलेले ' भातके ' त्याचा खाऊ होय. चटणी, भाकरी,कालवन,भाजिपाला, मासे,मांस ,फळे- कंद्रमुळे त्यांच्या आहारात असतात.

3.5 आदिवासींचे उत्तर कार्य

आदिवासी जमातींच्या प्रथा, परंपरा आगळ्या वेगळ्या आहेत.संस्कृती एकसारखी असुन, थोडाफार फरक आहें. त्यांची रूढी , परंपरा , सुटसुटीत नसुन समाजाच्या सोयी प्रमाणे आहे.त्यांचे कोणलेहीं कार्य सोयी प्रमाणे असते.सामाजीक दडपणाचे बंधन नसते. परिस्थिती प्रमाणे कार्य करण्यास मान्यता असते. माणूस मेल्यानंतर त्यांचे उत्तर कार्य 12 दिवसांत व्हावे असे सामाजिक बंधन नाही.सोयीनुसार एका वर्षा पासून 14-15 वर्षांपर्यंत केव्हाही उत्तरकार्य करता येते. एकाच

घरातील दोन-तीन मृत व्यक्तीचे एकत्रिकरण करता येते. आदिवासी जमातीत उत्तरकार्याची त्यांच्या परीसरा- नुसार नावे आहेत.

1) किऱ्या:-

मृत व्यक्तीच्या नावाने विधीवत क्रिया करणे म्हणजे , " किऱ्या " होय.

2) वोरही :-

वारेही म्हणजे अखेरचे कार्य मृत व्यक्तीच्या नावाची शेवटची हाक मारणे.आदिवासी जमातींचे आराध्य- दैवत राजा पानठा यांच्या साक्षीने म्हणुन असे म्हणतात.वारेही.

3) तिजायो :-

तिजायो म्हणजे तीन दिवस चालणारा कार्यक्रम असतो.तो कार्यक्रम म्हणजे एक प्रकारचे शेवटचे लग्न समजले जाते.याअर्थाने तिजायो असे काही भागातील आदिवासी म्हणतात.

4) पान :-

उत्तरकार्याचे सर्व विधी झाडांच्या पानांवर करण्यात येतात.पळसाच्या व वडाच्या पानावर विधी करतात. जास्त प्रमाणात पळसाची पाने वापरतात.मृत व्यक्तीच्या नावाने पानांवर अन्न वाढुन आमंत्रण देने, पानांचा द्रोण करून दारूचे थेंब वाहणे, इत्यादी सर्व उत्तर कार्याचा विधी पानांवर करतात.त्यामुळे उत्तर कार्य विधीला ' पान ' हा शब्द आदिवासींमध्ये रूढ आहे.हा पारंपारिक, पूर्व पार चालत आलेली परंपरा प्रथा आहे.

संदर्भ ग्रंथ

- श्री.प्रा.डॉ. नाडगोंडे गुरुनाथ , भारतीय आदिवासी कॅाटिनेंटल प्रकाशन, पुणे, तृतीया वृत्ती,२००३.
- २) डॉ.गारे गोविंद , आदिवासींचे लोकनृत्य , प्रकाशन, पुणे,प्रथमा वृत्ती,सन १९८९ पृष्ठ ४७
- 3) श्री. कोतवाल अशोक, दैनिक लोकमत,लेख भोंगऱ्या देखणे पैशा आपु ,दि १७ मार्च २००२
- ४) श्री . संगवे विलास , आदिवासींचे सामाजिक जिवन.

सारांश:

आपण पाहिले कि," आदिवासी विवाह पध्दती- जीवन पध्दती " मानवी समाज जिवनात, मानवाच्या जगातील कोणत्याही अवस्थेत, समाज व्याक्तीला अनियंत्रित स्वातंत्र्य देत नाही.समाज जीवनात वावरताना व्याक्तीच्या वर्तनावर बंधने असतात . व्याक्तीच्या वर्तनावर नियंत्रण घालून समाजातील सर्व व्याक्तीच्या आचरणात एक प्रकारची अनुरुपता घडवून आणण्याचे काम, मानवाने निर्माण केलेल्या सामाजिक संस्था करीत असतात.विवाह, कुटुंब, मालमत्ता, धर्म,न्याय, इत्यादी.लहान मोठ्या संस्थांचे व समुहाचे बंधनप्रत्येक व्यक्तीला मानावे लागते .मानवी जीवनात विषयवासना ही शारीरिक पण सार्वत्रिक स्वरूपाची गरज आहे.विषयवासना व्याक्ती तितक्या प्रवृत्ती नुसार असते.स्त्री पुरुषांच्या वैषयीक संबंधावर नियंत्रण घालने , आवश्यक नसुन ते अत्यंत हितकारक असते.व्याक्तीचे वैषयीक वर्तन योग्य असावे , यासाठी समाजाचे जाणीवपूर्वक प्रयत्न चालू असतात.योग्य व समाज मान्य वैषयिक संबंधांचा प्रकार म्हणजे " विवाह संस्था " होय. विवाह संस्थे विषयी गिलीन म्हणतात की," स्त्री-पुरूष यांच्यात वैषयिक संबंध प्रस्थापित करण्याचा समाजमान्य मार्गम्हणजे विवाह होय.

प्रकरण- 4

" आदिवासी जमाती धर्म,देव,देव-ता,सण-उत्सव, संस्कृती वैशिष्ट्ये."

प्रस्तावना:-

मानवाने स्वतः चे अस्तित्वात दिकवण्यासाठी आणिप्रगती साधण्यासाठी अविरत धडपड करून,भोवताल-च्या पर्यावरणावर ताबा मिळवण्याचा सतत प्रयत्न केला.आजच्या विज्ञानयुगात माणूस चंद्रावर पोहोचला.नैसर्गिक आणि सामाजिक पर्यावरणाशी समन्वय साधला.प्रयत्नामुळे मानवी जीवन सुखावह होण्यास मदत होवु लागली.तरीही या प्रयत्नांनी मानवांचे प्रश्नअनिर्णितच राहिलेले आहेत.अतीवृष्टी, महापूर, रोगराईवादळ,भुकंप यांचे भीषण परिणाम माणवाला भोगावेलागतातच.

डॉ.विलास संगवे लिहितात," पर्यावरणातील समजुन न येणाऱ्या अंगाशी समन्वय साधण्यासाठी अलैकिक शक्तीचे अस्तित्वात माणून, त्यांचे सहाय्य मिळवण्यासाठी विशिष्ट आचार संहिता पाळणे या प्रमुख गोष्टींवर धर्माची उभारणी झालेली आहे.'माणवव त्याचे पर्यावरण यांमधील संबंधांविषयीच्या संकल्पनेला निश्चितच स्वरूप देणारी व प्रत्येक संस्कृतीत आढणारीश्रध्दा व आचार यांची व्यवस्था म्हणजे धर्म होय.अशी धर्माची व्याख्या केलेली आहे." दिव्य प्राण्यां-वरील श्रध्दा म्हणजे धर्म होय " अशी धर्माची सर्वात लहान व सुटसुटीत व्याख्या मानवशास्त्राचे जनक एडवर्ड टायलर यांनी केलेली आहे.

प्रा.पी.गिस्बर्ट

"मानवाचे अलैकिक प्राण्यांशी असलेले संबंध व त्यांवरील अवलंबन म्हणजे धर्म होय "

डॉ.आर.एन.मुखर्जी

" भिती ,पुज्यभाव, भक्ती,व पवित्रतेची कल्पना यावर आधारलेली आणि प्रार्थना,पुजा किंवा समर्पनयातुन अभिव्याक्त होणारी कोणत्या अतीमानवी अलै- किंक अगर समाजातील शक्तीवरील श्रद्धा म्हणजे धर्म होय."

4.1. धर्म श्रद्धेचे प्रकार

1) सर्वात्मवाद :-

अलैकिक विश्वातील दिव्य प्राण्यांचे स्वरूप व लक्षण यावरील विश्वास म्हणजे "
सर्वात्मवाद " होय. हा सर्वात्मवाद आदिवासी लोकात सर्वात प्रामुख्याने आढळतो. मानवी शरीरात
वास्तव्य करणाऱ्या मुलतत्वाला आदिवासी लोक" आत्मा " आणि मानवाच्या शरीराबरोबर पण
अलैकिक विश्वात वावरत असताना " दिव्यप्राणी " असे म्हणतात .अलैकिक विश्वातील दिव्य
प्राण्यांची संख्या अगणित असते.प्रेतात्मा,भुत,देव, इत्यादी नावांनी ओळखले जाणारे हे दिव्य प्राणी
मानवांच्या जिवनावर हुकुमत गाजवु शकतात.असे मानले जाते.म्हणुन आदिवासी लोक
पूर्वजपुजा,भुत-पुजा, देवपुजा इत्यादी पुजा करतात.

2) शक्तिवाद :-

" सर्व प्रकारच्या वस्तूत राहु शकणाऱ्या व अत्यंत विलक्षण सामर्थ्य असणाऱ्या अलौकिक शक्तीच्याअस्तित्वावरील विश्वास ही कल्पना म्हणजेच आदिवासी ' शक्तीवाद ' होय.ही शक्ती विविध नावांनी ओळखली जाते.आदिवासी जमातीतील लोक आयुध्येहत्यारे,नाव, इत्यादीतही अल्लौकिकत्व मानतात.प्रामु- ख्याने आदिभौतिक आणि भौतिक म्हणजे नैसर्गिकपर्यावरणात त्यांची श्रद्धा स्थाने असतात.आदिवासी जमातींमध्ये असलेली परंपरा,देव-देवता,सणवार, मुर्ती पुजा, लग्न पध्दती, तसेच गोंदणे,जोडवेघालणे, कुंक् लावणे, सौभाग्याची दागिने वापरणे, इत्यादी प्रथा, परंपरा हिंदू धर्माप्रमाणे असतात.

आदिवासी जमातीचा कोणताही एक विशिष्ट धर्म नाही.आदिवासी विचार प्रणाली, निसर्गाच्या सान्निध्यात, नैसर्गिक देव देवता, निसर्ग जिवनातील जगण्याची परंपरा, निकोप-निर्भेळ जीवन प्रणाली, समुह पध्दती, नैसर्गिक जीवन जगणे, आचार पाळणे, हाच आदिवासी समाजाचा मुख्य, अनादि, अनंत, "धर्म "आहे. तेच त्यांचे मुळ स्वरूप होय.

4.2 देव-देवता:-

आदिवासी जमातीतील लोकांची देवावर श्रद्धा असते.देवशीवाय देह नाही आणि दुनिया ही नाही. हे त्यांच्या जीवनात व मनात पक्के बिंबलेले असते आदिवासी जमातींच्या पाडया-पाडयातुन ग्रामदैवत आहेत.ग्रामदैवताची पुजा अर्चा होते.उत्सवही साजरे होतात. यात्रा भरते.

आदिवासी जमातींमध्ये देव-देवताची मंदिरे म्हणजे पाडया-पाडयाला छोटी,बिन खर्चाची, कुडाची असतात.अलिकडे तुरळक मारूती ची बांधलेली मंदिरे पाहावयास मिळतात.एखादया मोठ्या झाडाखाली, झाडांच्या छायेत लाकडी किंवा दगडी मूर्ती कोरलेली असते.त्याच्यावर ऊन, पावसापासून रक्षणासाठी छप्पर उभारलेले असते. गावात गावदेवता,गाविशवऱ्या,वाघ्या देव, नागदेव, चेढा, निलीचारी,अन्न देवता,आगदेव,पानदेव इत्यादी देव-देवता असतात.

वाघ्या देव :-

आदिवासी जमातींचे जीवनच जंगलात , दऱ्याखो- खोऱ्यात पुर्णतः निसर्गाच्या सान्निध्यात आहे.वंन्य प्राण्यांशी त्यांचा नेहमी संबंध येतो.वाघोबा वऱ्याचा वेळा त्यांना भेटतो.तो हीस्र प्राणी आहे.जनावारे पाळतो. वन्यप्राणी ही त्यांचे दैवत होय.म्हणून वाघदेव किंवा 'वाघाई ' त्यांची देवता आहे.

नागदेव :-

आदिवासींचे वास्तव्य जंगलात असल्यामुळे त्यांना,साप,नाग,विचु,हा भारतीय संस्कृतीत अनादिकाळा- पासुन देवता रूपात आहेत.पृथ्वीच शेषनागाच्या फडावर आहे, अशी आजही समजूत आहे.' नागपुजा' ही नागदेवतेची पुजा होय.घराच्या भिंतीवर नागांच्या, सापाच्या आकृती चितारलेल्या असतात.

भवानी-भवानीमाता :-

" कुलदैवत " पुस्तकात श्री.कृ.भा.बाबर ' भवानी, देवी - विषयी म्हणतात .' भव ' म्हणजे ' शंकर ' आणि ' भवानी, म्हणजे पार्वती होय.

आदिवासी जमातीत देवीचे रूप हे सगळ्यांचे कल्याण करणारे आहे.म्हणुन ग्रामीण , खेड्यापाड्यात आदिवासी जमातींमध्ये हि ग्रामसंरक्षक माता "भवानी" भवाई होय.आदिवासी वस्तीच्या गावात " भवानी " देवता आढळतात.त्यांलाच " भवानी " असे हि म्हणतात.

म्हसोबा :-

आदिवासींच्या गांवाच्या बाहेर असलेला दगडाचा देव म्हणजे " म्हसोबा देव " होय.सापाचे विष उतरवणे, अंगातील भुते काढले, अशा विविध विधी म्हसोबा पुढे केल्या जातात.म्हसोबा ग्रामसंरक्षक देव आहे.त्याचे ठिकाण गावाबाहेर असते.तो आकाराने लहान असतो.

4.3. सण-उत्सव

आदिवासी जमातींचे लोक विविध सण- उत्सव साजरे करतात.इतरांच्या सण- उत्सवासारखे साम्य आढळत असले, तरीही सण-उत्सव साजरे करण्याचीप्रथा, परंपरा, पध्दती हि भिन्न स्वरूपात आढळते. त्यांच्या रितीरिवाजात फरक आहे. आदिवासी जमातीतील होळी, दिवाळी, आणि दसरा हे सण वैशिष्ट्ये पुर्ण आहेत.तसेच पोळा, कवळी भाजी,बिजा, इत्यादी सण आनंदाने,समुदायाने,

घरातील, गावांतील,पाङ्या-पाङ्यातील, सामाजिक वातावरण आनंदी, प्रसन्न राहावे, जीवनातील आनंद उपभोगा,दुःखाचे, कष्टाचे,दारीद्रयाचे विस्मरण व्हावे. संगळ्याचे आयुष्य सुखा-समाधानाचे जावे, म्हणून मोठ्या उत्साहाने सण-उत्सव साजरे करतात.

होळी :-

आदिवासींच्या पाड्या-पाड्यात , गावोगावी , होळी सामुहीक रित्या साजरी करतात.ही होळी गांवाच्या बाहेर पेटवतात.कारण गावांतील वाड्या, घरे, झोपड्या साठवलेले गवत ,गुरांचा चारा इत्यादी असतात.होळी- चा सण म्हणजेच "शिमगा " साजरा करणे होय.शिकार मांसाहार,दारूपीणे,नाचणे-गाणे, जिवनाचा मनमुराद आनंद लुटण्यात " होळी " सण-उत्सव साजरा केला जाता.

होळीच्या वेळी वर्गणी गोळा केली जाते तिला "फाग" मागणे म्हणतात.होळीच्या भोवती ढोल- बासरीच्या तालावर स्त्रिया,मुली, मुले, एकमेकांच्या कमरेत हात धरून गोल फेर धरून नाचतात .नाचतपायातले घुंगरे, हातांच्या टाळ्यावरही ताल धरला जातो. होळीच्या सणात सुंदर पोषाख घालणे, गुलाल उधळणे, मद्यत बेहोश होणे,मुलामुलींचे आकर्षण मुलींना लग्नासाठी वंश करणे .समाजाची मने वळवली जातात.भोंगऱ्या नृत्यांत तोंडावर मुखवटे धारण करतात.शिरर रंगीबेरंगी रंगवितात.डोक्याला मोर पीसे बांधतात.कमरेला घुंगुर बांधतात.होळी मोठ्या उत्सा- हाने साजरी करतात.

दिवाळी:-

आदिवासी जमातींच्या लोकांचे जीवन जीतके कष्टमय , तीतकेच आनंदी असते.त्यांच्या प्रथा परंपरे प्रमाणे सण-उत्सव साजरे करतात.त्यांच्या दिवाळीचा"सण " हा हिंदू धर्मीय दिवाळीनंतर एक महिन्याच्या अंतराने सुरू होतो. त्यांची दिवाळी हि " गाव दिवाळी " असते. वेगवेगळ्या गांवाच्या दिवाळीचे दिवस वेगवेगळेअसतात.दिवाळी साजरा करण्याचा दिवस गावांतील प्रतिष्ठीत माणसे

ठरवितात.दिवाळीच्या समारंभाच्या दिवसी रात्री खाणे, पिणे संपल्यावर, वाद्यांच्या तालावर स्त्री-पुरूषांची सामुहिक नृत्य होतात.हा कार्यक्रम रात्र-भर चालतो.दिवाळी, होळी आदिवासींचे अत्यंत महत्त्वाचे सण आहेत.

दसरा:-

आदिवासी जमातीतला हा सण मोठ्या आनंदाचा होय.घटस्थापनेनंतर पहिल्यांदा माळ चढते . घरातील प्रमुख किंवा स्वतः च्या मनाने दसरा होईपर्यंत उपवास धरतात.उपवासात काही वस्तू खाण्यास निषद्ध असतात.आदिवासी जमातीतील लोक दसऱ्याच्या दिवशी हत्यारांची पुजा करतात. "काठी " संस्थानच्या ठिकाणी पूर्वीच्या संस्थानिकांचे शस्त्रे बाहेर काढतात. वर्षातुन फक्त दसरा सणालाच शस्त्रे बाहेर काढतात. घोड्यांच्या शर्यती लावल्या जातात.दसचऱ्यालाहि नृत्याच्या बेहोशीचा आनंद लुटला जातो.दसऱ्यापासुन एक प्रकारे आदिवासींच्या नृत्य गाण्यांना , ढोल बडवण्याला प्रारंभ होतो.

पोळा :-

" पोळा" हा महत्त्वाचा शेतकऱ्यांचा सण आहे.आदि-वासीचे जीवनच शेतीवर अवलंबून आहे . शेती करण्यासाठी बैल महत्वाचे असतात.बैलाना सजवणे, शिंगांना रंग लावणे,त्यांना गोड पदार्थ खाऊ घालणे,बैलांची पूजा करणे, इत्यादींसह गोडगोड खाऊन,दारू पिऊन, पोळा सण उत्साहात साजरा केला जातो. बैलांनाच रंगवितात असे नव्हे,तर बैलगाडीला देखील रंगवितात.गायी, म्हशी, शेळ्यांना ही रंगवितात.शि- गांना रंग देतात,पताका बांधतात.जशी आर्थिक परि-स्थिती तसा सण साजरा केला जातो.

4.4 . आदिवासींच्या कला

1) मुर्ती कला :-

आदिवासी जमातींचे जीवनच निसर्गाच्या सान्नि-ध्यात आहे.त्यांची मनोधारणा अशी आहे की, सर्व सृष्टीत जीवात्मा आहे.त्यांच्या दैवतांची नावं, स्थानं, प्रतीक यांना कोणतीही आकार नाही.त्यांच्या देव-देवता, उपकारक आणि उपद्रवकारक अशा दोन स्वरूपात आहेत. त्यांच्या देव-देवताचे स्वरूप,बेडैल, दगड,गोंट्याचे असते.दगडात कोरलेली वाघदेवाची मुर्ती आहे.गावा-बाहेर "विर " बसविलेले आढळतात.आदिवासी जमा-ती निराकार दगडाकडे शक्ती दैवत म्हणून पाहतात. शक्तीरूपाचे पुर्ण रूप म्हणूनच ते त्या दगडाचा स्वीकार करतात.निराकार दगड जसा कोणत्याही इतर आकाराशी संबंधित नव्हता,तशी आदिवासी मुर्ती हि कोणत्याही नमुनेदार आकाराशी संबंधित आहे.असे आदिवासी समाजाचे लोक समजत नाहीत.

2) चित्रकला :-

अनादि काळापासून, प्राचीन काळातील मानवा-च्या गृहवस्तेपासुन भिंतीवर चित्रे काढण्याची प्रथा, कला,या मानवी सवयी आहेत.विविध प्राण्यांची , वनस्पतींची चित्रे काढणे हा चित्राचा विषय होय.सारं-वलेल्या भिंतीवर स्त्रिया सुंदर नक्षीदार चित्रे काढतात. भिंती,घरांचे दरवाजे, अंगणातील रांगोळी इत्यादी ठिकाणी चित्रे असतात.आदिवासीच्या चित्रात सौंदर्य असते.पांढऱ्या रंगाने,गेरूच्या रंगाने चित्रे काढलेली असतात.

आदिवासींच्या चित्राकृतीत फुले, पक्षी, पाने,मोर- पिसे, पाऊले,झाड, चंद्र, सुर्य, प्राणी, नृत्य करणारे इत्यादी चित्रे रंगवलेली असतात.त्यांच्या चित्रकलेसाठी फार मोठा खर्च नसतो.निसरगातील चित्रे नैसर्गिक गोष्टींनी सजावट, सौंदर्या, सुंदरता निर्माण व्हावी म्हणून काढलेली असतात.

3) मुखवटे :-

आदिवासी जमातींच्या संस्कृतीत मुखवट्यांना महत्व आहे.संस्कृतीचे ते एक वैशिष्ट्यपूर्ण अंग आहे. भोवाडा, नृत्याच्या वेळी , तसेच नृत्यात मुखवटे धारण करतात.आदिवासी लोक १) शेणमाती व भाताचे साळवणे यांच्या मिश्रणाचे २) लाकडाचे ३) कागदी लगद्या-पासुन ४) बांबुचे मुखवटे तयार करतात . मुखवटे विशिष्ट पद्धतीने तयार करतात.नाक, तोंड,डोंळे,मुख-वट्यात तयार केले जातात.मुखवट्याचा मोठ्या प्रमाणात भोवाङ्यात वापर केला जातो.

4) लाकडावरील कोरीवकाम :-

शेतीची अवजारे, घरे, देव -देवता मुर्ती, मुखवटे, बैलगाडी,गाठले " बाज " , चौकटी,माळे, परिपारिक भांडी, इत्यादी साठी लाकडाचा वापर केला जातो. त्या लाकडावर कोरीव नक्षीकाम करतात.काठी संस्थानच्या हवेलीच्या खांबावर , अत्यंत सुंदर कोरीव काम केलेले आहे. जुन्या घराच्या लाकडावर घोडे,साप,वेली, पाने, फुले, घोड्यांचे रथ, नागमोडी वळणाची नक्षी इत्यादी लाकडावर कोरलेले नक्षीकाम आढळते.लग्नखांब, देवदेवतांच्या मूर्ती लाकडावर कोरलेल्या असतात.त्यांच्या लाकडावरील कोरीव मूर्ती विक्रीसाठी नसतात.त्यांच्या शिल्पकलेचे महत्व त्यांनाच वाटते.ती कला त्यांच्याचसाठी आहे.

आदिवासी जमातीतील कलाकारांनी नैसर्गिक उपलब्ध असलेल्या साधनसामग्रीचा सुंदर कलावस्तूं च्या निर्मितीसाठी उपयोग केला .माती, लाकुड, बांबू यांचा उपयोग त्यांच्या कलेसाठी, कलाकृतीसाठी करतात. धार्मिक गोष्टींशी कलेचा संबंध जोडलेला असल्यामुळे विविध वस्तू आदिवासींनी फारच चांगल्याप्रकारे,कला-कुसरीने निर्माण केलेल्या आहेत.आदिवासीनी त्यांची पारंपारिक सर्व प्रकारची कला जोपासली आहे.

संदर्भ ग्रंथ

- १) श्री. डॉ. संगवे विलास , आदिवासींचे सामाजिक जीवन, पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई, दुसरी आवृत्ती,१९७८
- २) श्री.डॉगारे गोविंद, आदिवासी लोकनृत्ये, कॅाटिनेंटल प्रकाशन पुणे, प्रथमा वृत्ती,१९८९
- 3) श्री.पाडवी विरसिंग, आदिवासी जिवन संघर्ष,
- ४) डॉ. हिवाळे अलका, आदिवासी लोक-गितातील स्त्री जीवन, कैलास पब्लिकेशन औरंगाबाद प्रथमा वृत्ती २००२
- ५) उनि.आदिवासींची लॉकनृत्ये.
- ६) उन्नि.आदिवासी जीवन संघर्ष . पृष्ठ ३१

सारांश:

वरील प्रकरणात आपण पाहिले की, आदिवासी जमाती, धर्म, देव देवता, सण- उत्सव. मानवाने स्वतः चे अस्तीत्व टिकवण्यासाठी आणि प्रगती साधण्यासाठी अविरत धडपड करून, भोवतालच्या पर्यावरणावर ताबा मिळवण्याचा सतत प्रयत्न केला .आजच्या विज्ञानयुगात माणूस चंद्रावर पोहोचला. नैसर्गिक आणि सामाजिक पर्यावरणाशी समन्वय साधला सर्व प्रयत्नांमुळे मानवी जीवन सुखकर होण्यास मदत होवु लागली . आदिवासी जमातीतील लोकांची देवावर निःस्सीम श्रद्धा असते.देवाशिवाय देहनाही आणि दुनिया ही नाही.हे त्यांच्या जीवनात व मनात पक्के असते . आदिवासी जमातींच्या पाड्या पाड्या पाड्यातुन ग्रामदैवत आहेत.ग्रामदैवताची पुजा अर्चा होते. उत्सव साजरे करतात,यात्रा भरवील्या जातात. आदिवासी जमातींचे लोक विविध सण- उत्सव साजरे करतात

सारांश:

आपण पाहिले की, आदिवासी संस्कृती ही पारंपरिक पध्दती चालत आलेली आहे.त्यांच्या चालीरीती, विवाह पध्दती, त्यांचे उत्तरकार्य,त्यांचे सण-उत्सव, त्यांच्या कला, कोरीव काम कारागीरी, नृत्य.हे आदिवासींच्या पुर्वी पासुन चालत आलेली आहे. नैसर्गिक पर्यावरणात राहणाऱ्या लोकांना कोणी जंगलाचे राजे म्हणतात तर कोणी त्यांना धरतीची लेकरे म्हणतात.यांनाच आदिवासी किंवा आदिम समाज म्हणून ही उल्लेखले जाते.विचारवंत, अभ्यासक, प्रशासक,व सामाजिक कार्यकर्ते यांनी सुध्दा या समाजाला विविध नावे दिलेली आहेत. रिसले,लॅस्सी,एल्विन,माॅर्टिन, यांनी या आदिवासी लोकांना अगदी प्राचीन, किंवा अगदी मुळचे रहिवासी असे म्हटले आहे.

मानवी समाज जीवनात सामाजिक समुहात कुटुंब एक मुलभूत आणि प्राथमिक स्वरूपाचा सामाजिक समुह आहे मानवी समाज जीवनात विषयवासना ही शारीरिक पण सार्वत्रिक स्वरूपाची गरज आहे. विषयवासना व्याक्ति तितक्या प्रवृत्ती नुसार असते. स्त्री- पुरुषांच्या वैयक्तिक संबंधांवर नियंत्रण घालणे. हे विवाह संस्थेचे मुख्य कार्य आहे.आदिवासी जमातीत विवाह संस्थेला महत्वाचे स्थान आहे. आदिवासी जमातींच्या प्रथा, परंपरा आगळ्यावेगळ्या आहेत.संस्कृती एकसारखी असुन,थोडा फार फरक आहे.त्यांची रूढी, परंपरा, सुटसुटीत असुन, समाजाच्या सोयी प्रमाणे आहेत.सामाजीक दडपणाचे बंधन नसते.परस्थिती प्रमाणे कार्य करण्यास मान्यता असते.आदिवासी जमातीचा कोणत्याही एक विशिष्ट धर्म नाही.आदिवासी जमातीतील लोकांची देवावर श्रध्दा असते.देवासीवाय देह नाही आणि दुनिया ही नाही.हे त्यांच्या जीवनात व मनात बिंबवले आहे. आदिवासी जमातींचे लोक विविध सण-उत्सव साजरे करतात.

संदर्भ ग्रंथ सुची

- १) श्री.प्रा.डॉ. नाडगोंडे- भारतीय आदिवासी.
- २) श्री.डॉ. गारे गोविंद आदिवासी कला .
- ३) श्री.डॉ. गारे गोविंद आदिवासींची लोखनृत्ये.
- ४) सौ. देवगावकर शैलजा- आदिवासी विश्व.
- ५) श्री.प्रा.डॉ.पगारे म.सू- पावरा लोकगीतातील लोकसंस्कृती.
- ६) डॉ.सी.देवगावकर शैलजा- महाराष्ट्रातील आदिवासींचे लोकसाहित्य.
- ७) डॉ.हिवाळे अलका आदिवासी लोकगितातील स्त्री जीवन.
- ८) डॉ.संगवे विलास आदिवासींचे सामाजिक जीवन.
- ९) श्री.प्रा.डॉ.सुनिल मायी समाजशास्त्र.
- १०) श्री.साळुंखे आ.ह- हिंदू संस्कृती आणि स्त्री.
- ११) श्री.पाडवी विरसिंग-आदिवासी जीवन संघर्ष
- १२) डॉ.बाबर सरोजिनी आदिवासींचे सण आणि उत्सव.
- १३) श्री.डॉ.गारे गोविंद सातपुड्यातील भिल्ल.

दैनिके:- लोकमत, सुकाळ ,देशदुत.



मुंबई विद्यापीठ

सोनोपंत दांडेकर कला, वा. श्री. आपटे वाणिज्य आणि एम. एच.

विद्यालय

मेहता विज्ञान महाविद्यालय पालघर ४०९४०४

प्रबंध एम ए इतिहास भाग २

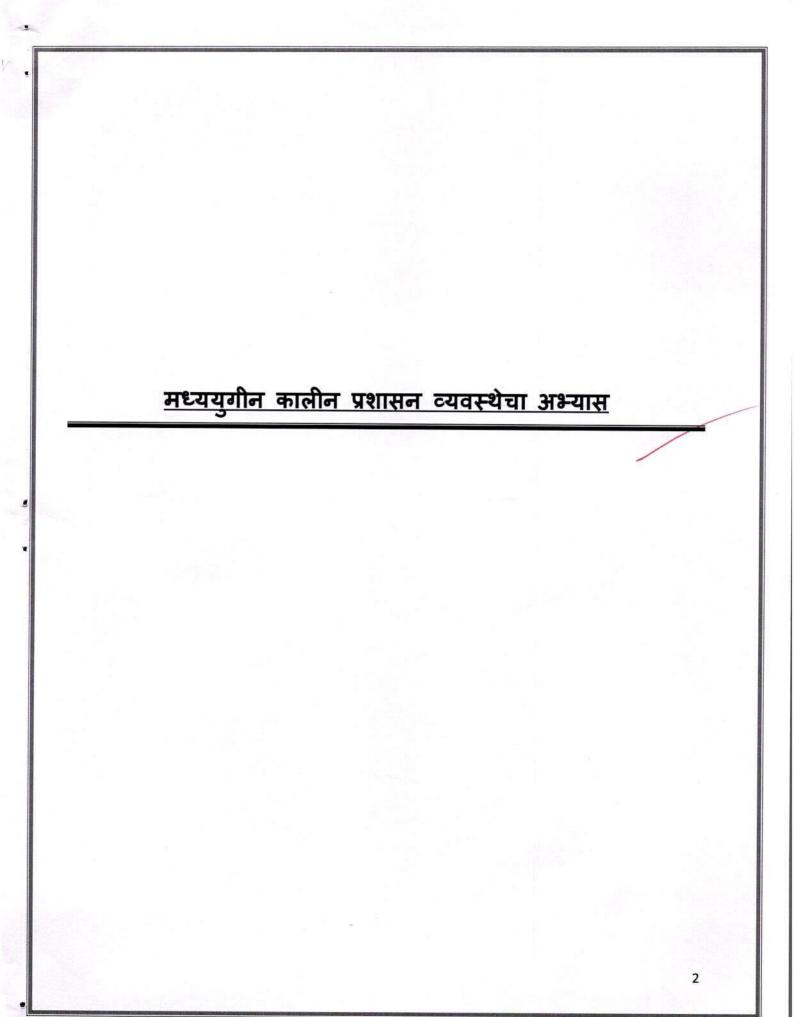
शैक्षणिक वर्ष २०२२ २०२३

संशोधक - धानवा सपना संतोष

मार्गदर्शक - प्रा. रामदास येडे सर

इतिहास विभाग

Ruele



प्रमाणपत्र

प्रमाणित करण्यात येते की, एम ए इतिहास भाग २ सत्र ४ या अभ्यासक्रमाचा भाग म्हणून **धानवा** सपना संतोष हजेरी क्र. ५६०३२ हिने सन २०२२ - २०२३ या शैक्षणिक वर्ष प्रबंधाचे नाव मध्ययुगीन कालीन प्रशासन व्यवस्थेचा अभ्यास

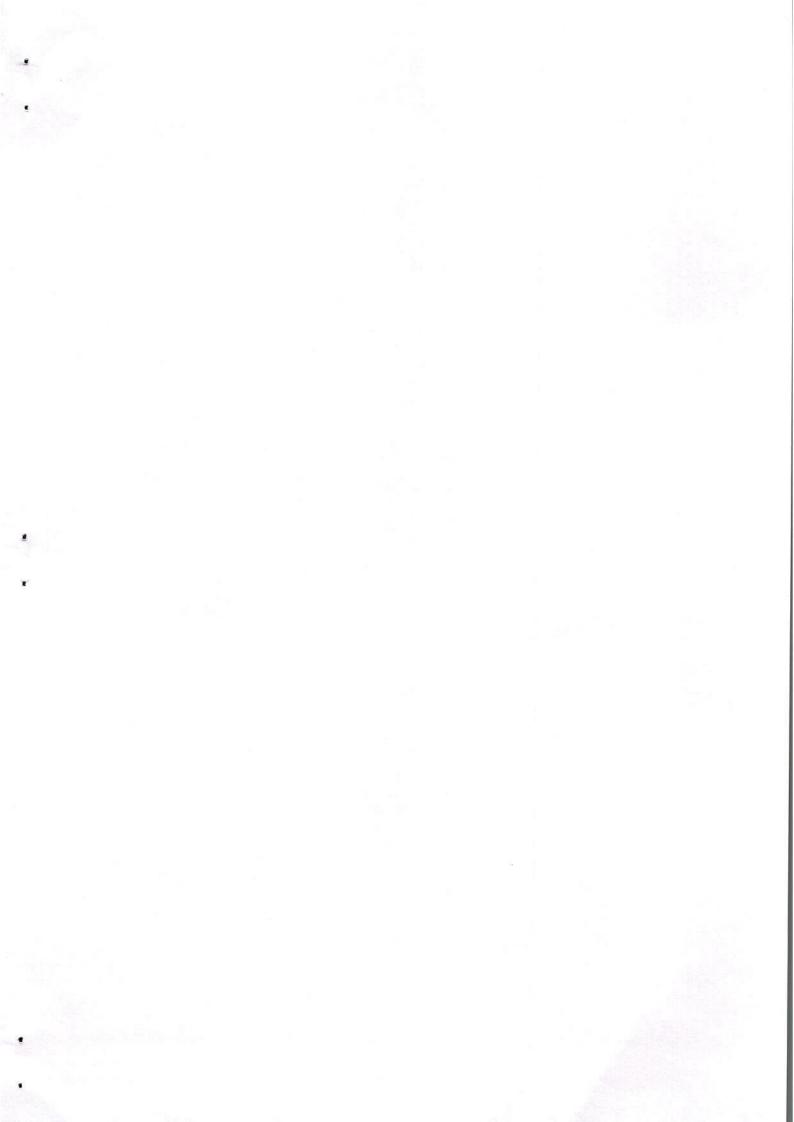
या विषयावर संशोधन कार्य समाधानकारक पणे केलेले आहे त्यासाठी तिने अनिवार्य असलेले वैयक्तिक मार्गदर्शन ही घेतलेले आहे. या संशोधन कार्यात घेतलेल्या संदर्भ साहित्याचा निदर्श या अहवालात केला आहे.

प्रा.रामदास येडे सर

प्रा. किरण सावे सर

मार्गदर्शनाखाली

प्राचार्य



प्रतिज्ञापत्र

मी धानवा सपना संतोष सादर करते की सोनोपंत दांडेकर कला, वा. श्री. आपटे वाणिज्य आणि एम. एच. मेहता विज्ञान महाविद्यालय, पालघर यांनी आयोजित केलेल्या एम. ए. इतिहास भाग -२ सत्र- ४ या अभ्यासक्रमासाठी प्रस्तुत कार्यवाही मी स्वतः केलेली आहे असे प्रतिज्ञा पूर्वक घोषित करते.

संशोधकाची सही

धानवा सपना संतोष

<u>प्रबंध</u>

विषय - मध्ययुगीन कालीन प्रशासन व्यवस्थेचा अभ्यास

संशोधक - धानवा सपना संतोष

प्रा. रामदास येडे सर यांच्या मार्गदर्शनाखाली

एम. ए इतिहास भाग - २ सत्र-४

सोनोपंत दांडेकर कला, वा. श्री. आपटे वाणिज्य आणि

एम. एच. मेहता विज्ञान महाविद्यालय पालघर ४०९४०४

शैक्षणिक वर्ष २०२२ - २०२३

विशेष आभार / ऋणनिर्देश

एम. ए. इतिहास भाग- ॥ सत्र । ४ या अभ्यासक्रमाचा भाग म्हणून हा संशोधन प्रबंध सोनोपंत दांडेकर कला, वा. श्री. आपटे वाणिज्य आणि एम. एच. मेहता विज्ञान महाविद्यालय सादर करताना मला अनेक व्यक्तींचे सहकार्य लाभले सर्वप्रथम या प्रबंध लेखनाच्या एकंदरीत प्रक्रियेत मला वेळोवेळी आपले अनमोल मार्गदर्शन व सहकार्य लाभले त्यासाठी मी इतिहास विभाग प्रमुख प्रा. रामदास येडे यांचे आभार मानतो.

संशोधनासाठी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्षरीत्या माझे मित्रमैत्रीणी, महाविद्यालयातील वाचनालयातील कर्मचारी वर्ग आपण सर्वांनी मला खूप मोलाची मदत केली त्याबद्दल मी आपले ऋणी आहे. आपण केलेल्या सहकार्यामुळे हा प्रबंध पूर्ण होऊ शकला त्यासाठी सच आभारी आहे.

सपना संतोष धानवा

(संशोधक)

<u>अनुक्रमणिका</u>

| क्रमाांक | घटकाचे नाव | पान नंबर | |
|----------|--|------------------|--|
| 1) | प्रमाणपत्र | 3 | |
| 2) | प्रतिज्ञा पत्र | प्रतिज्ञा पत्र 4 | |
| 3) | प्रबंध | 5 | |
| 4) | अभार प्रदर्शन | 6 | |
| | प्रकरण 1. मराठा कालीन प्रशासन व्यवस्था 1.1 उद्दिष्टे 1.2 प्रस्तावना 1.3 मराठाकलीन केंद्रीय व प्रांतीय प्रशासन 1.4 सारांश 1.5 संदर्भ | 8-28 | |
| 5) | प्रकरण 2. सुलतान शाही काळातील प्रशासन व्यवस्था 2.1 उद्दिष्टे 2.2 प्रस्तावना 2.3 सुलतान शाही कालीन केंद्रीय प्रशासन 2.4 सुलतान शाही कालीन प्रांतीय प्रशासन 2.5 सुलतान शाही कालीन स्थानिक प्रशासन 2.6 सारांश 2.7 संदर्भ | 29-39 | |
| 6) | प्रकरण 3. विजय नगर कालीन प्रशासन व्यवस्था 3.1 उद्दिष्टे 3.2 प्रस्तावना 3.3 विजयनगर साम्राज्याची स्थापना 3.4 विजयनगर कालीन प्रशासन व्यवस्था 3.5 सारांश 3.6 संदर्भ | 40-51 | |
| 7) | सारांश | 52 | |
| 8) | संदर्भ | | |

प्रकरण 1. मराठा कालीन प्रशासन व्यवस्था

उद्दिष्टे प्रस्तावना मराठाकलीन केंद्रीय व प्रांतीय प्रशासन राजपद अष्टप्रधान मंडळ अष्टप्रधान मंडळाचे कार्य अठरा कारखाने बारा महल सारांश

संदर्भ

उद्दिष्ट्ये

- मराठ्यांच्या कालखंडातील राजपदाची प्रशासनातील भूमिका समजून घेणे.
- मराठ्यांच्या प्रशासनातील अष्टप्रधान मंडळाचे कार्य समजून घेणे..
- मराठ्यांच्या प्रशासनातील प्रांत व जिल्ह्यांची प्रशासकीय रचना जाणून घेणे.
- मराठ्यांच्या प्रशासनातील देशमुख व देशपांडेची भूमिका जाणून घेणे.
- मराठ्यांच्या प्रशासनातील कमाविसदार व मामलेदाराची भूमिका जाणून घेणे.
- मराठ्यांच्या प्रशासनातील दरखदाराची भूमिका जाणून घेणे.
- मराठ्यांच्या प्रशासनातील विविध अधिकार पदांचे महत्व समजून घेणे.

प्रस्तावना

हिंदवी स्वराज्याचे संस्थापक समजले जाणारे छत्रपती शिवाजी महाराज होते. त्याच बरोबर ते उत्कृष्ठ प्रशासन निर्मातेही होते. त्यांना माहित होते की साम्राज्य उभारण्यासाठी, टिकविण्यासाठी व विस्तारीत करण्यासाठी उत्तम प्रशासनाची गरज असते. ही गरज लक्षात घेऊनच त्यांनी आपली उत्तम प्रतीची प्रशासन व्यवस्था निर्माण केली होती. म्हणूनच मध्ययुगीन भारताच्या इतिहासात जे उत्कृष्ट राज्यकर्ते व प्रशासक होऊन गेले त्यामध्ये शिवाजी महाराजांच्या आवर्जून उल्लेख केला जातो.प्रस्तृत प्रकरणात आपण शिवाजी महाराजांच्या कारकिर्दी पासुन मराठा सतेच्या अस्तापर्यंत मराठ्याची केंद्रिय व मुलकी प्रशासन व्यवस्था कशी होती या बाबतची माहिती पहाणार आहोत... या माहितीमध्ये मराठ्यांच्या प्रशासनातील राजपद, अष्टप्रधान मंडळ अधिकारी आदी बाबतची माहिती असणार आहे.

राजपद

मराठ्यांच्या केंद्रिय प्रशासनाती सर्वोच्य पद म्हणजे राजपद होय. या पदाच्या निर्मितीवर हिंदूग्रंथ, श्रुती, स्मृती, शुऋनीचा प्रभाव जाणवतो. तसेच चाणक्यनीतीचा प्रभाव जाणवतो. शुक्राचार्याने आपल्या शुक्रनीती या ग्रंथात राजाची वैशिष्ट्ये सांगितली आहेत. "स्वधर्माचे पालन करणारा. प्रजेचे संरक्षण करणारा, शत्रुला जिंकणारा, दानधर्म करणारा क्षमाशील, शूर, निःस्पृही व वैराग्यशील राजा शेवटी मोक्षाला जातो" ही सर्व वैशिष्ट्य आपणास शिवाजी महाराजांमध्ये दिसतात. यावरुन से दिसते की मराठ्यांच्या राजपदावर शुऋनीतीचा जास्त प्रभाव जाणवतो.

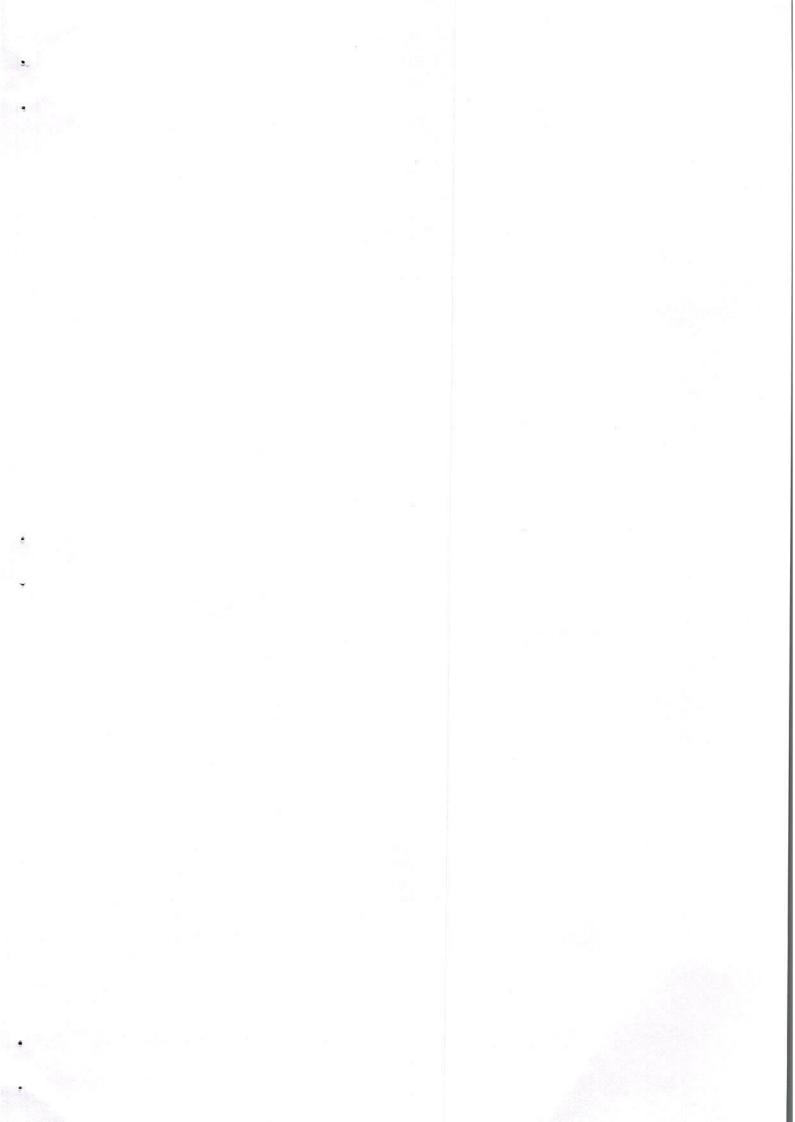
सतेच्या केंद्रबिंद

अ) मराठ्यांच्या प्रशासनातील राजा हा राजयंत्रणेचा केंद्रबिंदू होता. राजाच्या नियंत्रणाखाली अष्ट प्रधान मंडळ, १८ कारखाने, १२ महल, सर्व सचिव अधिकारी, सैन्य, आरमार होते. प्रशासनातील अधिकाऱ्यांच्या नियुक्त्या करणे, बढत्या करणे व अधिकाऱ्यांना बडतर्फ करण्याचे अधिकार राजाला असत. मराठा साम्राज्यात अधिकाऱ्यांना स्वतंत्र वागण्याची परवानगी होती. परंतु हे अधिकारी राजालाच जबाबदार असत.

ब) राजाची कर्तव्य :

प्रशासनातील राजा हा सर्वोच्यपदी असल्याने राजाला वेगवेगळी कर्तव्ये बजावावी लागत होती. हीकर्तव्य खाली नमुद करण्यात आली आहेत.

- १. साम्राज्याचे संरक्षण करणे.
- २ साम्राज्यात शांतता व सुव्यवस्था निर्माण करणे,
- ३ साम्राज्यातील प्रजेचे पालनपोषण करणे.
- ४ साम्राज्यातील भेदभावना पायबंद घालणे.



अष्टप्रधान मंडळ

मराठ्यांच्या प्रशासनातील अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटक म्हणून अष्टप्रधान मंडळाकडे पाहिले जाते. साम्राज्याचा राज्यकारभार व्यवस्थीत चालावा म्हणून शिवाजी महाराजानी अष्टप्रधान मंडळाची नियुक्ती केली होती. हे अष्टप्रधान मंडळ पुढे मराठा सत्तेच्या विकासापासून उत्कर्षापर्यंत व पेशवाईच्या अस्तापर्यंत सुरु होते. मात्र बदलत्या परिस्थितीला अनुसरून यात बदल होत गेले. अष्टप्रधान मंडळाची निर्मिती शिवाजी महाराजाने कोणत्या प्रेरणेतून घेतली या बाबत इतिहासकारात मतभेद आहेत. ही प्रेरणा रामायण, महाभारत, मनुस्मृती व शुक्रनीतीपासून घेतली असावी असे काही इतिहासकारांचे मत आहे इतिहासकार शेजवलकर, वा. कृ. भावे यांच्या मते, शिवाजी महाराजांनी ही प्रेरणा शुक्रनीतीतून उचलली असावी. परंतू अगदी अलीकडचे संशोधक लक्ष्मणशास्त्री जोशी यांच्या मते, शिवाजी महाराजांनी आपल्या मंत्रिमंडळाच...

| अ.क्र | पद | प्रधानाचे नाव | |
|----------|-----------------------|-------------------------------|--|
| 8 | मुख्य प्रधान (पेशवा) | मोरोत्रिंबक (मोरोपंथ) | |
| २ | अमात्य (मुजूमदार) | नारो नीलकंठ व रांचंद्र नीलकंठ | |
| 3 | सेनापती | हंबीरराव मोहिते | |
| 8 | सचिव (सुरमिस) | अण्णाजी दत्तो | |
| 4 | मंत्री (वाकनिस) | दत्ताजी त्रिंबक | |
| ξ | पंडितराव | रघुनाथपंत | |
| l9 | सुमंत (डबीर) | रामचंद्र त्रिंबक | |
| ۷ | न्यायाधीश | निराजी रावजी | |

अष्टप्रधान मंडळाचे कार्य

मराठा साम्राज्याच्या प्रशासनाची घडी सुव्यवस्थीत बसावी या उद्देशाने शिवाजी महाराजांनी अष्टप्रधान मंडळाची निर्मिती केली होती. वरील मुद्यात आपण अष्टप्रधान मंडळाची निर्मिती कशी झाली तसेच या मंडळातील पदे व या पदांवर काम करणाऱ्या व्यक्तींची नावे या बाबतची माहिती पाहिली आहे. या मुद्यात आपण अष्टप्रधान मंडळाच्या कार्यपद्धतीचा आढावा घेणार आहोत.सातारकर छत्रपतींच्या दप्तरखान्यात अष्टप्रधान मंडळाची कामे कोणती या विष...अमात्य (मुजुमदार) मराठ्याच्या अष्टप्रधान मंडळातील अर्थ खात्याशी संबधीत हे पद होते. शिवाजी

महाराजांच्या राजवटीत या पदावर नारो निळकंठ व रामचंद्र निळकंठ संयुक्तरीत्या काम करतहोते.अष्टप्रधान मंडळातील या विभागावर काम करणाऱ्या व्यक्ताला अर्थमंत्र्यांचा दर्जा होता. या पदावर काम करणाऱ्या व्यक्तीला पुढील प्रकारचे कार्य करावे लागत होते.

- राज्यातील सर्व जमा-खर्चाच्या व्यवहारावर देखरेख ठेवणे.
- राज्यातील लष्करी व मुलकी खात्याचे हिशेब पाहणे...
- राज्यातील सर्व किल्ल्यांचे हिशेब पहाणे.
- सर्व प्रांतातील जमा-खर्चाचे तक्ते पहाणे.
- राज्यातील सर्व दप्तरदार व फडणीस यांच्यावर देखरेख ठेवणे.

१. मुख्य प्रधान (पेशवा)

मराठ्यांच्या अष्टप्रधान मंडळातील सर्वोच्य मंत्रीपद म्हणून मुख्य प्रधान पदाला महत्त्व होते. हे पद शिवाजी महाराजांच्या राजवटीत मोरो त्रिंबकांकडे होते. शिवाजी महाराजानंतर मराठा साम्राज्यावर यांचाच अधिकार चालत असे. या पदावर काम करणाऱ्या व्यक्तीला पुढील प्रकाचे कार्य करावे लागत असे.

- मुलकी व लष्करी खात्यावर देखरेख ठेवणे.
- राज्यकारभार सुव्यवस्थीतपणे चालला आहे किंवा नाही हे पहाणे.
- राज्यात शांतता व सुव्यवस्था राखणे...
- प्रसंगी मोहिमा काढून युद्ध चालविणे.

२.अमात्य (मुजुमदार) :

मराठ्याच्या अष्टप्रधान मंडळातील अर्थ खात्याशी संबधीत हे पद होते. शिवाजी महाराजांच्या राजवटीत या पदावर नारो निळकंठ व रामचंद्र निळकंठ संयुक्तरीत्या काम करत होते. अष्टप्रधान मंडळातील या विभागावर काम करणाऱ्या व्यक्ताला अर्थमंत्र्यांचा दर्जा होता. या पदावर काम करणाऱ्या व्यक्तीला पुढील प्रकारचे कार्य करावे लागत होते.

- राज्यातील सर्व जमा-खर्चाच्या व्यवहारावर देखरेख ठेवणे.
- राज्यातील लष्करी व मुलकी खात्याचे हिशेब पाहणे...
- राज्यातील सर्व किल्ल्यांचे हिशेब पहाणे.
- सर्व प्रांतातील जमा-खर्चाचे तक्ते पहाणे.
- राज्यातील सर्व दप्तरदार व फडणीस यांच्यावर देखरेख ठेवणे.

३. सेनापती (सरलष्कर):

मराठ्यांच्या अष्टप्रधान मंडळातील लष्कर खात्याशी संबधीत हे पद होते. शिवाजी महाराजांच्या राजवटीत या पदावर हंबीरराव मोहिते काम करत होते. या पदावर काम करणाऱ्या व्यक्तीला सेनापती पदाचा दर्जा होता. या पदावर काम करणाऱ्या व्यक्तीला पुढील प्रकारचे कार्य करावे लगत होते.

- सैनिकाची चांगल्या प्रकारची व्यवस्था ठेवणे.
- राजा आज्ञेनुसार युद्धमोहिमा काढून त्याचे नेतृत्व करणे...
- युद्धांत जिंकलेल्या नवीन प्रदेशांची व्यवस्था ठेवणे..
- सेनेचे रक्षण करणे.

४ सचिव (सुरनिस) :

मराठ्यांच्या अष्टप्रधान मंडळातील पत्रव्यवहार खात्याशी संबधीत हे पद होते. शिवाजी महाराजांच्या राजवटीत या पदावर अण्णाजी दत्तो काम करत होते. या पदावर काम करणाऱ्या व्यक्तीला सचिव पदाचा दर्जा होता. या पदावर काम करणाऱ्या व्यक्तीला पुढील प्रकारचे कार्य करावे लागत होते

सरकारी दप्तरावर देखरेख ठेवणे.

- सरकारी खात्याच्या दप्तरांची व्यवस्था नीट व शिस्तवार ठेवणे.
- साम्राज्यांतर्गत व साम्राज्यबाहय येणाऱ्या व जाणाऱ्या पत्रांची, खिलतांची तपासणी करणे, त्यांचा आशय समजून घेणे.
- पत्रे खलिते, हवालपत्रे, इनामपत्रे, सनदा इत्यादींच्या नोंदी ठेवणे.
- सरकारी कागदपत्रांवर सहया करणे.
- महाल परगण्याचा हिशेब तपासून त्यावर संमत असे लिहणे.
 प्रसंगी युद्धात सेनेचे नेतृत्व करणे.

५ मंत्री (वाकनीस)

मराठ्यांच्या अष्टप्रधान मंडळातील हे एक स्वतंत्र पद असून या प...सुमंत (डबीर)मराठ्यांच्या अष्टप्रधान मंडळातील परराष्ट्र खात्याशी संबधीत हे पद होते. शिवाजी महाराजांच्याराजवटीत या पदावर रामचंद्र त्रिंबक काम करत होते. या पदावर काम करणाऱ्या व्यक्तीलापरराष्ट्र मंत्र्यांचा दर्जा होता. या पदावर काम करणाऱ्या क्यक्तीला पुढील प्रकारचे कार्य करावे लगत होते.

- परराष्ट्रीय व्यवहारांची देखरेख ठेवणे.
- परराज्यांबरोबर संबंध ठेवणे.
- परराज्यातील दूतांच्या व्यवस्थेची जबाबदारी सांभाळणे
- आपल्या साम्राज्याची इभ्रत व दर्जा वाढविणे.

६ पंडितराव

मराठ्यांच्या अष्टप्रधान मंडळातील धार्मिक खात्याशी संबधीत हे पद होते. शिवाजी महाराजांच्या राजवटीत या पदावर रघुनाथपंत काम करत होते. या पदावर काम करणाऱ्या व्यक्तीला धर्म मंत्र्याचा दर्जा होता. या पदावर काम करणाऱ्या व्यक्तीला पुढील प्रकारचे कार्य करावे लागत होते.

- धार्मिक बाबतीत निर्णय देणे.
- विद्वानाचा साधुसंतांचा आदर-सत्कार करणे.

• धर्मशास्त्रानुसार न्याय देणे.

सुमंत (डबीर)

मराठ्यांच्या अष्टप्रधान मंडळातील परराष्ट्र खात्याशी संबधीत हे पद होते. शिवाजी महाराजांच्या राजवटीत या पदावर रामचंद्र त्रिंबक काम करत होते. या पदावर काम करणाऱ्या व्यक्तीला परराष्ट्र मंत्र्यांचा दर्जा होता. या पदावर काम करणाऱ्या व्यक्तीला पुढील प्रकारचे कार्य करावे लगत होते.

- परराष्ट्रीय व्यवहारांची देखरेख ठेवणे.
- परराज्यांबरोबर संबंध ठेवणे.
- परराज्यातील दूतांच्या व्यवस्थेची जबाबदारी सांभाळणे

न्यायाधीश

मराठ्यांच्या अष्टप्रधान मंडळातील न्याय खात्याशी संबधीत हे पद होते. शिवाजी महाराजांच्या राजवटीत या पदावर निराजी रावजी काम करत होते. या पदावर काम करणान्या व्यक्तीला कायदे मंत्र्याचा दर्जा होता. या पदावर काम करणाऱ्या व्यक्तीला पुढील प्रकारचे कार्य करावे लागत होत दिवाणी व फौजदारी न्यायदान योग्य पद्धतीने होते किंवा नाही हे पहाणे..

- गोतसभा अथवा सरकारी अधिकाऱ्यांनी केलेला न्याय निवाडा योग्य आहे किंवा नाही हे पहाणे.
- जमीनीचे हक्क आपल्या समंतीने, सहीने जाहिर झाले आहेत किंवा नाही हे तपासणे...

सचिव

मराठ्यांच्या केंद्रिय प्रशासनातील मंत्रालय हा एक महत्त्वपूर्ण भाग होता. शिवकाळात मंत्रालयाला अष्टप्रधान मंडळाची कचेरी असेही म्हटले जात असे. या मंत्रालयामध्ये काम करणाऱ्या अधिकान्याला सचिव असे म्हटले जात होते. डॉ. सेन म्हणतात, "मंत्रीमंडळापेक्षा बाहेरच परंतू मंत्र्यापेक्षा कोणत्याही प्रकारे किनष्ठ न समजले जाणारे अधिकारी म्हणजे सचिव होय." मंत्रालयात या कालखंडात एकूण २१

सचिव कार्यरत होते. या सचिवांमध्ये दिवाण हिशेबनीस, फडणीस, दप्तरदार, कारखानीस, चिटणीस, खजिनदार, पोतनीस यांचा समावेश होता.

आठरा कारखाने

मराठ्यांच्या नियंत्रणाखाली असणाऱ्या कारखाण्यांवर देखरेख करण्याची प्रशासकीय जबाबदारी ही अष्टप्रधान मंडळाची होती. असे जरी असले तरी मराठ्यांच्या नियंत्रणाखाली जे आठरा कारखाने होते त्या कारखान्यांवरील प्रमुख हा कारखानीस असे. डॉ. सेन यांनी या सर्व कारखानीसांची कामे काय होती हे निश्चित सांगता येणार नाही. असे म्हटले आहे. असे जरी असले तरी कारखान्याच्या प्रकारावरुन त्यांच्या स्वरुपाची कल्पना साधारणतठ येते. असे म्हटले आहे

बारा महल

मराठ्याने आपल्या राज्यकारभाराचे आठरा कारखाने व बारा महलामध्ये विभाजन केले होते. ज्या प्रमाणे कारखान्याच्या कारभाराची जबाबदारी कारखानीसवर देण्यात आली होती. तशी महाला बाबतची जबाबदारी कोणावर देण्यात आली होती याची खात्रीलायक माहिती नाही. मात्र राजाचे खाजगी नोकरच याचे प्रमुखपद सांभाळत होते असा संदर्भ आहे.

प्रांत व जिल्हे

मराठ्यांच्या प्रशासनामध्ये ज्याप्रमाणे केंद्रिय प्रशासन व्यवस्थेला महत्त्व होते. त्याच प्रमाणे प्रातीय प्रशासन व्यवस्थेला सुद्धा महत्त्व होते. प्रशासनीय गरज लक्षात घेवून स्वराज्याची विभागणी विविध प्रांतात करण्यात आली होती. मल्हार रामराव चिटणीस यांनी शिवाजी महाराज्यांच्या स्वराज्याचे एकूण चौदा प्रांत नमुद केले आहेत. रानडे यांनीही थोड्याफार फरकाने प्रांताचे चौदा भाग सांगितले आहेत. या प्रातांची माहिती पुढे सांगितली आहे.

- १. प्रांत मावळ मावळ, सासवड, जुन्नर खेड व १८ किल्ले.
- २. प्रांत बाई सातारा आणि कराड सध्याच्या साताऱ्या जिल्ह्याचा पश्चिम भाग व १५ किल्ले.
- 3. प्रांत पन्हाळा सध्याच्या कोल्हापूरचा भाग व १३ किल्ले.

देशमुख व देशपांडे

मराठ्यांच्या प्रांतिक प्रशासनातील हे दोन महत्त्वपूर्ण अधिकारी शिवकाळात जरी प्रशासनात या अधिकाऱ्यांना स्थान नसले तरी शिवपूर्वकाळ व पेशवाईच्या कालखंडामध्ये या अधिकाऱ्यांना प्रांतिक प्रशासनात महत्त्वाचे स्थान होते. देशमुख व देशपांड्यांना जिमनदार असे म्हणत. या दोन्ही अधिकान्यांचे प्रांताप्रमाणेच खेडेगावातही नियंत्रण चालत असे. पेशवेकाळात तर हे अधिकारी सामान्य रयतेचे मित्र व हितकर्ते म्हणून ओळखले जावू लागले. देशमुख व देशपांड्यांना पुढीलप्रकारचे हक्क होते.

- १. प्रत्येक गावातील अबकारी उत्पन्नापैकी १०० पैकी २ रुपये देशमुखाना व १ रुपया देशपांडयांना द्यावा.
- २. सरकारातून येणारा शिरपाव प्रथम देशमुखाना व नंतर देशपांड्यांना द्यावा,
- 3. वतनाच्या कागदपत्रावर प्रथम देशमुखांनी व नंतर देशपांड्यांनी सही करावी.
- ४. सरकारी अधिकाऱ्यांनी पहिल्यादा देशमुखाना भेटा...

<u>कमाविसदार</u>

मराठ्यांच्या प्रशासनात मुलकी अधिकाऱ्यात कमाविसदारांचा भरणा जास्त असे. त्यांच्या ताब्यात एक गाव कधी अनेक गावे तर कधी संपूर्ण परगणा असे. कमाविसदाराला त्याच्या ताब्यात असणाऱ्या प्रदेशाच्या उत्पन्नाच्या ४% मेहनताना मिळत असे. त्याला सालाना ८०० रुपये इतके वेतनही मिळते असे, कमाविसदार मामलेदाराच्या नियंत्रणाखाली काम करत असे.. कमाविसदाराला पुढील प्रकारची कामे करावी लागत होती

जमीन महसूल विषक कामे करणे रायतेच्या कल्याणकडे लक्ष देणे

पंचायतीच्या सदस्याच्या नियुक्त्या करणे

दरखदार

मराठ्यांच्या प्रांतीक प्रशासनातील दरखदार हा एक महत्वपूर्ण अधिकारी होता प्रांतातील कमाविसदार व मामलेदार यांच्यावर अप्रत्यक्ष देखरेख ठेवण्यासाठी दरखदार या अधिकाऱ्यांची नियुक्ती केली जात असे. प्रांताच्या सर्व विभागांवर देखरेख ठेवण्याचे काम त्याच्याकडे असे. त्याची नियुक्ती सरकारकडून होत असे. त्यामुळे त्याला अधिकाराहून दूर करण्याचा अधिकार कमाविसदार अथवा मामलेदाराला नसे.

दरखदाराला पुढील प्रकारची कामे करावी लागत असत.

- कमाविसदाराच्या कामकाजाकडे लक्ष ठेवणे.
- मामलेदाराच्या कामकाजाकडे लक्ष ठेवणे..
- प्रांतातील सैन्य व्यवस्थेकडे लक्ष ठेवणे.

कुलकर्णी

ग्रामातील दुसरा महत्त्वपूर्ण अधिकारी म्हणजे कुलकर्णी मात्र तो पाटलापेक्षा दुय्यम दर्जाचा मुलकी अधिकारी होता. तो पाटलास मदतनीस म्हणून कम पहात असे. त्याला पुढील प्रकारची कामे करावी लागत असत.

- ग्रामातील सर्व प्रकारच्या जमीनीच्या नोंदी ठेवणे...
- प्रत्येक व्यक्तींच्या नावावर असणाऱ्या जमीनीच्या महसूलाचा जमाखर्च ठेवणे.
- ग्रामाच्या लावणी संचणीकडे लक्ष देणे

सारांश

मराठ्यांच्या प्रशासन व्यवस्थेचा अभ्यास करताना सर्व प्रथम प्रशासन व्यवस्थेचे केंद्रिय प्रातीय असे दोन महत्त्वपूर्ण भाग जाणून घेतले. या दोन भागातून आपण प्रशासनातील हुद्दे व अधिकारी या बाबतची माहिती पाहिली. मराठ्यांच्या प्रशासनातील राजपद हे सर्व श्रेष्ठ पद कसे आहे, या पदाचे महत्त्व काय आहे. या पदाच्या जबाबदाऱ्या काय आहेत, या राजपदावर कोणत्या व्यक्तीने अधिराज्य गाजवले. व या

पदाचे प्रशासनातील स्थान काय आहे, आदीबाबत माहिती पाहिली. मराठ्यांच्या प्रशासनातील श्रेष्ठ मंत्रिमंडळ म्हणुन अष्टप्रधान मंडळाकडे पाहिले जाते. अष्टप्रधान मंडळातील मुख्य प्रधान, अमात्य, सेनापती, सचिव, मंत्री, पंडितराव, सुमंत, न्यायाधीश, याचे स्थान, महत्त्व व कामगिरी आदिबाबतची माहिती पाहिली. सचिव हा प्रशासनातील मंत्रीमंडळाच्या तोडीचा अधिकारी आहे व त्याचे प्रशासनातील स्थान व कामगिरी महत...

संदर्भ

- १. वा. सी. बेंद्रे श्री छत्रपती शिवाजी महाराज (उत्तरार्ध)
- २. गो. स. सरदेसाई पेशवे दप्तरातून निवडलेली कागदपत्रे.
- 3. डॉ. जयसिंगराव पवार मराठी सतेचा उदय -
- ४. डॉ. सोमनाथ रोडे मराठ्यांच्या इतिहास -

प्रकरण 2. सुलतान शाही काळातील प्रशासन व्यवस्था

उद्दिष्टे

प्रस्तावना

सुलतानशाही कालीन प्रशासन व्यवस्था

केंद्रीय प्रशासन

सुलतान

मंत्रिमंडळ

दिवाण-ए-आरीज

प्रांतीय प्रशासन

स्थानिक प्रशासन

अल्लाउद्दीन खिळजीच्या प्रशासकीय व लष्करी सुधारणा

सारांश

संदर्भ

उद्दिष्टे

सुलतान शाही कालीन प्रशासन व्यवस्था जाणून घेणे.

सुलतान शाही कालीन केंद्रीय प्रांतीय व लष्करी प्रशासन जाणून घेणे.

सुलतान शाही कालीन मंत्रिमंडळ जाणून घेणे.

अल्लाउद्दीन खिलजी च्या सुधारणा जाणून घेणे

प्रस्तावना

दिल्ली सुलतानशाहीच्या इतिहासाची तसेच त्या काळातील राजकीय परिस्थिती व प्रशासन यंत्रणेची माहिती देणारे अनेक ग्रंथ फारसी व अरबी भाषेत लिहिले आहेत हे ग्रंथ शास्त्रशुद्ध इतिहास नसले तरी त्यांचे लेखन हे दरबारातील इतिहासकारांनी रचलेले आहे. हया ग्रंथामधुन सुलतानाच्या कार्याची तसेच कार्यपद्धतीची सविस्तर माहिती दिलेली मिळते. हसन निजामी, मिनहास-उस- सिराज, सियाउद्दिन बर्णी, अमिर खुसरो, तसेच मोरोक्कोचा प्रवासी इब्न बतुता इत्यादी इतिहासकारांनीनी लिहिलेले ग्रंथ सुलतान काळातील इतिहास जाणून घेण्यासाठी महत्त्वपूर्ण ठरतात.

केंद्रीय प्रशासन व इता पद्धत

मोहम्मद गझनीने भारतावर आक्रमणे करून प्रचंड प्रमाणावर लूट करण्याचा यशस्वी प्रयत्न केला तर महंमद घोरीने भारतात इस्लामी राज्याची सुरुवात केली. भारतात सत्ता स्थापन करणे व त्याचा विस्तार करणे या कार्याबरोबरच इस्लाम धर्म व संस्कृतीचा प्रसार व प्रभाव निर्माण करणे हे त्यांनी आपले कार्य मानले. इस्लाम धर्म हा सर्वश्रेष्ठ व केंद्रभूत मानूनच त्यांनी भारतात राजकीय व प्रशासकीय धोरण राबवलेले दिसते. दिल्लीवर राज्य केलेला शमशुद्दीन अल्तमश घियासुद्दिन बल्बन, अल्लुउदिन खिलजी, मुहम्मद बिन तुघलक, फिरोझ शाह तुघलक या सुलतानांनी सुसंघटित शासन स्थापना केले होते. त्या प्रशासनाची प्रामुख्याने विभागणी पुढील विभागात करण्यात आली होती:

- १. केंद्रीय प्रशासन
- २. प्रांतीय प्रशासन
- ३. स्थानिक प्रशासन
- 2. केंद्रीय प्रशासन

सुलतानशाहीच्या काळातील केंद्रीय प्रशासन व्यवस्था ही सुव्यवस्थित होती. केंद्रीय प्रशासनामध्ये प्रामुख्याने सुलतान आणि त्यांच्या मंत्रिमंडळ यांचा समावेश होत होता. प्रशासनातील कार्यपद्धती मध्ये व प्रमुखांची नावे ही इराणी प्रशासनातील होती व ती केंद्रीय प्रशासन व्यवस्था पुढीलप्रमाणेः

सुलतान

सुलतान हा सर्व राज्याचा प्रमुख होता तसेच तो हुकूमशहा असून धार्मिक नियमांच्या आधारे तो राजकीय व लष्करी केंद्र चालवीत. सुलतानाने आपल्या वैयक्तिक जीवनामध्ये, राज्यकारभारामध्ये व आपल्या धार्मिक धोरणामध्ये कुराणातील कायद्यांचे पालन करावे अशी तत्कालीन मुस्लिम जगताची अपेक्षा असे.

राज्यकारभारातील उलेमा वर्गाचा होणारा हस्तक्षेप मोडून काढून राजकारण आणि धर्म यांची फारकत घेतली. सुलतान हा राज्याचा शासन प्रमुख होता तसेच तो लष्कराचाही सर्वोच्च सेनापती आणि राज्यातील सर्वोच्च न्यायाधीश होता. सुलतानाची इच्छा म्हणजे कायदा असे, सुलतानाला राज्यकारभारात सत्ता देण्यासाठी मंत्रिमंडळ असे परंतु मंत्रिमंडळाने दिलेला सल्ला मानण्याचे बंधन सुलतानावर नसत. सुलतान स्वतःला ईश्वराचा प्रतिनिधी मानत असे सैद्धांतिक दृष्टिकोणातून असे समजले जाते की सुलतानाने कुराणाचा नियमानुसार शासन चालवावे परंतु व्यवहारांमध्ये सुलतानानी हिंदू बाबत ही नीती वापरली नाही व त्यांच्यावर अनेक प्रकारचे अत्याचार केले. हिंदूची पवित्र स्थाने अपवित्र करणे धर्माच्या नावावर अधिकार व कर लादणे म्हणजे सुलतानांची सत्ता ही निरंकुश होती.

• सुलतानची कार्ये

- १ इस्लाम धर्माची रक्षा करणे.
- २ मस्लिम राज्यावर आक्रमण करणारांशी युद्ध करणे,
- ३ युद्धाचे नेतृत्व करणे
- ४ राज्यात शांतता व सुव्यवस्था ठेवणे.
- ५. राज्याच्या उत्पादन वाढीसाठी कर बसवणे
- ६. न्यायदान करणे व गुन्हे करणाऱ्यांना शिक्षा देणे.

<u>मंत्रिमंडळ</u>

सुलतानाला राज्यकारभारात मदत करण्यासाठी मंत्रिमंडळ होते. गुलाम घराण्याच्या काळामध्ये वजीर, अंजिर- ए. मामलिक, दिवान-ए-इन्सा, दिवाण-ए-रसालत हे चारच मंत्री प्रामुख्याने होते व कालांतराने या मंत्र्यांच्या संख्येमध्ये वाढ झाली व त्या मंत्र्यांची तसेच त्यांच्या कार्याची माहिती पुढीलप्रमाणे:-

<u>१. दिवाण-ए-वजारत / वजीर-</u>

सुलतानशाही काळामध्ये वजीरचे पद स्थायी स्वरूपात होते गुलाम वंशाच्या प्रारंभापासून हे पद होते, वजीर हा प्रधानमंत्री व अर्थखात्याचाही प्रमुख होता किंबहुना तो संपूर्ण शासन व्यवस्थेचा प्रमुख असे, त्याच्या कार्यालयाला दिवाणे वजारात असे म्हणत. सुलतान व प्रजा यांच्यातील तर दुवा होता सुलताना नंतर खरी सत्ता वजीराची चालत असे.

वजीरावर सुलतानाचे नियंत्रण असे अत्यंत विश्वासु व प्रामाणिक व्यक्तींचीच सुलतान वजीर म्हणून नेमणूक करीत असे. सुलतानाच्या गैरहजेरी संपूर्ण पत्र व्यवहार पाहणे व इतर मंत्र्यांच्या कारभारावर देखरेख ठेवणे हे वजीराचे महत्त्वपूर्ण काम होते.

२. दिवाण-ए-आरीज

दिवाण-ए-आरीज हा विभाग म्हणजे सैन्य मंत्रालय होते व त्याचा प्रमुख सेनापती असून त्यास आरिज-ए-मुमालिक म्हटले जाई संपूर्ण लष्करावर देखरेख ठेवणे, सैन्यभरती करणे, सैन्यात सुरक्षितता व शिस्त राखणे शस्त्रांचा चोख बंदोबस्त ठेवणे, सैनिकांना लागणान्या आवश्यक सामग्री यांची व्यवस्था करणे, सैनिकांच्या वेतनाचे वितरण करणे ही कामे त्याला करावी लागत सैन्याचा प्रमुख सुलतान असला तरी अनेक सुलतानाच्या आदेशानुसार युद्ध मोहिमांचे नेतृत्व सेनापतीला करावे लागत असे.

दिवाण-ए-रसालत-

दिवाण-ए-रसालत हे सुलतानाचे परराष्ट्र खाते होते परंतु काही विद्वानांच्या मते हे खाते धार्मिक गोष्टींबद्दल संबंधित होते. आधुनिक परराष्ट्र मंत्रालयाचे कार्य हया विभागामार्फत होई. प्रामुख्याने हया विभाग प्रमुखाचे कार्य म्हणजे दुसऱ्या देशांमध्ये राजदूत पाठवणे व दुसऱ्या देशाच्या राजदुताचे स्वागत करणे हे होते.

दिवाण-ए-काझा-

दिवाण-ए-काझा है न्याय खाते असून त्यांचा प्रमुखपदी काझी हा होता. राज्यातील संपूर्ण न्यायव्यवस्थेचे नियंत्रण व परीक्षण करण्याचे काम त्यांच्याकडे होते. तो न्यायालय भरून इतर न्यायालयाकडून आलेली अपिले ऐकून घेऊन न्याय देत असे.

सदूस. सुदर

हे धर्मदाय खाते असून याचाही प्रमुख काझी होता. आपल्या राज्यातील प्रजा कुराणातील नियमानुसार वागते की नाही हे पाहणे या खात्याचे काम होते. धर्मपंडित, धार्मिक संस्था, शाळा व गोरगरिबांना आर...

२) प्रांतीय प्रशासन-

सुलतानकाळातील प्रांतीय प्रशासन सुसंघटीत होते. सुरूवातीच्या काळात लष्करी अधिकाऱ्यानी आणि सरदारानी साम्राज्याचे जे निरनिराळे भाग पाडले तेच सुलतानांनी कायम ठेवले त्यांनाच इक्ता असे म्हणत. अल्लाउद्दीन खिलजीने आपले साम्राज्य वाढविले त्यामुळे प्रांतांची संख्याही वाढली त्याच्या काळात ११ प्रांत होते व त्यांना सुबा म्हणत. महंमद तुघलकाच्या काळापर्यंत या प्रांताची संख्या २३ पर्यंत वाढली. प्रत्येक प्रांताला एक प्रमुख किंवा राज्यपाल असे त्यास मुफ्ती असेही म्हणत.

आपल्या प्रांतात शांतता व सुव्यवस्था राखणे, सुलतानाला गरज भासेल तेव्हा लष्करी मदत करणे, युद्धमोहिमेच्या वेळी सैन्य पाठविणे, प्रांतातील प्रजेकडून करवसुली करणे, आपल्या प्रदेशातील माहिती वेळोवेळी सुलतानांना पुरविणे इ. कामे त्यास करावी लागत, सुलतान प्रभावी असतील तर हे राज्यपात त्यांच्या नियंत्रणात राहून चांगले काम करीत असत, जर सुलतान कमकुवत असतील तर ते स्वतंत्रपणे वागत,

३) स्थानिक प्रशासन-

सुलतानशाहीच्या काळामध्ये स्थानिक प्रशासन सुट्यवस्थित चालण्यासाठी प्रशासनाची शिक(जिल्हा), परगणा, खेडी व नगरप्रशासन अश्या स्वरूपात विभागणी होती व त्यांचे स्वरूप प्ढीलप्रमाणे:

१) शिक (जिल्हा)-

प्रांताचे विभाजन जिल्हयामध्ये केलेले होते व त्याला शिक असे म्हणत त्यांचे काम हे प्रामुख्याने आपल्या विभागात शांतता व सुव्यवस्था राखणे हे होते.

3)परगणा - शिकाचे विभाजन हे परगणामध्ये केलेले होते व साधारणतः ८४ ते १०० खेडी त्यामध्ये होती व त्याच्या प्रमुख चौधरी असे, त्याच्या मदतीसाठी आमल व मुशर्रफ असे. आमलचे कार्य शांतता राखणे तर मुशर्रफ चे कार्य महसूल वसूल करणे होते. याशिवाय इतर काही कर्मचारी सुद्धा मदतीसाठी होते. शेतकऱ्यांच्या अवस्थेची माहिती अधिकाऱ्यांना देण्यासाठी चौधरी हा अधिकारी होता.

- 3) ग्राम/खेड- परगणाचे विभाजन ग्रामात केलेले होते. प्रशासनातील सर्वात शेवटचा घटक म्हणजे ग्राम खेड्याचे प्रशासन स्वयंपूर्ण होते तसेच सर्वात छोटा इता म्हणजेच भाग हा होय. येथील कारभार पंचायत करत असे व त्याचा प्रमुख मुकादम हा असत.
- ४) नगर प्रशासान- मोठ्या शहराला नगर असे म्हणत नगराचा कारभार पाहण्यासाठी कोतवाल नावाचा अधिकारी असे. नगराचेप्रशासन व्यवस्था सुव्यवस्थित चालवणे हे त्याचे काम होते व त्याच्या मदतीला इतर नोकरवर्ग असत...

न्यायव्यवस्था

सुलतानांनी इस्लामी न्यायसंस्था हिंदूस्थानात रूजवली. त्यांनी शरीयत म्हणजे गुन्हेगारी व दंडयोजना याबद्दलची अंमलबजावणी मुसलमानांच्या बाबतीत वैयक्तिक व अनिवार्य होती. या कायद्यातील धार्मिक तरतुदी हिंदूना लागू नव्हत्या, हिंदूना त्यांच्या परंपरा, चालीरिती व त्यांच्या पंचायतींनी केलेले निर्णय यांना धरून वेगळा कायदा लागू होता, परंतु जर दाव्यामध्ये विरोधी पक्षात मुसलमान असेल तर मात्र हिंदू नाही मुस्लिम कायदा लागू होता. सुलतान हा न्यायसंस्थेचा प्रमुख होता. तोच सर्वोच्च न्यायाधीश असे, न्यायदानाच्या कार्यासाठी दिवान-ए-काझ हे स्वतंत्र खाते असून विरष्ठ काझी त्यांचा प्रमुख असे. तो सामान्य दिवाणी व फौजदारी खटल्यांच्या बाबतीत मुख्य न्यायाधीश असे. त्याची नेमणूक सुलतान करत असत. राज्याची मुख्य न्यायव्यवस्था सरन्यायाधीशाला सांभाळावी लागे. प्रांतांच्या ठिकाणी मुफ्ती हा आधिकारी न्यायदानाचे न्यायाधीश असे त्याची नेमणूक सुलतान करीत असे. त्याचप्रमाणे सुलतानाचा दरबार आठवङ्यातून दोनवेळा कार्य करीत असे. जवळजवळ प्रत्येक मोठ्या शहरात काजीचे न्यायालय होते. मुहतासिब म्हणजे सार्वजनिक नितीमतेवर अंकुश लावणारा अधिकारी, मुस्लिम कायद्याचे पालन करण्यास पोलीस व न्यायाधीश अशी दुहेरी बजावत असे. प्रांताचे सुभेदार, इक्तेदार व इतर कार्यकारी अधिकान्यांना न्यायदानाचे काही अधिकार दिलेले असत.

सैन्यव्यवस्थाः

दिल्लीत सुलतानशाही अनियंत्रीत राजसत्ता होती. तिचे अस्तित्व लष्करी सामर्थ्यावर अवलंबून होते. आपले लष्कर बलशाली कसे राहील यादृष्टीने सर्वच सुलतानांनी प्रयत्न केले. सुख़तान फार मोठे लष्कर बाळगत असे. कारण त्यांना अंतर्गत बंडाळी व बाह्यसूत्रेंना तोंड द्यावे लागे. सुलतानाच्या लष्करात नियमीत व अनियमीत सैन्य असे दोन प्रकार होते. त्यातील नियमीत असलेले सैनिक कायमस्वरूपी सुलतानाच्या सेवेत असत. युद्ध असले किंवा नसले तरी त्यांना पगार मिळत असे. पुद्धप्रसंगी युद्धावर जाणे व इतर वेळी राज्यात शांतता ठेवण्याचे, बंडाळ्यांचा बिमोड करणे ही कामे या सैन्याला करावी लागत. फक्त युध्दाच्याच वेळी तात्पुरत्या स्वरूपात ज्या सैन्याची भरती केली जाई ज्यांना अनियमित सैन्य म्हणत. लष्कराचे विवीध विभाग होते यात मुख्यतः घोडदळ व पायदळ असे. घोडेस्वाराला जास्त मान होता. घोडेस्वार व त्याचा घोडा या दोघांचीही उत्तम काळजी घेतली जात असे. घोड्यांच्या संपूर्ण पारीरावर लोखंडी जाळी व शिरावर लोखंडी फळी बांधत असत. तुर्की घोडेस्वार उत्तम तीरंदाज होते. अल्लाउद्दीन खिलजीने आपल्या सैन्यात ४ लाख ७५ हजार घोडे बाळगले होते. इतके घोडदळ महत्वाचे होते. पायदळाची संख्या सर्वात मोठी होती. स्थिर युद्धात लढण्यासाठी पायदळ प्रभावी ठरत असे.

पोलिस व गुप्तहेर

मुलतानशाहीच्या काळात कोतवाल हा पोलिसव्यवस्थेचा प्रमुख होता. केंद्रिय व प्रांतीय राजधानीत किंवा मोठ्या शहरात शांतता व सुव्यवस्था राखण्याच्या उद्देशाने कोतवालाच्या नेमणुका केल्या जात, कोतवालाचे काम शहरात चोऱ्या, दंगली होऊ न देणे, रात्री गस्त घालणे व राजमार्गावर पहारा देणे इ. होते. सुलतानशाही काळातील गुप्तहेरयंत्रणाही प्रभावी होती. संपूर्ण साम्राज्यात सुलतानांनी आपल्या गुप्तहेरांचे जाळे पसरलेले होते त्यामुळे साम्राज्यात घडण्याऱ्या गोष्टींची दैनंदिन माहिती त्यांना कळत असे. राज्यातील महत्त्वाकांक्षी व कटकारस्थाने करणान्या सरदारांवर किंवा अमीरांवर देखरेख ठेवण्यासाठी गुप्तहेर नेमले होते. राजदरबारातील विरोधकांचा शोध घेण्यासाठीही गुप्तहेर यंत्रणेचा वापर केला जाई.

अल्लाउद्दीन खिलजीच्या लष्करी सुधारणा

१ राजपदाचा सिद्धांत

अल्लाउद्दीन खिलजीला आपल्या राज्यकारभारात धर्माची ढवळाढवळ मान्य नव्हती. म्हणून त्याने धर्म व राजकारण यांची गल्लत न करता धर्माला राजनीति पासून वेगळे ठेवले, असे करणारा तो पहिला सुलतान होता. इतर सुलतानांप्रमाणे त्याने खिलफा कडून राजवस्त्रे मागवली नाहीत. कारण सर्वश्रेष्ठ सुलतान होणे हे अल्लाउद्दीन खिलजी चे ध्येय होते. राजा ईश्वराचा प्रतिनिधी असून राजाची इच्छा म्हणजेच कायदा या मताचा तो पुरस्कर्ता होता. राजाचे स्थान सर्वश्रेष्ठ असून इतर सर्व लोक राजाचे सेवक आहेत असे तो म्हणत असे. अल्लाउद्दीनने अमीर उमरावांप्रमाणेच उलेमा वर्गाचही राजकारणात असलेले हस्तक्षेप व वर्चस्व नष्ट केले. अल्लाउद्दीनची राजवट ही अनियंत्रित व अनिर्वंध अशीच होती. तो एक सुन्नी पंथीय मुस्लिम असून धर्मनिष्ठ होता. इस्लामी कायदे किंवा शरीयतबद्दल त्याने कधीही वादिववाद केला नाही. परंतु राज्यकर्ता म्हणून तो स्वतःचाच कायदा पाळत असे. तो एक जबरदस्त इच्छाशक्ती असलेला एकतंत्री राज्यकर्ता होता. त्याने आपल्या मंत्र्यांवर लष्करी अधिकान्यांवर मोठ्या प्रमाणावर दहशत बसवली असल्यामुळे त्याला सल्ला देण्यास किंवा त्याच्या आदेशांना विरोध करण्यास कोणीही पढ़े येत नसत.

२ हिंद्विरोधी धोरण.

अल्लाउद्दीन खिलजीने आपल्या कार्यकाळात हिंदूंना अतिशय निर्दयतेची वागणूक दिली. हिंदूंनी आपल्या विरोधात कधीही बंड नये म्हणून त्यांचे सर्वस्व नष्ट करण्याचा निर्णय त्यांने घेतला. हिंदूंकडून सक्तीने जिझिया कर वसूल करण्यात आला. हिंदू शेतकऱ्यांकडून उत्पन्नाचा निम्मा भाग शेतसारा म्हणून घेण्यात येई. याशिवाय पशु घरे व कुरणावरही कर बसवण्यात आला. खोत, मुखिया, चौधरी, मुकादम या विरष्ठ हिंदूना काही विशेष अधिकार असून त्यांचे सर्व कर माफ होते परंतु अल्लाउद्दीन खिलजीने हे सर्व अधिकार रद्द करून सर्वांना समान कर बसविले. तसेच घोड्यावर बसणे, शस्त्रास्त्रे बाळगणे, उत्तम वस्त्रे वापरणे धार्मिक सण उत्सव साजरे करणे या गोष्टींना सक्त मनाई होती. अल्लाउद्दीनच्या या जुलुमी धोरणामुळे हिंदू प्रजा अतिशय त्रस्त झाली होती. या गरीब बनलेल्या हिंदूनी लाचारीतून मोठ्या प्रमाणात धर्मांतरे केली. हिंदूमध्ये विरष्ठ समजल्या गेलेल्या खोत, चौधरी, मुकादम यासारख्या अधिकाऱ्यांची स्थिती इतकी वाईट झाली की त्यांना उत्तम घोड्यावर बसणे, किंमती वस्त्रे परवडण्यासारखी नव्हती. त्यांच्या स्त्रियांना संसार चालविण्यासाठी मुस्लिमांकडे मोलमजुरी करावी लागत असे.

३ चार वटहुक्म

अल्लाउद्दीन खिलजीच्या काळात राज्यात अनेक ठिकाणी बंड होत होती. या बंडांची कारणे लक्षात घेऊन ती पुन्हा उद्भवू नयेत म्हणून त्याने पुढील चार वटहुकूम काढले

- १. धर्मार्थ व बक्षीस म्हणून दिलेल्या सर्व जिमनी जप्त करण्यात आल्या.
 - २. गुप्तहेर खाते स्थापन करून राज्यात सर्वत्र त्याचे जाळे पसरविण्यात आले.
- 3. स्वतः दारूला स्पर्श न करता इतरांनीही मद्यपान करू नये असे जाहीर करण्यात आले.

४. अमीर उमराव यांचे आपापसातील विवाह, उत्सव यांना बंदी घालण्यात आली.

अशाप्रकारे बंडाच्या मुळाशी वरील सर्व कारणे असल्यामुळे वटहुकूम काढून त्यावर बंदी घालण्यात आली.

४. महस्ल सुधारणा

अल्लाउद्दीन खिलजीच्या महसूल विषयक सुधारणा पुढील मुद्द्यांच्या आधारे स्पष्ट करता येतील.

१. आर्थिक धोरणांचे नियमन-

राज्याचे सरकारी धोरण म्हणून आर्थिक व्यवहारांचे नियमन करण्यात लक्ष घालणारा अल्लाउद्दीन खिलजी हा पहिला सुलतान होता. त्याने नवीन वटहुकूम काढून सरकारी जिमनीवरील जमीनदारी पद्धत बंद केली आणि देण्यात येणाऱ्या जहांगिरी खालसा केल्या. सुलतान म्हणून आपले आसन स्थिर केल्यावर लगेच त्याने जुन्या अमीर उमरावाची वेतने व संपत्ती रद्द केली. तसेच अमीर उमरावाची सता कमजोर करण्यासाठी व केंद्र सरकारचे वर्चस्व बळकट करण्यासाठी अल्लाउद्दीनने कडक उपाय योजले.

२. जमीन महसूल विषयक धोरण-

जमीनीच्या मोजमापानुसार सरकारी कर आकारण्याची पद्धत अमलात आणणारा अल्लाउद्दीन हा दिल्लीचा पहिला मुस्लिम सुलतान होता. संपूर्ण जिमनींची मोजणी केल्यानंतर जिमनीच्या उत्पादक्षमतेनुसार जमीन महसूल आकारण्यात येऊ लागला.

<u>३ धार्मिक कर</u>

या काळात हिंदूकडून सक्तीने जिझीया कर वसूल केला जाई. अल्लाउद्दीनने महसूल विभागातील हिंदू अधिकारी, चौधरी, खोत व मुकादम यांना देण्यात येणाऱ्या परंपरागत सवलती बंद करून त्यांनाही सर्वसामान्य हिंदू प्रजेप्रमाणे कर देण्यास भाग पाडले.. अल्लाउद्दीनच्या या आर्थिक धोरणामुळे हिंदू प्रजा दिरद्री बनली.

४ न्यायव्यवस्था-

सुलतान हाच न्यायाविभागचा प्रमुख होता. सुलतानाकडे न्याय मिळविण्यासाठी कोणालाही जाता येत नसे. त्याच्या खालोखाल न्यायदानासाठी काझी या अधिकान्याची नियुक्ती केली होती. त्याच्या हाताखाली अनेक नायब काझी काम करीत असत. काझींच्या मदतीला मुफ्ती असत. ते कायदे तयार करीत. याशिवाय राजधानी मध्ये अमीर ए दाद हे न्यायाधिशाचे पद होते ज्या खटल्यांवर काझी योग्य निर्णय देऊ शकत नसत, ते खटले अमीर-ए-दादकडे सोपवले जात. विविध प्रांतांमध्ये सुलतानाऐवजी प्रांताधिपती हा न्यायाधिश म्हणून काम करीत असे. छोटे शहर किंवा खेड्यात त्यांचा प्रमुख किंवा पंचायत भांडणे सोडवीत व न्याय देत असत

अल्लाउद्दीन खिलजी चे बाजारभाव किंवा वस्तूंचे भाव नियंत्रण

बाजारभावाची संकल्पना-

अल्लाउद्दीन खिलजीने राज्याची सूत्रे हाती घेतल्यानंतर विरोधकांना आपल्या बाजूला घेण्यासाठी त्यांना उच्च पदे व आर्थिक मदत केली. मंगोल आक्रमणाच्या भीतीमुळे सैन्यभरती मोठ्या प्रमाणात केली परंतु आर्थिक परिस्थिती बिकट असल्यामुळे सरकारी कर्मचाऱ्यांचे वेतन कमी केले. दिलेल्या वेतनामध्ये त्यांची उपजीविका साध्य व्हावी यातूनच बाजार भाव नियंत्रण ही संकल्पना उदयास आली.

• बाजार भाव नियंत्रण संकल्पना उदयास येण्याची कारणे-

१. मंगोल आक्रमणाची भीती-

दिल्लीची सत्ता अल्लाउद्दीन खिलजीने हाती घेतल्यानंतर मंगोलांची सतत आक्रमणे होत होती. या संकटापासून दिल्लीचे संरक्षण करण्यासाठी सैन्याची गरज होती, परंतु सैन्याला चांगला पगार देण्यासाठी चांगली अर्थव्यवस्था नव्हती. त्यामुळे बाजारभाव नियंत्रणाची (जीवनावश्यक वस्तूसाठी) गरज होती. त्यामुळे वस्तूंच्या किमती कमी करण्याचा निर्णय त्याने घेतला

२. सरकारी कर्मचारी व सामान्य जनता-

सैन्याबरोबरच प्रशासकीय कर्मचारी, गुलाम यांचा खर्च राज्याच्या तिजोरीवर पडत होता. राज्याचा महसूल, विविध प्रांतांचा व मांडलीकांचा कर व खंडणी या सर्वांची बेरीज (हिशोब केल्यास त्यापेक्षाही जास्त खर्च होत होता. परिणामी ही तूट भरून काढण्यासाठी बाजार भाव नियंत्रण आवश्यक होते.

अल्लाउद्दीनने या स्वतंत्र नियंत्रण व्यवस्थेत विविध विभाग करून स्वतंत्र बाजारपेठा निर्माण केलेल्या पुढील प्रमाणे-

१. मंडी / गल्ली बाजार

२. सुलतानाने आपल्या मंत्र्याशी चर्चा करून, गल्ली बाजारातील भाव नियंत्रित ठेवले. या बाजारातील रोहना (नियंत्रक) म्हणून एका मंत्र्याची नेमणूक केली. त्यामार्फत भ्रष्ट्राचारी व नफाखोरांना कठोर शिक्षा दिली खाद्य पदार्थाचे स्वतंत्र भंडार स्थापन केले.

अल्लाउद्दिन खिलजी याने या बाजारातील खाद्य पदाथ्याचे दर निश्चित केले होते. ते पुढीलप्रमाणे होते.

चांदीचा एक टंका ४६ किंवा ४८ जितल होता. जितल हे सुद्धा एक नाणे होते.

- (1) प्रतिमण गह् साडेसात जितल.
- (2) प्रतिमण ज्वारी ४५ जितल
- (3) प्रतिमण तांदूळ ५ जितल

२. सराय-ए-अदल-

अल्लाउद्दीन खिलजीने विदेशी मालाची आयात करणे आणि कापड साखर अशा विशिष्ट वस्तूंसाठी स्वतंत्र बाजारपेठ स्थापन केली त्यास सराय-ए-अदल असे म्हणतात. हा बाजार सूर्य उगवल्यापासून दुपारच्या वेळेपर्यंत असे. या बाजाराचा दिवाण-ए-रियासत या पदावर मलिक यांची नियुक्ती केली गेली. खिलजीने या बाजारपेठेचे भाव निश्चित केले याची माहिती तारीख ए. फिरोजशाही या ग्रंथात आढळते.

या बाजारपेठेतील दर पुढील प्रमाणे-

- १. कच्चे रेशीम ६ टंका
- २.भव्यक रेशीम ३ टंका
- . लालधारीवाले कापड ६ जिनल (जिनल एक प्रकारचे नाणे)
- ३. ग्लाम आणि प्राण्यांचा व्यापार-

या बाजारात वस्तू स्वस्त करण्यासाठी खिलजीने खालील चार उपाययोजना केल्या होत्या-

- १. वस्तूंच्या किमती निश्चित करणे.
- २. दलालांवर कठोर कारवाई करणे.
- 3. व्यापाऱ्यांनी खरेदी करू नये.
- ४. सुलताना मार्फत प्रत्यक्ष चौक

बाजारभाव नियंत्रणाचे परिणाम

अल्लाउद्दीन खिलजीने दिल्ली परिसरात लागू केलेल्या बाजारभाव नियंत्रणाचे समाजावर, साम्राज्यावर तसेच व्यापाऱ्यांवर चांगले आणि वाईट असे दोन्ही परिणाम घडून आले ते पुढीलप्रमाणे-

१. व्यापार आणि वाणिज्यावरील परिणाम-

सुलतान अल्लाउद्दीन खिलजी यांचे धोरण अतिशय चांगले होते. कारण या धोरणापूर्वी व्यापारी लोक वस्तूंचे वजन कमी करून स्वतःचा जास्त फायदा करून घेत, या प्रवृतीसाठी अल्लाउद्दीन खिलजीने कठोर भूमिका घेऊन अनेकांना शिक्षा दिल्या. परंतु व्यापाऱ्यांना प्रोत्साहन दिले नाही. तसेच कठोर दंडामुळे व्यापार व वाणिज्य यावर वाईट परिणाम होऊन, या क्षेत्रात घट व तुट निर्माण झाली.

२. व्यापान्यांच्या विरोधी धोरण-

व्यापाऱ्याने शेतकऱ्यांकडून ठराविक किंमतीत माल विकत घेणे, ठरवून दिलेल्या किंमतीत वस्तु विकणे. त्यामुळे व्यापा-यांना किंमतीमध्ये कमी जास्त कर...

अल्लाउद्दीन खिलजीच्या लष्करी सुधारणा.

१. स्वतंत्र लष्कर खात्याची स्थापना-

अल्लाउद्दीन खिलजीने आपल्या अफाट व प्रभावी सैन्याचे नियंत्रण करण्यासाठी दिवाण-ए- आरिज हा स्वतंत्र विभाग स्थापन केला. या विभागप्रमुखाला सुसंघटित सैन्य उभारणे, शिपायाची सैन्यात भरती करणे, त्यांना पगार वाटणे, सैन्याला सतत तैनात ठेवणे अशा प्रकारची कामे करावी लागत.

२. सैन्य व्यवस्था

मौर्य सम्राटांप्रमाणेच अल्लाउद्दीन खिलजीने राजधानी दिल्लीत चार लाख 50 हजार स्थायी सैन्य सदैव तयार ठेवले. सर्व सैनिकांना व सेना अधिकाऱ्यांना सरकारी तिजोरीतून रोख वेतन देण्यात येत असे. सैनिकांच्या दर्जानुसार तीन श्रेणी होत्या. पहिल्या श्रेणीतील सैनिकांना वार्षिक 234 टंका पग...

३. पोलीस खाते-

अल्लाउद्दीनने आपल्या राज्यात शांतता, सुव्यवस्था निर्माण करण्यासाठी पोलीस खाते कार्यक्षम बनवले. कोतवाल हा या विभागाचा प्रमुख होता. तसेच या खात्यात दिवान ए रियासत हे नवीन पद निर्माण करुन त्यात दंडाधिकारी नियुक्त केला गेला. तो व्यापान्यांवर कठोर नियंत्रण ठेवीत असे. पोलिसखात्यामुळे लोकांच्या आचार विचारांची, बाजाराची माहिती सुलतानाला समजून त्यावर नियंत्रण ठेवता येता असे.

अ] मोहम्मद बिन तुगलकच्या सुधारणा

मोहम्मद बिन तुगलक हा गियासुद्दीन तुघलकाचा मुलगा होता. गियासुद्दीन तुघलकच्या आकस्मित मृत्यू नंतर इ.स. 1325 मध्ये महंमद बिन तुघलक दिल्लीच्या गादीवर आला होता. त्याचा शासन काळ इ.स. 1325 ते इ. स. 1351 असा मानला जातो. इतिहासामध्ये मोहम्मद बिन तुगलकचा जोना खान, उल्ध खान, फक्द्दिन या नावानेही उल्लेख आढळतो. सुलतान घियासुद्दीनच्या मृत्यूनंतर कोणाचाही विरोध न होता तो मोहम्मद बिन तुगलक या नावाने गादीवर बसला होता. मोहम्मद बिन तुगलक हा या आधीच्या सर्व सुलतानापेक्षा अधिक सुशिक्षित होता कारण त्याला सर्व शास्त्रे व कलांचे पूरक ज्ञान होते. तो उत्तम लेखक, उत्कृष्ट वक्ता, फारसी व अरबी भाषांचा पंठित, गणित, खगोलपारत, वैयक शारत, तर्कशारत पापणार व राज्यकारभार तसेच पुजकतेतही पारंगत होता. डॉक्टर ईश्वरी प्रसाद म्हणतात की, तर्कशास्त्रात तो इतका हशार हो...

१. महसूल सुधारणा

मोहम्मद बिन तुगलकाची इच्छा होती की राज्यात सर्वत्र महसुलाचा एकच दर निश्चित असावा. त्यासाठी त्याने प्रत्येक प्रांतात महसूल खर्च आणि उत्पन्नाच्या नोंदी ठेवल्या जाव्यात असा हुकूम काढला होता. परंतु काही कारणास्तव त्याच्या या योजनेत त्याला म्हणावे तसे यश आले नव्हते २ कृषी खात्याची स्थापना

शेतीचे उत्पन्न अधिक वाढविण्यासाठी महंमद बिन तुघलकाने एक नवीन दिवाण-ए-कोही नावाचा विभाग स्थापन केला होता. शेतकऱ्यांना सरकारी सहाय्य देऊन जास्त जमीन लागवडीखाली आणणे हे प्रमुख उद्दिष्ट या विभागाचे होते. त्यासाठी अधिक अन्न उत्पादनासाठी 60 चौरस मैलाच्या प्रदेशात सरकारी शेती सुरू केली होती. त्यासाठी निरनिराळ्या अधिकाऱ्यांच्या नेमणुकादेखील करण्यात आल्या होत्या. परंतु ही योजना देखील पूर्णपणे अयशस्वी ठरली. कारण सरकारने घेतलेली जमीन ही नापिक होती. तसेच अष्टाचारी अधिकारी वगनि योजनेचा पैसा हडप केला होता. त्यामुळे ही योजना अयशस्वी ठरली होती.

4. राजधानी बदलण्याचा प्रयोग

काही कारणास्तव मोहम्मद बिन तुगलक याने राजधानी दिल्लीहून दक्षिणेत देवगिरी येथे नेण्याची योजना आखली होती. त्यामागची कारणे पुढीलप्रमाणे स्पष्ट करता येतील.

- 1. राजधानी मोगलांच्या आक्रमणापासून सुरक्षित ठिकाणी नेणे.
- 2. देवगिरी हे मध्यवर्ती ठिकाण असून देवगिरीचा किल्ला हा अभेद्य होता.
- 3. दिक्षणेत मुसलमानांची दुर्मिळता होती त्यामुळे देवगिरी हे इस्लाम धर्मप्रसाराचे केंद्र बनवायचे होते.

मोहम्मद बिन तुगलकाचे परराष्ट्रीय धोरण :

मोहम्मद बिन तुगलकाने केवळ अंतर्गत धोरणातच नवीन प्रयोग केले असे नाही तर विदेशी धोरणांमध्येही त्याने अनेक प्रयोग केले होते. त्यामध्येही त्याला मोठ्या प्रमाणात अपयश लाभले होते. ते पुढील प्रमाणे स्पष्ट करता येईल.

3. चीनवरील स्वारी

हिमालयीन भारत व चीन यांमध्ये तत्काळात कारजाल नावाचा प्रदेश होता. उत्तर सरहद्दीवरील या प्रदेशातील बंडखोर जमातींचा बंदोबस्त करून ही सीमा सुरक्षित करावी असा मुहम्मद बिन तुघलकचा हेत् होता. म्हणून त्याने तो प्रदेश जिंकून घेण्यासाठी आपल्या सेनापतीबरोबर मोठी सेना पाठवून या प्रदेशावर स्वारी केली होती.. परंतु अतिशय पहाडी प्रदेश असल्यामुळे त्याच्या सैन्याची फार मोठी हानी झाली होती. तरीही अथक प्रयासानंतर कारजालच्या हिंदू राजाने मोहम्मद बिन तुगलकचे स्वामित्व मान्य केले होते. यानंतर चीनवर स्वारी करण्याचा त्याचा हेत् होता म्हणून त्याने तसे आदेश दिले होते. परंतु चीनच्या स्वारीत बहुतेक लोक हिमालयातील बर्फमय प्रदेशात गारठून

मेल्यामुळे उरलेले लोक परत आले होते त्यांना महंमद बिन तुघलकाने ठार मारले होते. या स्वारीत पाण्यासारखा पैसा खर्च झाला होता तसेच मनुष्यहानी ही भयंकर झाली होती.

2. मंगोल आक्रमण

चगताई प्रमुख तारमा शिरीन या मंगोल सरदारांनी मोहम्मद बिन तुगलक राजधानी बदलण्याच्या गडबडीत असताना हिंदुस्तान वर आक्रमण केले होते. तेव्हा सुलतानाने प्रत्यक्ष लढाई न करता त्यांना भरपूर धनद्रव्य देऊन परत पाठविले होते. पण काही इतिहासकारांच्या मते, मोहम्मद बिन तुगलकाने तारमा शिरीनला पराभूत केले होते. खोरासान राज्य जिंकण्याचा प्रयत्न तारमा शिरिनने केला होता. त्यानंतर मोहम्मद बिन तुगलकाने लगेच हिंदुस्थानच्या वायव्य सरहद्दीपलिकडील खोरासान, इराक आणि ट्रान्स ॲक्झाना प्रांत जिंकण्यासाठी सैन्याची तयारी केली होती. दरबारातील काही खुरासानी सरदारांनी त्यांना त्याबाबत उत्तेजन दिले होते. त्यादृष्टीने या स्वारीच्या तयारीसाठी 3 लाख 70 हजार फौज तयार केले गेले होते. सर्वांना एका वर्षांचि आगाऊ वेतन दिले होते. पण हिमालय ओलांडून काहीच मिळण्यासारखे नव्हते.

मोहम्मद बिन तुगलकांच्या योजना अयशस्वी का झाल्या

मोहम्मद बिन तुगलकानी आपल्या शासन काळात ज्या योजना अमलात आणल्या होत्या त्यातील बहुसंख्य योजनांना अपयश प्राप्त झाले होते. त्या अपयशामागची कारणे पुढीलप्रमाणे सांगता येतील :

- 3. मोहम्मद बिन तुगलकाने ज्या काळात त्याच्या योजना अंमलात आणल्या होत्या तो काळ त्या योजनांसाठी योग्य नव्हता. कारण सर्वसाधारण माणसांना त्या योजनांचे आकलन होण्यापलिकडे होते.. त्यामुळे प्रजेने त्यांना सहकार्य दिले नाही त्यावर चिडून सुलतान मुहम्मद बिन तुघलकाने अनेकांना कठोर शिक्षा दिल्या होत्या. त्यामुळे त्याला यश मिळणे आणखी कठीण होऊन बसले होते.
- ४. मोहम्मद बिन तुगलकाजवळ योजनांचा अभ्यास करून त्याची कार्यवाही अत्यंत कुशलतेने व काळजीपूर्वक राबवणारा प्रामाणिक व कार्यक्षम अधिकारी वर्गाचा अभाव होता. दुदैवाने त्याच्या भ्रष्टाचारी लाचलुचपतीची चटक लागलेल्या अधिकारीवगिन त्याला योग्य वेळी, योग्य सल्ला न देता उलट त्याच्या योजनांचा गैरफायदा घेऊन प्रजेची पिळवणूक केली. त्यामुळे सुलतान प्रजेत अधिक अप्रिय झाला होता.

निसर्गाचा प्रकोप मोहम्मद बिन तुगलकाच्या योजनांना निसगनिही साथ दिली नव्हती. कारण त्याची करवाढीची योजना दुष्काळामुळे अयशस्वी झाली होती. तसेच परकीय स्वायत, पाऊस व वादळाने त्याच्या सैनिकांचे अतोनात हाल केले होते. थोडक्यात त्याच्या योजनांना निसर्गानेही साथ दिली नव्हती असेच म्हणावे लाग

मोहम्मद बिन तुगलकाच्या कृत्यांचे परिणाम:

महंमद बिन तुघलकाच्या अज्ञानी कृत्यांमुळे व्यापार थांबला, खजिना रिकामा झाला. राजधानी उध्वस्त झाली व लोकांत असंतोष पसरला. गुजराथ, माळवा व सिंध वगैरे ठिकठिकाणी बंडे झाली. बंगाल सारखे दूरदूरचे प्रांत स्वतंत्र झाले. दक्षिणेत बहामनी हे मुसलमानी राज्य व विजयनगर येथे हिंदू राज्य स्थापन होऊन सर्व दक्षिण भारत स्वतंत्र झाला. प्रत्यक्ष उत्तर भारतातही त्याचे अंमल कोणी जुमानत नव्हते. अशा निराशाजनक अवस्थेत ठठ्ठा येथे बंड मोडण्यास निघाला असता ठठ्ठाच्या जवळपास पोहचताच तो आजारी पडून २० मार्च १३५१ मध्ये मोहम्मद बिन तुगलकचा मृत्यू झाला होता.

मोहम्मद बिन तुगलकाचे गुण

१. शूर योध्दा

एक कुशल सेनापती व शौर्यशाली योध्दा म्हणून इतिहासात तो चमकला आहे. त्याने केलेल्या नेतृत्वात तो पराभूत झालेला दिसत नाहीत.

२. महान विजेता-

दक्षिण भारताचा बराच मोठा भाग काबीज करणारा मोहम्मद बिन तुगलक हा पहिला सुलतान होता. अल्लाउद्दीन खिलजीने मलिक काफूरद्वारे दक्षिण भारतातील राजांना पराभूत करून त्यांच्यावर फक्त खंडणी लादली होती. परंतु मोहम्मद बिन तुगलकाने ती राज्ये जिंकून आपल्या राज्यात समाविष्ट केली होती.

३. उत्तम प्रशासक-

मोहम्मद बिन तुगलकाने दक्षिणेतील मलबार व तेलंगणासारख्या दूरच्या प्रांतावर देखरेख व नियंत्रण ठेवले होते. मोहम्मद बिन तुगलकाने दक्षिणेतील प्रांतांचे शंभर खेडयांचा एक याप्रमाणे विभाग पाडून त्यावर अमीर-ए-सदाह हा अधिकारी नेमला होता. त्यांना मुलकी व लष्करी असे अधिकार बहाल केले होते. पण हे अधिकारी जुलमी व भ्रष्टाचारी बनल्याचे दिसून येताच महंमद बिन तुघलकाने दक्षिणेकडील त्याच्या भागांचे चार भागात विभाजन केले होते..

विव्दान व कलावंतांचा आश्रयदाता

त्याच्या दरबारात विद्वान पंडितांना व कलावंतांना आश्रय मिळात असे.प्रतिभाशाली विद्वान मोहम्मद बिन तुगलकाची स्मरणशक्ती तीव्र होती. इतिहास, तर्कशास्त्र, गणित, तत्त्वज्ञान वगैरे विषयात तो पारंगत होता. त्याचे हस्ताक्षर उत्तम असून तो एक कवीसुद्धा होता. त्याचे नवीन प्रयोग हे त्याच्या दूरहष्टीत्वाची साक्ष देतात.

६. दानशूर व उदार

मोहम्मद बिन तुगलक हा दयाळू व दानशूर होता. त्याने गरीबाना व दलितांना उदार अंत: करणाने दानधर्म केला होता. दररोज तो चाळीस हजार भिकाऱ्यांना भोजन देत होता.

७. शुध्द चारित्र्य

मोहम्मद बिन त्गलकाचे चारित्र्य त्याच्या काळातील इतर सुलतानांपेक्षा वरच्या दर्जाचे होते.

८. न्यायप्रेमी

मोहम्मद बिन तुगलक असे म्हणायचा की, काजीने न्याय देताना समोर सुलतान असला तरी घाबरू नये, आरोपीच्या पिंजऱ्यात सुलतानालादेखील आरोपी प्रमाणेच वागवले जावे.

फिरोझशाह तुघलकाच्या सुधारणा

सुलतान फिरोजशहा तुघलक (इ. स. १३५१-१३८८)

महंमद तुघलकानंतर त्यांचा चुलतभाऊ फिरोजशाह तुघलक हे इ.स. १३५१) दिल्लीच्या गादीवर आले. ठठ्ठा (सिंध) येथे महंमद तुघलकांचा मृत्यू झाला त्यावेळी त्यांच्या छावणीत गोधळ निर्माण झाला होता. मोगल सैनिकांनी बंड करून छावणी लुटण्यास प्रारंभ केला. त्याच काळात तैमुरलंग चालून आला आणि छावणीत एकत्र गडबड व धांदल उडाली महंमद तुघलक निपृत्रिक मरण पावले त्यांच्या बहिणीने आपला अल्पवयीन मुलगा दावर मिलक यांचा गादीवर हक्क सांगितला पण वरील गोंधळाच्या बंदोबस्तासाठी गादीवर • अनुभवी व्यक्तीची गरज आहे असे सरदारांनी ठरविले म्हणून त्यांनी सुलतानांचा चुलत भाऊ फिरोजला गादी स्वीकारण्याची विनंती केली. शासन व्यवस्था व सुधारणा फिरोजशाह तुघलक शांत वृत्तीचे आसल्यामुळे त्यांच्या कारकीर्दीत फारच थोडी युद्धे झाली. गेलेले प्रांत परत मिळविण्यापेक्षा आहे तेच कायम ठेवून त्यांनी शासन व्यवस्थेकडे व सुधारणांकडे लक्ष दिले. महंमद तुघलकांकडून दुरावलेल्या व दुखावलेल्या प्रजेचे दुःख दूर करून त्यांचे जीवन

समृद्ध करण्याचे फिरोजशहाचे अंतर्गत धोरण होते त्यादृष्टीने त्यांनी शासनव्यवस्थेत पुढीलप्रमाणे सुधारणा केल्या

१) प्रशासकीय सुधारणा

फिरोजशहानी मिलक ए मकबूल यांना पंतप्रधान बनवून त्यांना खा ए जहान ही पदवी दिली. कुराणाप्रमाणे आचरण करून लोक कल्याणाकडे लक्ष पुरविले. राज्यातील जुलमी सुभेदार बदलून लायक व योग्य व्यक्तींना त्या जागा दिल्या विद्वान पंडित लोकांना राजाश्रय दिला त्यामुळे त्यांचा दरबारही वैभवशाली होता. त्यांनी साम्राज्यात शांतता व सुव्यवस्था स्थापन केली

सामाजिक सुधारणा

१) प्रजेच्या कल्याणाची कामे: केले. गोरगरीबांना मदत करण्यासाठी सुलतानाने दानधर्म सुरू केले.
 रोग्यासाठी धर्मार्थ दवाखाने स्थापन

२) सार्वजनिक बांधकाम :

लोककल्याणार्थ त्यांनी सार्वजनिक बांधकाम खाते सुरू केले. मिलक गाजी शहनशहा हा त्यांचा प्रमुख स्थापत्यशास्त्र विशारद होता. सुलतानांनी ३०० लहान मोठी नगरे बसविली. फिरोजाबाद फतेहबाद, हिसार, जोनपूर फिरोजपूर ही शहरे प्रसिद्ध आहेत शिवाय ४ मिशदी ३० राजमहल २०० धर्मशाळा, १० स्नानगृहे १०० स्मरक स्तंभ १०० पूल ५ कालवे १५० विहिरी बांधल्याचा उल्लेख सापडतो.

३) शैक्षणिक व सांस्कृतिक सुधारणा

फिरोजशहा हे विद्याप्रेमी आल्यामुळे त्यांनी शिक्षणास उत्तेजन देण्यासाठी मदरसे स्थापन केले सुलतानांना इतिहास विषयाची आवड होती जियाउद्दीन बरनी शम्से सिराज असिफ यांच्या सारखे नामांकित इतिहासकार त्याच्या पदरी होते त्यापैकी तारीख - ए - फिरोजशाही हा ग्रंथ त्यांच्या काळातच पूर्ण झाला होता

<u>४) धार्मिक धोरण :</u>

फिरोजशहांनी हिंदू मातेच्या पोटी जन्म घेतला असल्यामुळे स्वतः चे अस्सल मुस्लिमत्व सिद्ध करण्यासाठी ते स्वतः स कट्टर सुन्नी मुसलमान समजत असत. त्यामुळे इतर धर्मियांच्या बाबतीत त्यांचे धोरण अत्यंत असिहष्णू व कडवे होते उलेमान व इतर धर्मगुरूंचे प्रस्थ त्यांच्या कारकीर्दीत वाढलेले होते. सुन्नी मुसलमानाना त्याने उच्च पदे दिली. धर्मान्तर करण्यास उत्तेजन दिले. त्यासाठी पदे व पदव्यांचे प्रलोभन दाखविले हिंदूंचा व सिया पंथींचा छळ केला आणि देवालये नष्ट केली

फिरोजशहा तुघलक यांचा मृत्यू व तुघलक घराण्याचा शेवट सुलतान फिरोजशहा तुघलकाचे शेवटचे दिवस अत्यंत दुःखात गेले इ. स. १३७४ मध्ये त्यांचा जेष्ठपुत्र फतेखान मरण पावला पुत्रशोकाने त्यांची प्रकृती ढासळली आणि त्यांचे प्रशासन शिथिल झाले. त्या काळात राज्याची सर्व सूत्रे त्यांचा वजीर खा

सारांश

मध्ययुगीन भारताच्या इतिहासात अल्लाउदीन खिलजी व शेरशहा सूर यांचे प्रशासन अत्यंत वैशिष्ट्यपूर्ण असल्याचा उल्लेख अनेक इतिहासकाराने केलेला आहे. सेनापती व प्रशासक या नात्याने अल्लाउदीन खिलजीची कामगिरी अत्यंत महत्वाची आहे. खिलजीने प्रशासनात सुधारणा करून शिस्त निर्माण केली. प्रशासनातील भ्रष्टाचार नष्ट करून प्रशासनात कार्यक्षमता निर्माण केले. त्यासाठी त्याने हया खात्याचा प्रभावी वापर केला. सरंजामदार व उमराव यांना नियंत्रणाखाली आणले. त्यातूनच त्याने जमीन सुधारणा. आर्थिक सुधारणा मोठ्या प्रमाणात केल्या

संदर्भ

- १. सक्सेना आर. के. सल्तनतकालीन शासनप्रणाली.. २. इरफान (अस्तु. रमेश रावत) भारतीय हास से मध्यकाल.
- 3. प्रा. प्रशांत सु. देशमुख भारताचा इतिहास इ.स. ६५०-१५५० विद्याभारती प्रकाशन. लातूर, डिसेंबर २००३ ४. डॉ. रा.गो. कोलारकर मध्ययुगीन भारताच इतिहास
- ७. डॉ. धनंजय आचार्य मध्य भारत इ.स. १००० ते १७०७ साईनाथ प्रकाशन, नागपूर, २००८.
- ६. प्रा. भांडवलकर एस.एस. भारताचा इतिहास, अभिजित पब्लिकेशन, लातूर, जुलै २००२

प्रकरण 3. विजय नगर कालीन प्रशासन व्यवस्था

- 1. उद्दिष्टे
- 2. प्रस्तावना
- 3. विजायनगर काळातील प्रशासन व्यवस्था
- 4. केंद्रीय प्रशासन
- 5. प्रांतीय प्रशासन
- 6. स्थानिक प्रशासन
- 7. महसूल प्रशासन
- ८. सारांश
- 9. संदर्भ

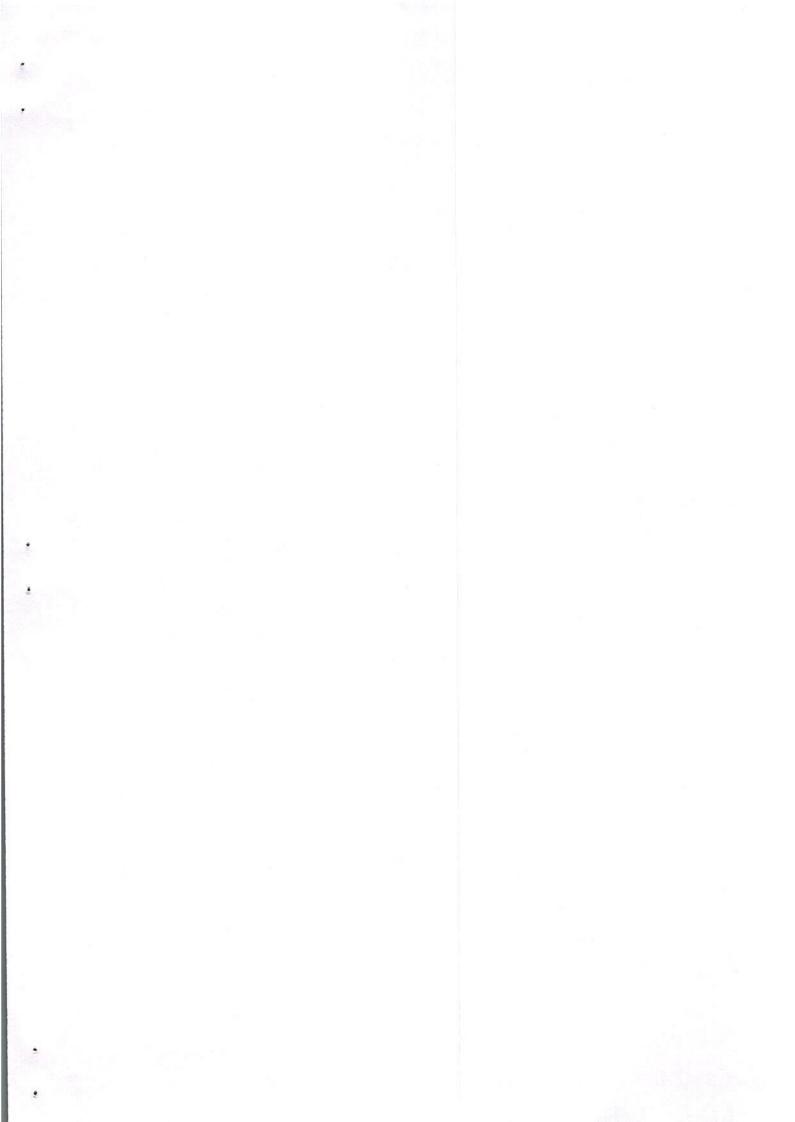
उद्दिष्टे

विजयनगर काळातील प्रशासन व्यवस्था समजून घेणे

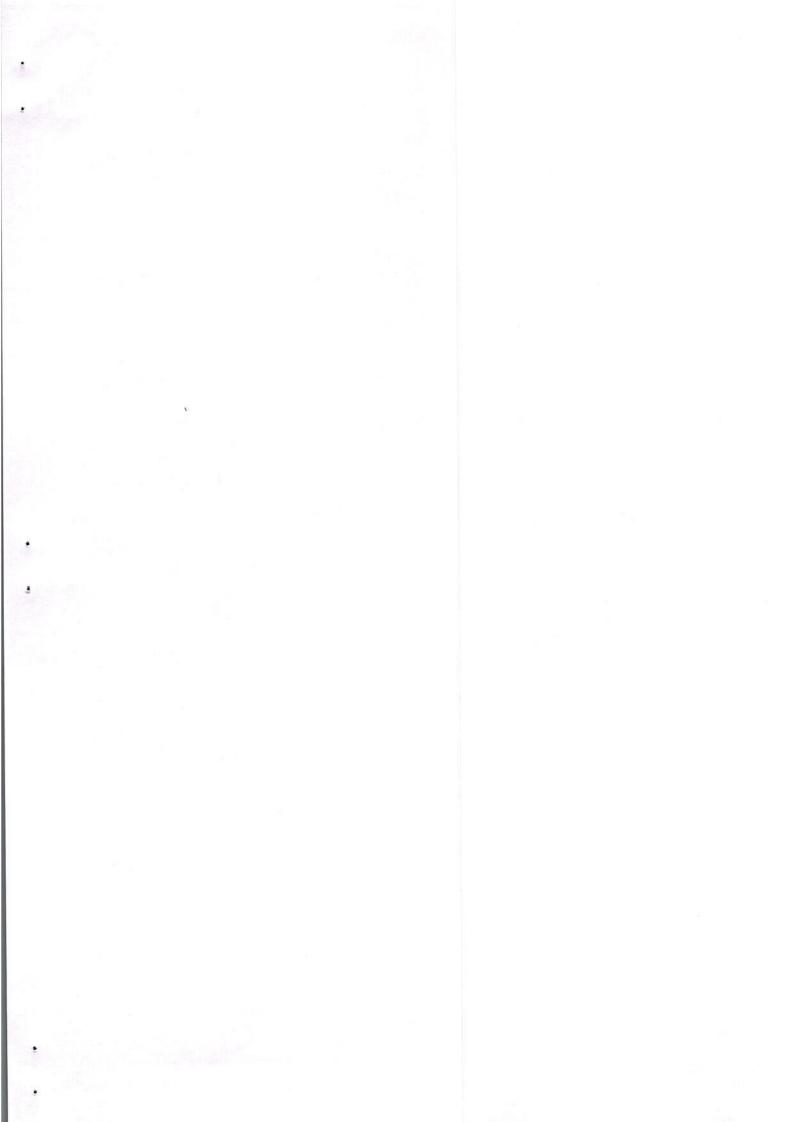
विजयनगर कळीतील केंद्रीय प्रांतीय व स्थानिक प्रशासन जाणून घेणे

विजयनगर काळातील सामाजिक स्थितिचा अभ्यास करणे

विजयनगर काळातील आर्थिक परिस्थिति समजून घेणे







२. प्रस्तावना

विजयनगरचे साम्राज्य हे मूलतःच मुस्लिम प्रभावापासून दक्षिणेतील संस्कृती, धर्म, राजकीय प्रणाली सुरक्षित ठेवण्याच्या उद्देशाने निर्माण झाले होते. हे साम्राज्य धर्माधिष्ठीत व प्रचंड लष्करी सामर्थ्यावर उभे राहिलेले होते. विजयनगरच्या सर्वच राजांनी साम्राज्याच्या मजबुतीसाठी व भरभराटीसाठी उत्कृष्ठ राज्यव्यवस्था निर्माण करण्याचा प्रयत्न केला. त्यांची शासनव्यवस्था सुसंघटित व सुव्यवस्थित असल्यामुळेच अल्पावधीतच राज्याची भरभराट झाली. त्यामुळे विजयनगरच्या प्रशासन व्यवस्थेची माहिती पाहणे आवश्यक आहे ती पुढीलप्रमाणे-

केंद्रीय प्रशासन

१ राजा

विजयनगर काळात राजा हाच शासन व्यवस्थेचा प्रमुख अधिकारी होता. त्यांचे अधिकार हे अनियंत्रित व निरंकुश असले तरीही ते जुलुमी हुकूमशहा नव्हते, लोककल्याण करणे हाच त्यांचा मुख्य उद्देश होता. राजा हा राज्याचा प्रधानमंत्री, कोषाध्यक्ष व रत्न भांडारचा रक्षक आणि सुरक्षा विभागाचा प्रधान होता तो आपल्या मंत्रिमंडळाच्या सल्ल्यानुसार कार्य करीत असे परंतु त्यांचा सल्ला मानणे हे त्याच्यावर बंधनकारक नव्हते. राजाचा दरबार हा फार मोठा भव्य व ऐश्वर्यसंपन्न होता. त्यांच्या दरबारात अनेक विद्वान होते. त्यामुळे राजाचा राजदरबार म्हणजे हिंदू संस्कृतीचे एक केंद्र असे मानले जाई.

२. मंत्री परिषद-

विजयनगर काळात केंद्रीय प्रशासनातील दुसरा महत्वपूर्ण घटक म्हणजे मंत्रिपरिषद होय. राजपद हे जरी केंद्रस्थानी असले तरीही राजाला आपल्या राज्यकारभारात मदत करण्यासाठी मंत्री परिषदेची तरतूद करण्यात आली होती. या परिषदेतील मंत्र्यांच्या नियुक्त्या व पदच्युती स्वतः राजा करीत असे. शूद्र सोडून इतर सर्व जातीतील लोकांची मंत्री पदावर नियुक्ती केली जाई. मंत्री परिषदेत मुख्यतः २० सदस्य

होते आणि त्यांच्या प्रमुखाला 'सभानायक' असे म्हटले जाई. हे मंत्री राज्याच्या विभिन्न विभागाचे प्रमुख असत. याशिवाय प्रांतीय सुभेदार, सेनापती आणि पंडित हे सुद्धा राजांना विविध विषयांवर सल्ला देत असत. मंत्रिपरिषदेला प्रामुख्याने सामाज्याची धोरणे आखणे, लष्करी मोहिमांची आखणी करणे अशा प्रकारची कार्ये करावी लागत.

• केंद्रीय प्रशासनातील प्रमुख अधिकारी वर्ग

- १. पंतप्रधान किंवा महाप्रधान किंवा शिरप्रधान (राजाचा सल्लागार)
- २. मुख्य खजिनदार
- सुवर्ण प्रमुख (सोन्याच्या खजिन्याचा रक्षक)
- ४. पोलिस प्रमुख (दरोडे, चोरी यांची नोंद ठेवणे, कायदा-सुव्यवस्था ठेवणे)

प्रांतीय प्रशासन

१. प्रांतांची विभागणी

विजयनगर काळात प्रांतांची प्रशासन व्यवस्था केंद्राप्रमाणेच होती. साम्राज्याचे विभाजन जवळजवळ २०० प्रांतांमध्ये केले होते. प्रांतांचे विभाजन पुन्हा 'नाड्र्' किंवा 'कोट्टम'मध्ये आणि पुन्हा 'नाड्र्' किंवा 'कोट्टम'चे विभाजन छोटी छोटी शहरे व खेडी यात केले होते.

२. प्रांतीय प्रमुख

विजयनगर काळात प्रत्येक प्रांतांच्या प्रमुखास 'व्हाॅईसराय' म्हटले जाई. त्याची नेमणूक राजघराण्यातील व्यक्ती किंवा एखादा प्रभावशाली सरदार यांच्यामधून केली जाई. व्हाॅईसरायला आपले स्वतः चे सैन्य बाळगावे लागे आणि जरी ते आपल्या प्रांतिक अधिकारक्षेत्रामध्ये समाटांप्रमाणेच एकाधिकारशाहीने वागत असले तरीही त्यांचे स्थान एखाद्या सरंजामदाराप्रमाणेच असे. आपल्या कामाचा पूर्ण हिशेब त्यांना समाटाकडे सादर करावा लागत असे. युद्धाच्यावेळी समाटाला आपल्या सैन्यानिशी मदत करावी लागत असे. त्यांना प्रामुख्याने प्रांतांची लष्करी व्यवस्था, न्यायालयीन व्यवस्था, नागरी महसूल विषयक कामे

पाहणे अशा प्रकारची कार्ये करावी लागत असत. जर प्रांतीय प्रमुखाने राजाचा विश्वासघात केला किंवा लोकांचा छळ केला तर त्याला कडक शिक्षा केली जाई

स्थानिक प्रशासन

विजयनगर काळात प्रांताचा सर्वात खालचा घटक म्हणजे गाव किंवा खेडे होते. गावाचे प्रशासन पंचायत करीत असे. ग्रामपंचायतीच्या प्रधानास आय ंगर' असे म्हणत व हे अधिकारी एकूण १२ जणांचे मंडळ होते. या अधिकाऱ्यांना वेतन हे भूमिच्या स्वरूपात किंवा शेतकऱ्यांच्या धान्यातला एक ठराविक हिस्सा मोबदला म्हणून दिला जाई. या अधिकाऱ्यांची नियुक्ती वंशपरंपरागत होत असे. त्यांच्यापैकी काहीजण न्यायनिवाडा करीत असत. त्याचप्रमाणे राज्याचा महसूल जमा करणे आणि खेड्यामध्ये कायदा व नियंत्रण ठेवण्यासाठी सम्राटामार्फत "महान्यायकाचार्य" या अधिकाऱ्याची नियुक्ती केली जात असे.सुव्यवस्था राखण्याचे काम या मंडळाला करावे लागे. खेड्याच्या कारभारावर पूर्णपणे

महसूल प्रशासन

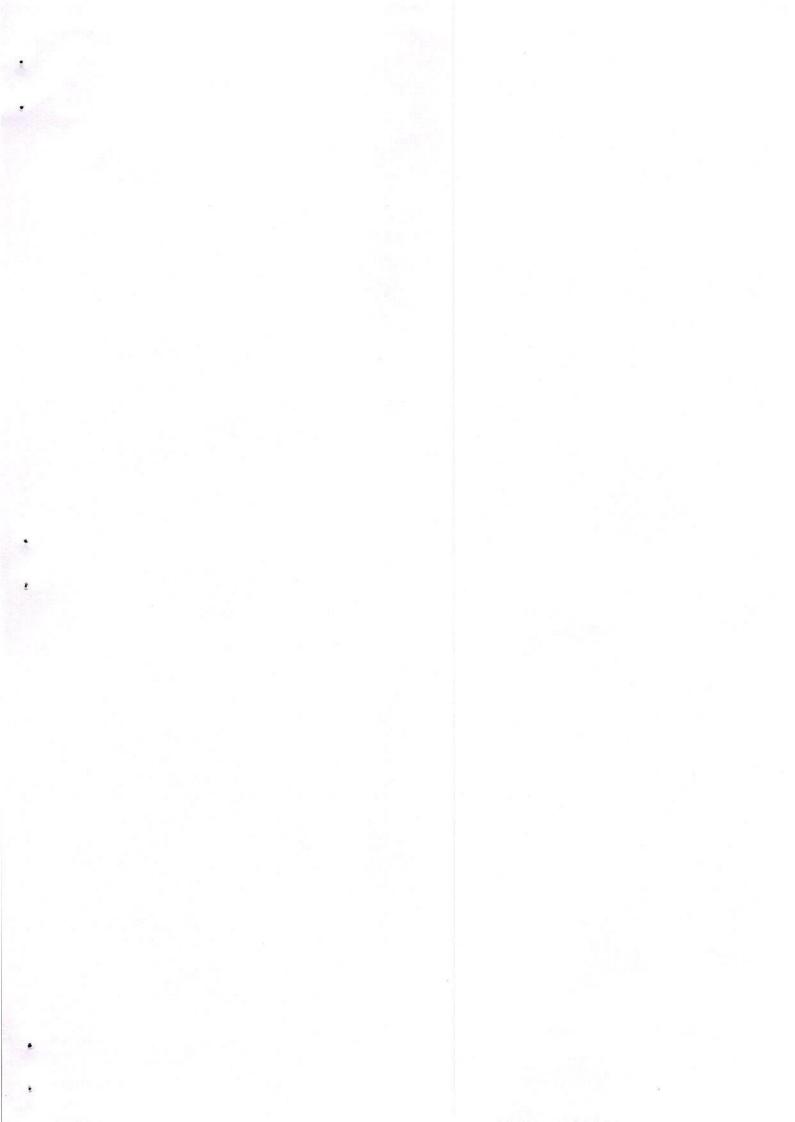
१. उत्पन्नाची साधने

विजयनगर काळात राज्याच्या उत्पन्नाचे प्रमुख स्त्रोत जमीन महसूल होते. तसेच खंडणी,भेटवस्तू आणि 'महानवमी उत्सवादरम्यान जकातकर, व्यवसायकर, गृह, बाजार व परवाने इ. कर वसूल केले जात. बंदरांच्या विकासाद्वारे फार मोठा महसूल जमा होई. अंतर्गत व्यापार व वाणिज्य सुद्धा उत्पन्नाचे एक प्रमुख साधन बनले होते. महसूलाचा भरणा हा रोखीने किंवा वस्तुविनिमय केला जाई.

महस्ल जमा करणारा विभाग-

महसूल प्रशासनावर नियंत्रण ठेवण्यासाठी 'आठवणे' नावाचा विशेष विभाग कार्यरत होता. इतिहारकार निज याच्या मते, शेतकऱ्याला आपल्या स्थानिक प्रमुखास ९/१० एवढे उत्पादन द्यावे लागे आणि त्यातील अर्धे उत्पादन तो राजाकडे जमा करीत असे. त्यामुळेच शेतकरी हा विजयनगरच्या सामाज्यात करांच्या ओझ्याने दबला गेला होता.

महस्ल नियंत्रित ठेवण्याचे प्रकार



राज्याचा महसूल दोन प्रकारच्या खजिन्याने नियंत्रित केला जाई. प्रथम दैनंदिन जमाखर्चआणि दुसरे मोठ्या प्रमाणावरील अमानत ठेवी होय. तसेच सोन्याच्या वस्तू एका तिजोरीत ठेवल्या जात. ज्या नेहमी कुलूपबंद असत. जेव्हा राजाला अत्यंत तातडीची गरज असेल तेव्हाच ते उघडले जात असे..

लष्करी प्रशासन

विजयनगरचे लष्करी व्यवस्थापन सरंजामदारी स्वरूपाचेच होते. त्याची माहिती पुढीलप्रमाणे-

१. सैन्यव्यवस्था

विजयनगर काळात सेनापती हाच लष्कराचा व सैन्य विभागाचा प्रमुख अधिकारी असे. सैन्य भरती करणे, त्यांना प्रशिक्षण देणे, त्यांच्या वेतनाची व्यवस्था लावणे, प्रांताच्या सेनाधिकाऱ्यांवर देखरेख करणे इत्यादी कामे त्याला करावी लागत असत. घोडदळ, पायदळ आणि हत्तीदलाचा समावेश विजयनगरच्या सैन्यात होता.

राजाचे स्वतःचे खंडे सैन्य होते आणि युद्धाच्यावेळी प्रांतिय गव्हर्नर राजाला सैन्याचा पुरवठा करीत असत. पेस याच्या मते, इ.स. १५३० च्या युद्धामध्ये कृष्णदेवरायच्या सैन्यात ७,०३६०० पायदळ, ३२,६०० घोडदळ आणि ५५१ हत्तीदळ यांचा समावेश होता. त्यांच्याबरोबरच छावणीदार, स्वयंपाकी, मदतनीस हे सुद्धा हजारोंच्या संख्येने होते. नुनीज याने सुद्धा तशीच आकडेवारी दिली आहे त्यामुळे त्यामध्ये काही प्रमाणात अतिशयोक्ती वाटते. असे असले तरी आपल्या शेजारच्या मुस्लिम सत्तांकडून सततचा धोका व युद्धजन्य परिस्थिती यामुळे विजयनगर सामाज्यकडे शक्तीशाली लष्कर होते असे म्हणावे लागेल.

२. पोलीस विभाग

विजयनगर काळात पोलीस विभागाला फार महत्त्व होते. त्यांच्यावर नगराच्या संरक्षणाची जबाबदारी असे. ते रात्रभर नगरात भ्रमंती करीत असत. दरोडेखोरांना शासन करण्याचे कार्य पोलीस विभागाचे असे. पकडून त्यांना कडक

गुप्तहेर व्यवस्था

योग्य माहिती विभागाकडून दिली जाई. विजयनगर काळात गुप्तहेर विभाग हे सुद्धा अतिशय कार्यक्षम होते. त्यांच्याकडून राजाला नेहमीच राज्यामधील व शेजारील प्रदेशांतील बातम्यांची खबर मिळत असे. त्यामुळे गुप्त कारस्थाने आपापसांतील भांडगे, गव्हर्नरांचे (प्रादेशिक) बंड इत्यादी विषयी

न्यायव्यवस्था

विजयनगर सामाज्यात राजा हा न्यायव्यवस्थेचा प्रमुख न्यायाधीश व अधिकारी होता. त्यांचा निर्णय हा अंतिम निकाल समजला जात असे राज्यात अनेक न्यायालये अस्तित्वात होती. न्यायालयातील न्यायाधीशांच्या नियुक्त्या स्वतः राजा करीत असे त्यांनी दिलेल्या निर्णयावर समाटाकडे अपील करता येत असे. स्थानिक पातळीवर 'नायक' आणि 'गौडा यांना न्यायदान करण्याचा अधिकार दिला गेला होता. विशेषतः हिंदु कायद्याप्रमाणेच व परंपरेप्रमाणे न्यायदान केले जात असे. त्या काळात दंडविधान अत्यंत कठोर होते. राजद्रोह, चोरी, श्रष्टाचार, व्याश्रिचार व फितुरी यासारख्या अपराधांबद्दल हातपाय तोडणे किंवा फाशीची शिक्षा दिली जात असे. हत्तीच्या पायी देणे व कडेलोट करणे यासुध्दा शिक्षा प्रचलीत होत्या. ब्राम्हणांना प्राणदंड दिला जात नसे. विजयनगर राज्यात आजच्यासारखी शास्त्रोक्त न्यायदान व्यवस्था नव्हती. परंतु तत्कालीन न्यायव्यवस्थेमुळे सज्जनांचे रक्षण व अपराध्यांना दंड या स्विकारलेल्या तत्वामुळे सर्वांना न्याय मिळत होता. त्यामुळेच प्रजा ही सुखी व समुध्द होती.

विजयनगर कालीन सामाजिक परिस्थिती

१ कुटुंब पद्धती

विजयनगर कुटुंब पध्दती ही संयुक्त कुटुंब पध्दती होती. पिता हाच कुटुंबाचा प्रमुख असे. कुटुंबातील सर्व सदस्यांच्या पालन पोषणाची जबाबदारी पित्यावरच असे. कुटुंबात मुलगा जन्माला आल्यावर आनंद साजरा केला जात असे. या उलट मुलगी जन्माला आल्यास दुःख व्यक्त केले जाई. स्त्रियाना कुटुंबात दुय्यम स्थान दिले जात असे.

२ आहार-

विजयनगर सामाज्याच्या काळात दक्षिण भारतातील लोक मांसाहारी आणि शाकाहारी होते. ब्राह्मणांबरोबरच उरलेली सर्व प्रजा मांसाहार करीत होती. गाय आणि बैल या दोन प्राण्यांचे मांस सोडल्यास बाकी सर्व पश्पक्षांचे मांस सेवन करण्यात येत असे. पालेभाज्या, तांदूळ, ज्वारी, आणि विभिन्न फळांचा उपयोग दैनंदिन आहारात केला जात असे. त्या काळातील लोक पान खाण्याचे शौकीन होते. राजदरबारात पानांचे विडे तयार करून देण्यासाठी विशेष गणिकांची नेमणूक करण्यात येई. तत्कालीन काळात जीवनसत्व युक्त आहार घेतला जात असल् लोकांची शरीरयष्टी सुदृढ होती.

विजयनगर काळातील आर्थिक परिस्थिती

१.शेती

विजयनगरचे सामाज्य आर्थिकदृष्ट्या भरभराटीस आलेले होते. शेती हा तत्कालीन लोकांचा प्रमुख व्यवसाय होता. शेतीमध्ये प्रामुख्याने तांदूळ, भाजीपाला, विविध प्रकारचे फळे यांचे उत्पादन घेतले जात होते. विजयनगरच्या समाटांनी शेतीचे उत्पादन वाढावे यासाठी अनेक योजना राबविल्या. अनेक ठिकाणी कालवे आणि पाटबंधारे तयार केल्यामुळे शेती उत्पादनात वाढ होऊन राज्यातील लोक सुखी आणि समृद्ध जीवन जगू लागले.

२. उद्योगधंदे

विजयनगर काळात विविध उद्योगधंद्यांमध्ये मोठ्या प्रमाणात भरभग्नट झाली होती. याचे वर्णन अब्दुल रझाक, निकोलो कौंटी आणि बार्बोसा यांच्या ग्रंथ साहित्यातून मिळते. त्यातील काही महत्त्वपूर्ण उद्योगधंद्यांची माहिती पुढीलप्रमाणे-

कापड उद्योग-

दक्षिण भारतात कापड उद्योग मोठ्या प्रमाणात विकसित झालेला होता. गोवा, चौल, मलबार, म्हैस्र, आंध्रप्रदेशातील मतिफली, कालीकत जवळील कानपमेई, पुलीकत, पैठण आणि विजयनगर ही दिक्षण भारतातील तत्कालीन कापड उद्योगाची महत्त्वाची केंद्रे होती. लोकरीच्या कापडाला परदेशात चांगलीच मागणी होती. त्या काळात अंबाडी, मखमल, व नारळाच्या केसापासून धागे तयार करण्यात येत आणि या धाग्यांपासून कापड तयार केले जाई. मखमलीच्या वस्त्रांप्रमाणेच रंगीन आणि रेशमी वस्त्रांचे सुध्दा उत्पादन करण्यात येत असे.

धातु उद्योग-

विजयनगरच्या काळात दक्षिण भारतात सोने, चांदी, लोखंड, तांबे आणि कथिल या धातूंपासून निरनिराळया वस्तू बनविल्या जात असत. त्यापासून बनविण्यात आलेल्या चैनीच्या वस्तूंना चांगलीच मागणी होती. दक्षिण भारतात बिदनूर आणि म्हैसूरमधील कोलार येथील सोन्याच्या खाणी जगप्रसिध्द होत्या. मीर राज्यातील चिक्कनामक नहल्ली व कोलार जिल्ह्यात लोहयुक्त खनिजे विपुल प्रमाणात आढळत असत. त्यापासून लोखंड व पोलाद निर्मिती होत असे. लोखंडापासून गृहोपयोगी वस्तू तसेच धनुष्यबाण, तलवारी, कुन्हाड, कट्यार आणि ढाली बनविल्या जात असत. तांबे, जस्त, शिसे आणि कथिल या धातूपासूनही अनेक वस्तू बनविल्या जात असत. बिदर हे ठिकाण अशा वस्तूंसाठी प्रसिध्द होते. त्यामुळे धातु उद्योगाची मोठ्या प्रमाणात प्रगती झालेली दिसून येते.

अ) आयात-

तत्कालीन काळात मसाल्याचे पदार्थ, लवंग, दालचिनी, इलायची, हिरे, हत्ती, घोडे, अफू, कोळसा, शिसे, पारा आणि इतर गृह उपयोगी वस्तूंची आयात केली जात असे. या सर्व वस्तू जावा, सुमात्रा, चीन, मलाया, एडन, मक्का, अरबस्थान, श्रीलंका आणि जेट्टा येथून आयात केल्या जात असत.

ब) निर्यात-

विजयनगर साम्राज्यात मोठ्या प्रमाणात निर्यातही केली जात होती. उदाहरणार्थ मखमल, सुती कापड, मसाल्याचे पदार्थ, साखर, तांदूळ, लोह, गंधक, नारळ, नील, चंदन व सागाचे लाकूड इत्यादी भारतीय वस्तूंना येमेन, मलाक्का, अरबस्थान, जावा, सुमात्रा, इराण व फिलिपाइन्स या ठिकाणी मोठी मागणी असल्याने तेथे वस्तूंची निर्यात करण्यात येत असे.

महसूल किंवा कर गोळा करण्याची पद्धत

१. रयतवारी पध्दत

विजयनगर सामाज्यात सरकारी अधिकारी शेतकऱ्याकडून प्रत्यक्ष जमीन महसूल गोळा करीत असत. शेतकऱ्यांच्या मालकीच्या जमिनी असल्याने महसूलाच्या बाबतीतील करार सरकार संबंधित शेतकऱ्याबरोबर करीत असे. ही रयतवारी पध्दत महाराष्ट्रात पहिल्या पासूनच प्रचलीत आहे.

२. गुतिगे पध्दतः

या पध्दतीत विशिष्ट विभागातील जमीन महसूल ठेके पध्दतीने वसूल करण्यात येत असे. एखादा गुत्तेदार लीलाव पध्दतीने त्या भागातील जमीन महसूल गोळा करण्याचे काम करीत असे.

३. नाडू (सभा)

खेड्यातील समुदायाकडून (नाडू) जमीन महसूल वसूल करण्यात येत असे. नाडू हेच आपापल्या खेड्यातील शेतकऱ्यांकडून जमीन महसूल वसूल करत असे..

म्हैस्र विभागात जमीन धारणेच्या चार पद्धती अस्तित्वात होत्या त्या पुढील प्रमाणे-

१. कंदाय

ठराविक रक्कम महसुलाच्या स्वरूपात सरकारला नियमितपणे देण्याच्या अटीवर रयतेला जिमनी देण्यात येत असत. ही रक्कम देणे बंद केल्यास सरकार रयतेकडून जमीन काढून घेई.

२. वारूम

या पद्धतीत रयत आपल्या मालकासाठी जिमनीची मशागत करीत असत. त्या मोबदल्यात उत्पन्नाचा काही भाग मोबदला म्हणून सरकारला देण्यात येत असे.

<u> ३. श्रेय</u> -

महाराष्ट्रातील "ईस्तावा" पद्धती सारखीच ही पद्धत आहे. पडीक जिमनीची मशागत करण्यासाठी रयतेला दिल्या जात असत.

<u>४. जुड़ी-</u>

जुडी जिमनी या मुळ इनामी जिमनी असत. त्यात रोख स्वरूपात रक्कम सरकारला खंड दिल्यास देण्यात येत असे. जुडी जिमनीची लागवड करणाऱ्या व्यक्तीस जुडीदार म्हणत.

जमीन महसूल आकारण्याची पद्धत.

जिमनीचे स्वरूप, पिकाचे स्वरूप व प्रकार जिमनीचे विशिष्ट स्थान, जिमनीची सुपीकता आणि पाणी पुरवठ्याच्या सोयी या सर्व घटकांचा विचार करण्यात येऊन महसूलाची आकारणी केली जात असे. महसूल आकारणीच्या पुढील चार पध्दती अस्तित्वात होत्या.

१. ठोक पद्धती

 या पद्धतीत शेतीत निघणाऱ्या उत्पन्नाचा काही भाग जमीन महसूल म्हणून आकारण्यात येत होता. या पद्धतीत शेतीत होणाऱ्या उत्पन्नाच्या चढ-उताराचा विचार करण्यात येत नसे. त्यामुळे कधी शेतकऱ्यांचा तर कधी सरकारचा आर्थिक तोटा होत असे.

1.पेरणी पद्धती

या पद्धतीत शेतकऱ्याकडून मिळणाऱ्या जमीन वसुलीची निश्चित शाश्वती सरकारला मिळण्यास मदत होत असे. जमिनीच्या एखाद्या तुकड्यात पेरणीसाठी लागणाऱ्या बियाण्याच्या परिमाणावरून जमीन महसूल निश्चित करण्यात येई.

नांगर पद्धती

या पद्धतीत विशिष्ट जिमनीचा तुकडा नांगरण्यासाठी लागत असलेल्या नांगराच्या संख्येवरून जमीन महसूल आकारण्यात येत होता..

विजयनगर काळातील सांस्कृतिक परिस्थिती,

मध्ययुगात अरब व तुर्की यांनी भारतावर आक्रमण करून हिंदू राज्यांचा पराभव केला आणि उत्तर भारतात इस्लाम धर्माचा पाया घातला. विजयनगर सामाज्याच्या काळात उत्तर भारतात संपूर्ण इस्लाम धर्मीयांचे वर्चस्व होते. त्याकाळात विजयनगर हे भारतातील शेवटचे हिंदू सामाज्य होते. इसवी सन १२९४ मध्ये अल्लाउद्दीन खिलजीने महाराष्ट्रातील देवगिरीवर स्वारी केली. महाराष्ट्रावर झालेली ही पहिली झलामी स्वारी होती. त्याच्या आक्रमणामुळे महाराष्ट्रातील हिंदू धर्मावर इस्लामी सतेचे अतिक्रमण झाले. हिंदू धर्म धोक्यात आला होता. नेमके याच वेळी विजयनगर हिंदू राज्याचा उदय झाला. या राज्याने हिंदू धर्म आणि संस्कृतीचे इस्लामी आक्रमणापासून संरक्षण केले. त्यामुळे विजयनगर सामाज्यातील सांस्कृतिक परिस्थिती पाहणे आवश्यक आहे ती प्ढीलप्रमाणे-

१. हिंद धर्म व संस्कृतीचे जतन

हिंदू लोकांचे स्वातंत्र्य आणि धर्माचे रक्षण करणे हे विजयनगरच्या राज्यांचे मुख्य ध्येय होते. आपण जर धर्माचे रक्षण केले तर तो सुद्धा आपले रक्षण करेल अशी श्रद्धा आणि विचार विजयनगरच्या समाटांची असल्यामुळे त्यांनी भारतीय हिंदू धर्म आणि संस्कृतीच्या रक्षण आणि विकासाकडे लक्ष केंद्रित केले. विजयनगरचा समाट कृष्णदेवराय (१५०९-१५२९) याने "अमुक्तमाल्यदा" ग्रंथात म्हटले आहे की राजाने धर्मानुसार राज्य केले पाहिजे.थोडक्यात हिंदू धर्म आणि जनता यांचा सामाजिक व आर्थिक विकास घडवून आणणे आणि इस्लामची राजकीय आक्रमण परतवून लावणे अशी ध्येये विजयनगरच्या समाटांनी आपल्या उराशी बाळगली होती.

२. धार्मिक स्वातंत्र्य :

विजयनगर सामाज्यात अनेक जाती-जमातीचे आणि धर्म पंथाचे लोक होते. विजयनगरचे समाट हिंदू धर्मसंस्कृतीचे असले तरी त्यांनी इतर धर्मीयांना वाईट वागणूक दिली नाही. त्यांचा कल वैष्णव पंथाकडे अधिक असला तरी राजकीय क्षेत्रात धार्मिकदृष्ट्या ते उदारमतवादी होते. ईडॉरडो बार्बोसा यांनी आपल्या प्रवास वर्णनात म्हटले आहे की, "विजयनगरच्या राज्यात असलेल्या ज्यू, खिश्चन, मुस्लिम आणि इतर कोणत्याही धर्माच्या लोकांना समान वागणूक दिली जात होती." एकूणच म्हणायचे झाल्यास विजयनगर सामाज्यातील लोकांना धार्मिक स्वातंत्र्य होते.

2.बौद्ध आणि जैन धर्म :

विजयनगर सामाज्य अनेक धर्म आणि पंथ यांचा विकास झाला. त्यामध्ये बौद्ध आणि जैन धर्माचाही समावेश होता. त्यांना ईश्वराचे अस्तित्व मान्य नाही शिवाय त्यांचे तत्त्वज्ञान हिंदू धर्माची मिळतेजुळते नाही तरीसुद्धा हे दोन धर्म विजयनगरच्या राज्यात परस्परांशी समरस झाल्याचे दिसून येतात. हरिहर दुसरा आणि देवराय दुसरा यांनी जैन मंदिर, विहारे निर्माण होण्यासाठी प्रोत्साहन दिले असले तरी त्यांचा म्हणावा तितका विकास झाला नाही.

कला व साहित्य :

१. कलेचा विकास -

विजयनगर च्या काळात कला, साहित्य स्थापत्य यांना दक्षिण भारतीय शैलीने प्रभावित केले होते. त्याकाळातील देवदेवतांच्या मूर्ती व स्थापत्य अत्यंत विकसित व उच्च श्रेणीचे होते. हया काळात

नवनवीन शैलीची मंदिरे बांधण्यात आली. त्यांची स्थापत्यशैली चोल, चालुक्य, पांड्य आणि होयसळ शैलीवर आधारित होती. विजयनगर शैलीचे प्रमुख वैशिष्ट्य म्हणजे नक्षीकाम केलेल्या खांबांचा वापर, विशाल सभामंडप व विपुल नक्षीकाम हे होय. मंदिराप्रमाणेच मूर्तिकला ही त्या काळात प्रगत झाली. गोपुरांवर दैवी व मानवी आकृत्या कोरलेल्या असत. विजयनगरच्या स्थापत्य कलेचे आणखी एक उत्तम उदाहरण म्हणजे सिंहासनाचा मंच जो कृष्णदेवरायाने बांधलेला होता (त्याच्या सर्वात खालचा थर 132 फूट लांब तर सर्वात वरचा थर 78 फूट लांब होता) तसेच एक हजार स्तंभ असलेला मंडप म्हणजे विजयनगरच्या स्थापत्यशास्त्राचा उत्तम नमुना होय. त्याचबरोबर चित्रकला, रंगकला, संगीतकला, नृत्यकला आणि साहित्य निर्मिती यांना मोठ्या प्रमाणात प्रोत्साहन मिळाले.

२. साहित्य क्षेत्रातील प्रगती

विजयनगर सामाज्यातील बहुतेक समाट विद्या व कलेचे भोक्ते होते. त्यांनी तेलगू, कन्नड, संस्कृत व तिमळ भाषांच्या पंडितांना राज्यश्रय दिला होता. कृष्णदेवराय हा स्वतः चा विद्वान व संगीतज्ञ होता. त्याच्या दरबारात अष्टदिग्गज (आठ विद्वान) होते. त्याने 'जांबवतीकल्याणम 'आणि 'उषा परीणयम, ' ही नाटके लिहिली त्याच्या दरबारात 'अमुक्तमाल्यदा'सारखे महाकाव्य लिहिले गेले.

• मराठी साहित्य:

विजयनगर साम्राज्य काळात महाराष्ट्रात मराठी भाषेचा विकास झाला. हया काळात मोठ्या प्रमाणात मराठी साहित्य निर्मितीचा विकास संतांनी घडवून आणला. या संतांनीच महाराष्ट्रात वारकरी संप्रदाय व भागवत धर्माची स्थापना करून सर्वसमाजघटकांना भक्ती मार्ग दाखवला. त्यातूनच मराठी भाषा व साहित्याचा विकास झाल्याचे दिसून येते. या काळात विवेकसिंधु, लीळा चरित्र तसेच जानेश्वरांनी इसवी सन १२९० मध्ये लिहिलेल्या "ज्ञानेश्वरी " या ग्रंथामुळे मराठी भाषेला चेतना प्राप्त झाली. संत नामदेव हे ज्ञानेश्वर यांचे समकालीन होते. इस्लाम धर्माचे वाढते प्रभुत्व व हिंदू धर्मावरील अतिक्रमण याविरुद्ध सर्वप्रथम संत एकनाथांनी सांस्कृतिक चळवळ सुरूकरून वैदिक धर्माचे पुनरुज्जीवन केले. या काळात मराठी भाषेशिवाय तेलग्, तिमळ, कन्नड या भाषांचाही विकास झाला. कृष्णदेवरायांचा कालखंड तेलग् साहित्यासाठी सर्वात गौरवशाली होत

सारांश

विजयनगरच्या राजेशकीच्या कल्पनेला बरेच धार्मिक कंगोरे होते. राजाने पवित्र भूमिका बजावावी आणि लोककल्याण करावे असे अपेक्षित होते. काही प्रथानुसार तो देवाचा अवतार म्हणून पाहिला गेला. विजयनगरच्या संरचनेत धर्म महत्वाची भूमिका बजावत होता. हिंदू परंपरेतील पवित्र कर्तव्य आणि कायद्याची कल्पना धर्मानुसार त्याला प्रजेमध्ये प्रक्षेपित करायची होती. हिंदु परंपरेचा आधार असलेली धर्म ही संकल्पना मनुष्याला परमात्म्याशी अगदी जवळून जोडते. विजयनगरचे सम्राट वैश्विक, दिव्य आणि कर्त्यव्य बजावणारे होते.

संदर्भ

- 1. चौबळे जे. असे होते मोगल, महाराष्ट्र राज्य साहित्य मंडळ,
- 2. डॉ. धनंजय आचार्य, मध्ययुगीन भारत कल्पना प्रकाशन.
- 3. गाठाळ एस. एस. भारताचा इतिहास कल्पना प्रकाशन.
- 4. विदयाधर महाजन, मध्यकालीन भारत स. चंद दिल्ली २००२.
- 5. गायकवाड आर. डी. भोसले आर. एच. प्राचीन व मध्यय्गीन भारताचा इतिहास.

सारांश

मध्ययुगीन भारताच्या इतिहासात अल्लाउदीन खिलजी व शेरशहा सूर यांचे प्रशासन अत्यंत वैशिष्ट्यपूर्ण असल्याचा उल्लेख अनेक इतिहासकाराने केलेला आहे. सेनापती व प्रशासक या नात्याने अल्लाउदीन खिलजीची कामगिरी अत्यंत महत्वाची आहे. खिलजीने प्रशासनात सुधारणा करून शिस्त निर्माण केली. प्रशासनातील भ्रष्टाचार नष्ट करून प्रशासनात कार्यक्षमता निर्माण केले. त्यासाठी त्याने हया खात्याचा प्रभावी वापर केला. सरंजामदार व उमराव यांना नियंत्रणाखाली आणले. त्यातूनच त्याने जमीन सुधारणा. आर्थिक सुधारणा मोठया प्रमाणात केल्या

विजयनगरच्या राजेशकीच्या कल्पनेला बरेच धार्मिक कंगोरे होते. राजाने पवित्र भूमिका बजावावी आणि लोककल्याण करावे असे अपेक्षित होते. काही प्रथानुसार तो देवाचा अवतार म्हणून पाहिला गेला. विजयनगरच्या संरचनेत धर्म महत्वाची भूमिका बजावत होता. हिंदू परंपरेतील पवित्र कर्तव्य आणि कायद्याची कल्पना धर्मानुसार त्याला प्रजेमध्ये प्रक्षेपित करायची होती. हिंदु परंपरेचा आधार असलेली धर्म ही संकल्पना मनुष्याला परमात्म्याशी अगदी जवळून जोडते. विजयनगरचे सम्राट वैश्विक, दिव्य आणि कर्त्यव्य बजावणारे होते.

मराठ्यांच्या प्रशासन व्यवस्थेचा अभ्यास करताना सर्व प्रथम प्रशासन व्यवस्थेचे केंद्रिय प्रातीय असे दोन महत्त्वपूर्ण भाग जाणून घेतले. या दोन भागातून आपण प्रशासनातील हुद्दे व अधिकारी या बाबतची माहिती पाहिली. मराठ्यांच्या प्रशासनातील राजपद हे सर्व श्रेष्ठ पद कसे आहे, या पदाचे महत्त्व काय आहे. या पदाच्या जबाबदाऱ्या काय आहेत, या राजपदावर कोणत्या व्यक्तीने अधिराज्य गाजवले. व या

पदाचे प्रशासनातील स्थान काय आहे, आदीबाबत माहिती पाहिली. मराठ्यांच्या प्रशासनातील श्रेष्ठ मंत्रिमंडळ म्हणुन अष्टप्रधान मंडळाकडे पाहिले जाते. अष्टप्रधान मंडळातील मुख्य प्रधान, अमात्य, सेनापती, सचिव, मंत्री, पंडितराव, स्मंत, न्यायाधीश, याचे

स्थान, महत्त्व व कामगिरी आदिबाबतची माहिती पाहिली. सचिव हा प्रशासनातील मंत्रीमंडळाच्या तोडीचा अधिकारी आहे व त्याचे प्रशासनातील स्थान व कामगिरी महत...

संदर्भ

- 1. वा. सी. बेंद्रे श्री छत्रपती शिवाजी महाराज (उत्तरार्ध)
- 2. गो. स. सरदेसाई पेशवे दप्तरातून निवडलेली कागदपत्रे.
- 3. डॉ. जयसिंगराव पवार मराठी सत्तेचा उदय -
- 4. डॉ. सोमनाथ रोडे मराठ्यांच्या इतिहास -
- 5. सक्सेना आर. के. सल्तनतकालीन शासनप्रणाली.. २. इरफान (अस्तु. रमेश रावत) भारतीय हास से मध्यकाल.
- 6. प्रा. प्रशांत सु. देशमुख भारताचा इतिहास इ.स. ६५०-१५५० विद्याभारती प्रकाशन. लातूर, डिसेंबर २००३ डॉ. रा.गो. कोलारकर मध्ययुगीन भारताच इतिहास
- 7. डॉ. धनंजय आचार्य मध्य भारत इ.स. १००० ते १७०७ साईनाथ प्रकाशन, नागपूर, २००८. ६. प्रा. भांडवलकर एस.एस. भारताचा इतिहास, अभिजित पब्लिकेशन, लातूर, जुलै २००२